अथ

पंमित लब्धिविजय विरचित श्री हरिबलमछीनो रास प्रारंभ।



॥ दोहा ॥

॥प्रथम धराधव जगधणी,प्रथम श्रमण पण एह॥ प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरू पन्नणेह ॥ १ ॥ विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धारक अतिशय आदि जिन,तारक नवनिधि पोत ॥ २ ॥ लघुवय इछा इक्षुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट इष्ट जेहने सदा, नाभिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्धव धूना संगमें, थठक रह्यो दिन रात॥ हुं तस पदपंकज नमुं, नित्य उठी परभात ॥ ४ ॥ हंसासन जे सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृदयमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं भारती, वारति जड अंधार ॥ मुझ मन मंदिरमें वसी, करवा मुझ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुझ महोटो करी, देजे वचन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसभा, सांभले थइ उज

माल ॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात ॥ वचननी रचना रस दियो, वाधे तुज आख्यात ॥ ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ देवधर्म गुरु ओलख्या, वलिहारी गुरु सो य ॥ ए ॥ ते गुरु चरण नमी करी, जवियणने हित कार ॥ रास रचुं हरिवल तणो, पुण्य उपर अधि कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंछित पामीयें, पुण्यें लहि नव नीध ॥ पुण्यें महिला संपजे, पुण्यें रूद्ध समृद्ध ॥ ११ जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव दयाथकी पामियो, हरिवल मच्छी राय ॥ तास संवंध सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स रस सुणतां थकां, जे को करशे वात ॥ तेहने तस द छन्न तणा, सम देउं छउं सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाद लिणो रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो जवि यण तुमें, आणी चित्त अजंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लक्ष योजननो रे जंबुद्दीप ए कह्यो, शाश्वत वर्त्तुलाकार ॥ सोजागी ॥ तेहमें क्षे त्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥

सो० ॥ १ ॥ जाव पनीने रे जवि तुमें सांजलो ॥ रसि या देई रे कान ॥ सो० ॥ गुणनां गुणनां रंग रस क पजे. गुणमें राख्यां जिम पान ॥सो० ॥२॥जा०॥ क्षेत्र तिनमें कम्मी यमे निहां, असि मसि कृषी रोजगार ॥ सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आत्मा ए तीन व्यापार ॥सो०॥३॥जा०॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां धर्मनां, जाग्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ निहां को व्यापार तीनमें नवि लदे, ते कल्पवृक्षना आहार ॥ सो०॥४॥जा०॥ तेहमें पटजुगलादिक क्षेत्र जे, जरत ने ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शो जित शोने ने एह ॥सो०॥५॥जा०॥ ए नव क्षेत्र सात वे कुलगिरि, तेहनो अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र समास में गुरुमुख सांजलो, धारयो तास विचार ॥ सो०॥६॥जा०॥पण इहां हरिवंश मधी रायनुं,चरित्र सु णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक कहाणो जगमां इम कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जा० ॥ हवे इहां जंबुद्वीपें अति नलुं, जरत क्षेत्र कहाय ॥ सो० ॥ पांचशें ठवीश योजन पटकला, धनुषाकारें सोहा य ॥ सो० ॥ ८ ॥ जा० ॥ सहस बत्रीश ते जन पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

वचमें पड्यो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ ना० ॥ षटखंममें खंम तिन तिन तेणें कस्या, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ ना० ॥ साढा पचवीश आरय अति नला, केकै अर्ध समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस बत्रीश मध्य एत ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ ना० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां, कनकपुरी अनिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर शोनती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ ना० ॥ नलिनीगुल्म विमान तणी परें, एकविश नूमि आ वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ ना० ॥ कुंतीआ वण परें हटश्रेणि राजती, गाजती विजयनी पंक्ति ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु धारा नक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ ना० ॥ धनवंत धनद नंमारी नारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो० ॥ पंच विषयना रसमेंलीणा रहे, नोगी चातुर लोक ॥ ॥ सो० ॥ १५ ॥ ना० ॥ षट दरशनना पोषक जन बहु, पाले निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर नत्र

कार करे घणा, लेहवा शिव सुख हर्म ॥ सो०॥१६॥ ॥ जा०॥ जिनशासनना देउल दीपतां, बत्रीश थडा प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंरूप अति चोंपशुं, कर ता स्वरगशुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ जा० ॥ दंरूधजा अतिपवनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ ध न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी,पावन करवा मुक अंग ॥ सो० ॥ १८ ॥जा० ॥ श्रीजिन केरी जगति करे सदा, जविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थंकर पद ते उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १९॥जा०॥ वरण अढार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोजा घणी, जू रमणी उरहार ॥ पागंतर॥नगर कनकपुरनामें शोज तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥२०॥जा० ॥ नंदनवन सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥ ॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल जर्यां,खटऋतु फलें सुवास ॥ सो० ॥ २१ ॥ जा० ॥ काल डुकाल ते को नवि उंलखे, अहोनिश सुखनी ठे वात्त ॥सो०॥ ईति उपद्रव सुपनें नवि जाणे, पुहवीयें प्रगटीए ख्यात ॥ सो० ॥ २२ ॥ जा० ॥ कनकपुरीना ए गुण सां जली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

जइ बूडी वापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥ ॥ २३ ॥ ना० ॥ स्वर्गपुरी पण जलमां जइ रही, नि सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक पुरी तणी, दिन दिन चढती छे लाज ॥ सो० ॥ २४ ॥ ॥ ना० ॥ कनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पलणी पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नविया सांभलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥ २५ ॥ ना० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन नूपाल ॥ न्यायि निपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य वछल हरिचंद जिस्यो, भुजबलि भीमसमान ॥ अरिय ण सघला वश करी, कनाव्यां तस मान ॥ २ ॥ पर जाने पाले सदा, करे हथेली छांह ॥ दाण जगात दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि देखल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इ णि परें, पाले राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद्म निनी, रूपें रंन समान ॥ शील सुरंगी शुभमती, व संतसेना अनिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें, प्रीतडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना, रंगें रहे लय लीन ॥ ६ ॥ दोगुंदुक सुरनी परें, पंचविषय

सुख जोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वाल्हा ॥ जगजीवन ॥ ए देशी ॥
विलसे जोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे ॥ जन्म सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आथ लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो, आगल वात रसाल ला० ॥ जीवदया पाली जिणें, ते लह्यो मंगल माल ला० ॥ ॥ २ ॥ सु० ॥ राज ऋद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय ला० ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुहवीयें ते गवराय ला० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें चिंतातुर होय ला० ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न लागे कोय ला० ॥ ४ ॥ सु० ॥ देव दाणव लख जो मले, तो पण तिणथी न थाय ला० ॥ कर्म आगल चाले नही, जो करे लक्ष उपाय ला० ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहा देव महोटो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला० ॥ पार्वती सरखी नारीने, करमें पुत्र न दीध ला० ॥ ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्मनां काम ला० ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंछित फले ताम ला० ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुन कर्मे करी, पुत्र तणे घरे पुत्र ला० ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

राखे घरनां सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ला०॥ ए ॥सु०॥ पुत्र विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला०॥ लौकिक मतना शास्त्रमें,नाषे रूषिजन वर्ग ला० ॥१०॥सु०॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तंपि मसाणे,जब न दीसंति धूलि धूसरछाया ॥ उठंतं पडंत रडंत, दो तिनि मिंना न दीसंति ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति,स्वर्गोनैवच नैवच॥तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्म समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन नूपाल ला०॥ तिण अवसर एक ज्योतिषी,आवी मल्यो ततकालला० ॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अनुसार ला० ॥ एहवो पंमित देखीने, नरपति हरख्यो अपार ला० ॥ १२ ॥ उठीने प्रणीपत करे, नाव धरी मनमांहि ला० ॥ मुद्रा सहित फल फूलशुं, पुस्तक पूजे उछाहि ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥ बे कर जोडी वीनवे, कीजें करुणा रूपाल ला० ॥ प्रश्न जुवो मुझ माहरे, होशे बाल गोपाल ला०॥ १४ ॥

सु० ॥ तव पंमित तक जोश्ने, वेला साधी सार ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लमनबलें कहे रायने, सांज लजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुज करमें नही, पूरव नावी जोग ला० ॥ पण एक पुत्री ठे सही, पूरव पुण्य संजोग ला० ॥ १६ ॥सु० ॥ रूपें रंनासारिखी,नंदिनी होहोशे तुज ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा, प्रगट होश्ते गुज्ञ ला०॥१७॥सु०॥एम कहीने विप्र ते गयो, लेइ वंठित दान ला०॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम रवि कज श्कतान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन ते योगथी, राणी गर्न धरेय ला० ॥ वसंत ऋतु फल फूलड्युं,शोनित सुपना लहेय ला०॥सु०॥१९॥जागी तव नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांजली नृप हरख्यो घणुं, तूग श्रीकिरतार ला० ॥ २० ॥ ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गर्नजतन ला०॥ अनुक्रमें मास पूरा थई,जन्मी पुत्री रतन्न ला० ॥ २१ सु०॥ हुवां हरख वधामणां,घर घर मंगलमाल ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पनणी बीजी ढाल ला०॥

॥ दोहा ॥

॥ जन्मोत्व अति हे करे, वसंतसेन नृपाल ॥ मणि माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

केशर गटणां,छीज करेह विशाल॥सोहव सवि टोलें मली,गावे गीत रसाल॥ २॥ घर घर गूडी उछले, घर घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे जाक जमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा नला,खेले नवनव खेल ॥ बंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥ इम उछव करतां थकां, वोल्या दिन ते बार॥नगरीजन सहु पोषीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब मेली करि, पुत्री नाम ठवीज ॥ सुपन तणा अनुसारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन दिन वधे,ज्युं वधे इक्षुदंम ॥ चंडकला जिम बीजथी,वाधे तेज अखंम॥ ७ ॥इम करतां वधती थइ, पंचवरसनी वाल ॥ शुनलग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥ खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥रंग राग नाटक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ए ॥ षट नाषा लहती सुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अनिनव जाणे शारदा, प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥इम करतां ते अनुक्रमें, वरस थयां जव शोल ॥नवयौवन नारी तणा,उलव्या काम कलोल॥११॥ मात पिता हरखे घणुं,पुत्री देखी ॥ रतना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन्न ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥सुमति सदा दिलमां धरो॥ए देशी॥ तिण नगरीमें एक रहे, धीवर हरिवल नाम॥सनेही॥जलचर जीव हणे सदा, मेले छुन्कृत गाम ॥सनेही॥ १ ॥ हवे सुणजो तेहनी कथा, मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर द्राख तणी परें, विण पइसे ल्यो स्वाद ॥ स० ॥२॥ह०॥ धीवर ते जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ ज्यम उदर ने कारणें, करे नित्य करणीकुकर्म ॥स०॥३ ॥ ह० ॥ धिग्धिग् डुरजर पेटने, पेट करावे वेठ ॥स०॥ उत्तम मध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥४॥ ह० ॥ पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स०॥५॥ह०॥अगम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥स० ॥पेटना अर्थी जे अछे, न गणे नक्ष अनक्ष ॥स०॥६ ॥ ह० घात कला खेले घणुं, नटुआ नटवो जोर ॥ स० ॥ मावीत्र वेचे गोरुने, पेटने अर्थे घोर ॥ स०॥७॥ह०॥ जिनवरआदि मुनिवरा, जावें जे लीये दिख ॥ स० ॥ ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे भीख ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ ह० ॥ पांमव पांचे रडवड्या, पेटने कारणें धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सरिखा राजवी, कुंभ घरे

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उदरने कार
णें, हरिवल मछी जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ल
ही,जीव हणे छे तेह ॥स०॥१०॥ह०॥ हलुआकरमी छे
वणुं, पण ते लह्युं कुल नीच ॥स०॥ कुलाक सब आ
वी पड्यो, मेले ते कर्मना कीच ॥स०॥११॥ ह० ॥
एक दिन हरिवल मछीयें, जलमें नाखी जाल ॥स०॥
ते जलकंठें मुनिवरु, बेठो छे सुकृतमाल ॥ स० ॥
॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि
बोल्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिबोधवा, दे उ
पदेश रसाल ॥ स० ॥ १३॥ह०॥ रे प्राणी ए तुं शुं क
रे, विण अपराधें कर्म ॥स०॥ छे महोटो संसारमां, जी
वदयानो धर्म ॥स०॥१४॥ह०॥ जीवदया पाली जिणें,
लहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी
वने, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५ ॥ ह० ॥
पारेवुं शरणें राखवा, काप्युं ते निज अंग ॥स०॥ जो
५१ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥१६॥
॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजुल
॥स०॥१७॥ह०॥ पशुवाडो छोडावियो,आणीमन
॥स०॥ जीवदया जे पाले नही,पामे ते दुःख
॥स०॥१८॥ह०॥सुभूम ब्रह्मदत्त चक्री दो,पडीया

रक मझार ॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ माता पितादिक
थवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिद्र दोहग
नवि टले, मले न वल्लजवृंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥
हेम दिये को दिन प्रतें, देवे को दान सुपात्र॥स०॥
तेहथी दश गणो लाभ छे, जीवजतन करे गात्र ॥
स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांभली, बोले
मच्छी तिवार ॥ स० ॥ शुं करीयें अमें साधुजी,छे अम
कुल आचार ॥स०॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुलें आ
वी पड्या, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजी
विका ए पेटनी,दीधी करमें निदान ॥स०॥२३॥ह०॥
॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में पण
लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में
जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अभि
ग्रह आदरी, हरिबल वलियो ताम ॥स०॥ मुनि पण
ईर्ष्या शोधता, पहोता बीजे गाम ॥ स० ॥२५॥ह०॥
हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स०॥
भारे करमी जीवडा,माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६॥
ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानुं जाय ॥ स०
॥ टपलो सराणे चडावीयें, आरीसो नवि थाय॥स०
॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिबलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवं छित लहे तेह ॥ स० ॥ २७ ॥ ह० ॥ लब्धिविजय रंगें करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिबल जीवदयायकी, लेहशे मंगलमाल ॥ स० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल अभिग्रह लेइने, पाछो वलियो जाम ॥ तिण अवसरें सुर प्रगटियो, सुस्थित जलनिधि स्वाम ॥ १ ॥ अवधी ज्ञानी देवता, रूप करे ततकाल ॥ धीवरनुं मन खोलवा, मछ हुवो मुछाल ॥ १ ॥ धीवर ते जलमें जइ, लांबी नाखी जाल ॥ आव नरा णो जालमां, लांबो मछ पुछाल ॥ ३ ॥ तव धीवर ते मछने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पाले ते उलसंत ॥ ४ ॥ वली बीजे थानक जइ, नंखा इहमां जाल ॥ नाखी तव फरि मछ ते, आव्यो जा ल मछराल ॥ ५ ॥ ते पण वलि मछ मूकीयो, नीय म निज संभार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते त्रीजी वार ॥ ६ ॥ वलि फरीने मछ आवियो, जाल मां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी म न उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे ए जलमछ ॥ तो सहिनाणी हुं करुं, जिम उलखाये

सह ॥ ७ ॥ हरिबल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रह्यो जलजात ॥ कोटें उजलवा सही, कोडी बांधी सात ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ए देशी॥ हरिबल हवे आवो गयो रे, ऊंडुं ठे जल ज्यांह ॥ कुरजर उदरने कारणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सुरिजन सांजलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सु० ॥ फरी पाठो ते जालमां रे, आव्यो चोथी वार ॥ कोटें कोडी देखी करी,मूक्यो मछ विचार ॥२ ॥ सुरि० ॥ पांचमी ठठी सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम तेम ते आवी रहे रे,जालमां मछ मुगाल ॥ ३ ॥ सु० ॥ तिम तिम ते मछ उलखी रे, मूकी दे ततकाल ॥ हरिबल व्रत मदेल्युं नही रे, गुरु उपदेश रसाल ॥ सु० ॥ ४॥इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां तेह ॥ तोही पण कोन्यो नही रे,मछी हरिबल जेह ॥ ॥ ५ ॥ सु० ॥ मछीनी परीक्षा लही रे, प्रगट थयो सुरराज ॥ सुर कहे हरिबल माग तुं रे, हुं तूठो तुऊ आज ॥ ६ ॥ सु० ॥ सुर वाणी ते सांजली रे, हरिबल वोल्यो तिवार ॥ दालिद्र दुःख दूरें करी रे, समस्या करजो सार ॥ ७ ॥ सु० ॥ सांजलि धीवर सुर

कहे रे, आणी मन उल्लास ॥ संभारिश मुझ जे घ
डी रे, ते घडी हुं तुझ पास ॥८॥ सू० ॥ एम वचन
देई करी रे, तें सुर गयो निज थान ॥ मच्छी पण निज
मंदिरें रे, वलियो थइ साव धान ॥९॥सू०॥ धीवर म
नमें हरखियो रे, धन धन गुरुनुं वचन्न ॥ फलि
यो अभिग्रह माहरे रे, तूठो सुर दिन धन्य ॥ १० ॥
सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटो सनाथ
॥ आजथी जीव हणुं नही रे,जो ग्रही महोटी बाथ
॥ ११ ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आ
णी बीक ॥ १२ ॥ सू० ॥ पेट भराइ जडी नही रे,
भांमशे रांम कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, वेस
शे लेई राड ॥ १३ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
रे, रोपें भरी छे चंम ॥ ठोकरडांने मारे घणुं रे, बोले
ज्युं खोखर भंम ॥१४॥ सू० ॥ मुखमांथी भोंगा पडे
रे, कोइ बोलावे बोल ॥ वलगे वाघणनी परें रे, राखे
न्हि तस तोल ॥ १५ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
रे, दीसंती जाणे अलछ ॥ आंगण आवे को मा
। रे, देखी जाये गछ ॥ १६॥ सू० ॥ कूडा बोली
. रे,रे वली अवतां आल ॥ गुण अवगुण जा

णो नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उ
तरे जे वर्ष सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण
लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥१८
॥ सू० ॥ जाणी वंबुल कोयला रे, एहवुं रुप नीहा
ल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल
॥ १९ ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुझ नारीनां रे, केतां क
रुं हुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मली ए कर्म
प्रमाण ॥ २० ॥ सू० ॥ हरिबल चितशुं चिंतवे रे, न
जड्यो जलचर जीव ॥ घरे जावुं तो वोकडी रे, रुठी
करशे रीव ॥ २१ ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रही रे,
रजनी लेउं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइशुं रे;
जडशे जीविक ताम ॥ २२ ॥ सू० ॥ इम जाणी ते
वनमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ काजीकाने देवलें
रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २३ ॥ सू० ॥ धीवर सू
तो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव
उगारीयो रे, तो वाधी मुझ शर्म ॥ २४ ॥ सू० ॥ तो
में निश्चें आजथी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जल
निधिनो धणी देवता रे, फलशे मुझ सदीव ॥ २५ ॥
सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पइठ ॥
जीवदया धर्म उपरें रे, वेगो रंग मजीठ ॥ ॥ २६ ॥

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिबल सूतो ज्यांह ॥ तिण अवसरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उह्लाह ॥ सू० ॥ २७ ॥ चोथी ढाल पूरी थई रे, प्रगटी पुण्यनी वेल ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें दुःखने ठेल ॥ २८ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे,बीजो हरिबल नाम ॥ वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अभिराम ॥ १ ॥ पठित गुणित सघली कला, शीख्यो ठे सावधान ॥ रूपें रतिपति सारिखो, उपे रूप निधान ॥ २ ॥ चतुराइ तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ भोगी केतकी भ्रंग ज्युं, वाको वंस निगंठ ॥ ३ ॥ इक दिन चहुटे संचस्यो, लेइ निज परिवार ॥ नजरें हरिबल निरखियो, कुमरीयें गोख मझार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृपनी धुआ, उलखी हरिबल तेह ॥ बिहुंनी दृष्टि मिली तिहां, बाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधियुं, देखी हरिबल रूप ॥ कामातुर अतिही थई, वरवानी थइ चूंप ॥ ६ ॥ राजभुवननें मारगें, हरिबल चाल्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक तिहां बिलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

मेहली तेह ॥ हरिबल वांची समकियो, वच तुं मुक ससनेह ॥ ८ ॥ ऊंची दृष्टि जोइने, करी समस्या सार ॥ वाचा देइ आवियो, हरिबल निज आगार ॥ए॥ कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ राम नुं सुहणुं नरत परि, फलशे ते श्रीकार ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निद्रडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल वे ज्यांह के ॥ अखुट खजानो लेइने, मध्यरात्रें हो हुं आवुं हुं त्यांह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि वलने हो तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, व रवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहारी हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतो साचें आवशे, निज घरनुं हो लेईने वित्त के ॥ कु० ॥ ॥३॥ पण ए नृपनी नंदिनी,मुजथी केम हो निरवाहो थाय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसिणी हो किहां बगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४॥ किहां अजली किहां नागणी,किहां हाथणी हो किहां अज बलवंत के ॥ किहां कुमरीने हुं कीहां, किहां सरशव हो किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब वणी

क तणी, मर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह छे व्यवहार के ॥कुं०॥ ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे तस वेर के ॥ सवल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए हुं करुं, कुल लाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुज घरमें छे पदमणी, किम देखुं हो तेहने हुं छेह के ॥ ८॥ कुं० ॥ कडुवां फल छे एहनां, परनारी हो साथें धरें राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि हां वेरागनो लाग के ॥ ए ॥ कुं० ॥ किंपाकनां फल सारिखां, देखंतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण तें फल चाख्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी हो सहु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें, डुर्गतिनां हो फल पामे रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव ण मुंज तणी परें,शीश रडवडे हो नूमितलें जेह के ॥ परनारीना संगथी, बीजानी हो गति निपजे एह के ॥ १२ ॥ कुं० ॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी हो निज कुल संनाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें, जिहां कीधो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥कुं० ॥ हवे

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावाने तेह के ॥ केइ घडी छे एहवी,जइ देखुं हो हरिबल ससनेहके ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहने लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो लाग्युं छे प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानल हो चूसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लाग्युं जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी बलाय के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी, नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ कुरि कुरि पंजर कृश करे, कामी मन हो लुब्ध्युं जे ठाम के ॥ १७ ॥ कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे, विरहें करि हो मांहि उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कुमरी कामातुर थई, हरिबलनो हो विरहो न खमाय के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, वरवाने हो घणुं आकुली थाय के ॥ १९ ॥ कु० ॥ मणि माणिक हीरा घणा, हेम रजत नें हो मुगताफल लेय के ॥ घरमां पामरी सावटु, जरतारी हो नवां वस्त्र नरेय के ॥ २० ॥ कुं० ॥ सामग्री सघली करी, जावाने हो जिहां कीधो संकेत के ॥ उंट सात जरिया नवा, अश्व रतन हो

कुमरी हो लेत के ॥ २१॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे वही, दास दासी हो वलि साथें लीध के॥ दरवाजे दरवानने, द्रव्य आपी हो घणुं राजी कीध के॥ २२॥ कुं० ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां संकेत कीध के॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहोती हो मनवंछित सिद्ध के॥ २३ ॥ कु० ॥ धीवर सूतो छे जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के॥ ल ब्धि विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग रसाल के ॥ कु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निद्रा दूर ॥ आपण वहीयें वे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट खजानो लेइने,आवी छुं भरपूर ॥ करहा सात द्रव्यें भ र्या, एह छे तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने, आवी छुं तुम कज्ज ॥ वंध तजी उतावला, आवी च ढो थइ सज्ज ॥३॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विन वे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ भिराम ॥४॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी रूप ॥ धीवर मन विस्मय थयुं, ए शुं दीसे सरूप ॥ ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥

ोइक वात विचार छे, मौन कस्यानुं काम ॥ ६ ॥
प्रणवोल्यो ऊठयो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम
ी मन हरखित थई, चाल्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा
ंीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाल्या
वडवडी, पहोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कु
मरी हवे, टाली सघली बीक ॥ हरिबलने बोलाववा,
आवी पास नजीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल
प्रभुजी बोलो, मनवञ्छन मनडुं खोलो रे ॥ माहरा
जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई डर मत आणो, प्रभु
मेल्यो तुम श्रम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुज सरखी
तुम नारी, विण पैसे मलि सुख कारी रे ॥ मा० ॥
कनक रयण छे साथें, तुमें वावरो सुखें निज हाथें
रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा वाघा, जरतारी वां
धो पाघा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी
पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क
र जोडी, करुं टेहल ते आलस छोडी रे ॥ मा० ॥ हुं तुं
तुम प्रेम विलुधी, आवी हुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥
॥ ४ ॥ हवे तुम वयण न लोपुं, जीवित लगें वरमा

ला रोपुं रे ॥ मा० ॥ करह्ना जे साते ऊप्या, लेई तुम शुं जे सोंप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं, करि लेखवजो ए न्नलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेह्ने रनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥६॥ इणि परें कुमरी बोले, पण हरिबल वाचा न खोले रे ॥ मा० ॥ तव तिह्नां कुमरी विमासे, शुं ठे ए वणिक न नासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वा ह्नाणुं ॥ दीठुं मुख श्याम ज्युं नाणुं रे ॥मा० ॥ दिन ऊगमतें ते दीठो, दीन वस्त्र विहूणो धीठो रें ॥ मा०॥ ॥ ८ ॥ जाणे आलोकनो पिंम, जाणे पाड्यो देवें दंम रे ॥ मा०॥ देह्नी ठे गलीयल वान, वलि जाणे कोकिल मान रे ॥ मा० ॥ ए ॥ जाती धीवर जाणी, तव कुमरी मन ऊलजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी थई तें निराशी, चिंते थइ ह्नाणी ने ह्नासी रे ॥ मा० ॥१०॥ सह्नकारज केरे न्नरूसे, फल चाख्यां आक आलूसे रे ॥ मा० ॥ जाण्युं सुरतरु पामी, पण निमड्यो कनक निकामी रे ॥ ११ ॥ मा०॥ प्रन्नुयें मेरुयें चढावी, पण दैवें नूयें अथडावी रे ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी, पण पानीयें मति चूकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ करस ण टोतां सोई, गोला गोफण पण खोई रे ॥ मा० ॥

म ए कल्याणी मेल्यो, निज मंदिर कुल अनहेल्यो
॥ मा० ॥ १३ ॥ जाएयुं जोवनवेशें, लेशुं ते ला
। विशेषें रे ॥ मा० ॥ कल्यो मदन एराकी, तव
णिकें मूकी न बाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ विटल
णिकें विमासी, दीधी ज्युं कूपके फांसी रे ॥ मा०॥
णिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो ढंग रे
मा० ॥ १५ ॥ जाएयुं जे वणिकने वरशुं, निज ज
म ते सफलो करशुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचा न
ाली, विण गुनहे मूकी वाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥
जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥
। मा० ॥ जो तुज खोटा विलासा, तो शाने दीजें
आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं देल्यो, धी
वरने किहां ते मेल्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ए
गोढो, कस्यो अण मलतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥१८॥
दीसे ए धोवड धिंग, वलि जाणे ज्वके ज्ञोटिंग रे
॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुज करमें ए वर
घडियो रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ शी विधें मुज मन वेसे,
माहारुं जोवन एलें वहेशे रे ॥मा०॥ इम सुंदरी विल
पंती, लही मूर्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥
तव तिहां धीवर फूरे ॥ मनशुं ते पुण्य अधूरे रे ॥

॥ मा० ॥ में ते ए शुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं रे ॥ मा० ॥ २१ ॥ लवलेश पोंक न खाधो, निजकर्मे हाथे दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक उखाणो, ते में तो नजरें पिछाण्यो रे ॥ मा० ॥२२॥ फोगट सुंदरी साथ, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख के हने दाखुं, एहवो नही कोइ जाखुं रे ॥ मा० ॥२३ ॥ सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते जोगवे जीव एक ताने रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पासे उल्लासें रे ॥ मा० ॥ २४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, किम रांक घरे रहे त्रोटी रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान, किम सुंदरी दे मुज मान रे ॥ मा० ॥ २५ ॥ धिग मुज जीवित एह,धीवर पणुं लह्यु में जेह रे ॥मा०॥मा हरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नाख्यो उवेखी रे ॥ मा०॥ ॥२६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुज देखी मूर्छा पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहे नय णें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ किहां गयो सागर देव, मुज काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे मूरछाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥ ॥ २८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने रूपे उपा

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल बठी, कुमरीने करे
हवे वेठी रे ॥ मा० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अमृ
त जल लेई करी, कुमरी गांटी हेव ॥ १ ॥ रंना फल
पत्रें करी, कस्यो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी
थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निर
खियुं, हरिबल केरुं रूप ॥ वाला चमकी चित्तमें, ए
शुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो
सोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव स
मान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नही, मन इम चिंते
वाल ॥ ए साचुं के सुहणुं, के दीसे इंद्र जाल ॥ ५ ॥
तिण समे सुरवाणी थई, सांजल कुमरी सुजाण ॥
हरिबल मह्यी रूप ए, वछ तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥
एह थकी सुख संपदा, दिन दिन अधिकी होय ॥
जाग्यवशें तुफ वर मल्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥
तव कुमरी हरखित थई, सांजली देव वचन्न ॥ आर
त चिंता सवि टली, उलस्युं ते निज मन्न ॥ ८ ॥
वसंतसिरी हरिबल प्रतें, वर वरियो धरी प्रीत ॥ शी
तल मन वेहुनां थयां, बांध्यो अविहड हीत ॥ ९ ॥

पय प्रणमी हरिवल तणा, देई वर ससनेह ॥ सागर सुर निज थानकें, पहोतो ते गुणगेह ॥ १०॥ मान व नव सफलो करी, दंपती जोगवे जोग ॥ रामनुं सु हणुं नरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो नलें आवियो ॥ ए देशी ॥ हुआ हे ह रख वधामणां, वेहु जणनां हे मनवंछित सीध के ॥ कुमरी हरिवल वर वरी, मनुनवनो हे फल लाहो लीध के ॥१॥ हु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां हरिवल हे मछी अवतार के ॥ अणमलतो ए ताक डो, पुण्यजोगें हे मेल्यो किरतार के ॥ २ ॥ हु० ॥ एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे त्रूठो निधि राज के ॥ परतख दीठुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुज वाधी लाज के ॥ ३ ॥ हु० ॥ धन धन गुरुनां वयण ने, मुज कीधो हे म्होटो उपगार के ॥ कीडीयकी कुंजर कस्यो, नलें प्रगट्यो हे सद्गुरु संसार के ॥ ४॥ हु० ॥ इम चिंतवतां वे जणां, पंथें चाल्यां हे ते वन हनकार के ॥ रंग विनोदनी वातडी, वहे करतां हे एक चित्त उदार के ॥ ५ ॥ हु० ॥ वाट विषम जे आकरी, गिरि गव्हर हे वली विषमा घाट के ॥

अंगि फाडी जे रुंखनी, परि उतस्या हे निज पुएयने पाट के ॥ ६ ॥ छु० ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न वि जाणुं हे पियुनी कुल नाति के ॥ तो हवे जोवुं एहनी, करुं परीक्षा हे ए शी ठे जाति के॥७॥ छु०॥ जोवुं वली तस पारखुं,पराक्रमें हे केहवो ठे सधीर के॥ जीवित सूधी माहरो, मन राखी हे केहवो मेले हीर के ॥ ७ ॥ छु० ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणो प्री तम हे थया खरा बपोर के ॥ पाणीनी तिरषा घ णी, पीयु लागी हे घणुं अति हें जोर के ॥ए॥छु०॥ तव हरिबल तिहां सज थयो, अबलानां हे सुणी दीन वचन्न के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा हे निकल्यो ते वन्न के ॥ १० ॥ छु० ॥ अटवीमां जो तो फरे, नवि दीसें हे क्यांह नदी नवाण के ॥ तव एक तरु ऊपर चढी, दृष्टें जोवे हे चिहुं दिशि जल ठा ण के॥ ११ ॥ छु० ॥ तव तिहां दूरथी पेखियो, सरो वर हे जल नरिउं नीर के ॥ तिहां जइ जल नरि पो यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥ छु० ॥ अंग उखां जल पीवतां, मनथी जह्यो हे पियु माहावलवंत के ॥ हरखित थइ तव सुंदरी, मुक व खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ छु० ॥ धन्य

दिवस धन ते घडी, धन वेला हे मुझ प्रगट्यां जाग्य के ॥ मनवंछित पियुडो मल्यो, थयां परगट हे मुझ सुख सौजाग्य के ॥ १४ ॥ हु० ॥ सुरवाणी साची मली, जेवी जाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा ग्या पासा ढल्या, राजकुमरी हे मन हरख पइठ के ॥ १५ ॥ हु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी, एकतारी हे ब नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं, तिम बे हुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ हु० ॥ इम क रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतर्यां तेह के ॥ दूरथी दीठुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोजित डिं ग जेह के ॥ १७ ॥ हु०॥ कनकजडित डिंग दुर्ग छे, कोशीसां हे मणिमय दीपंत के॥ जाणीयें जूरमणी करें, सोहे कंकण हे रवितेज छिपंत के॥ १८॥ हु०॥ नं दन वन सम वाटिका, फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत के ॥ सजल सरोवर जल जर्यां, देखीने हे वर नारी मोहंत के ॥ १९ ॥ हु० ॥ नगर समीपें आवीयां, वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक आवियो, वैताल कहे जलि आशिप दीध के ॥ २० ॥ हु० ॥ पूछे हरिबल तेहने, कहो वारोट हे आ नग रीनुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी

हे ते कुण अनिराम के ॥ २१ ॥ हु० ॥ तव हरि बलने ते कहे, वेतालक हे सुणो पंथी साथ के ॥ मदनवेग ठे नृपति, वीशाला हे नगरीनो नाथ के॥२२॥ हु० ॥ अरियण सयला वश करी, राज्य नोगवे हे सुरपतिनी समान के ॥ पायक गज तुरी ठे घणा, सत लक्ष्नी हे ठकुराइएं मान के ॥२३ ॥ हु० ॥ वरण अढार वसे इहां, पुण्य करणी हे करतां सहु लोक के ॥ पापनी बुद्धि मले नहीं,नोगीजन हे वसे चातुर कोक के ॥२४॥हु०॥बार जोयण पोली कही,नव जोयण हे दीर्घ शोनित पोल के ॥ कनक रयणमय मालियां, चोराशी हे चहुटानी ढोल के ॥२५ हु० ॥ जाणीयें स्वर्गपुरी नली,वीशाला हे नगरीनुं नाम के॥ सुखीयां लोक वसे सहु, फुःखीयानुं हे नवि दीसे ठाम के ॥ २६ ॥ हु० ॥ एहवो व्यतिकर मांमीने,वेतालकें हे कह्यो थइ वजमाल के ॥ सांनलि वेहु राजी थयां, लब्धि कहे हे ए तो सातमी ढाल के ॥२७॥हु०॥

॥ दोहा ॥

॥ नगरी नृपनी वारता,वेतालें कहि जाम ॥ वात वधामणि हरिबलें, दीधी मुझ ताम ॥ १ ॥ चित ठरिउं वेतालनुं,देखी पीली वस्त ॥ हरिबलने चरणे न

रिबल सुख भोगवे, एतो वसंतसिरीनी साथ रे ॥ सु० ॥ मानवभव सफलो करे, एतो जाणे पामी आथ रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ गु० ॥ एतो शत्रुकार मांड्यो घणो, एतो देवे दान उछाह रे ॥ सु० ॥ बंदीजन बिरुदावली, ए तो हरिबलनी बोले अथाह रे ॥ सु० ॥१२॥ गु० ॥ ताल कंसाल मृदंगना, एतो वाजे नाद अचंभ रे ॥सु०॥ हरिबल आगल शोभता, एतो होवे नाटारंभ रे ॥सु०॥ १३ ॥ गु० ॥ चाली पुरमें वातडी, एतो हरिबलनी आख्यात रे ॥ सु० ॥ मदनवेग नृप आगलें, एतो हरिबलनी थइ वात रे ॥ सु० ॥ १४॥ गु० ॥ एतो क्षत्रीवंशें राजवी, एतो वीरबल केरो धीर रे ॥ सु० ॥ भुजबली भीम समो वडो, एतो दानें विक्रम वीर रे॥सु०॥१५॥गु०॥ आव्यो आपणा नयरमां,एतो परदेशी प्राहुणो जोर रे ॥ सु० ॥ वसंतश्री तस भारजा, एतो रूपें रंभ चकोर रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ गु० ॥ एहवी थइ दरबारमां, एतो हरिबल केरी वात रे ॥ सु० ॥ क्षत्री वंश शिरोमणी, एतो वीरबल केरो जात रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ गु० ॥ मदनवेग नृप सांभली, एतो मनमें हुउ हेराण रे ॥ सु० ॥ तो बोलावुं एहने, एतो जोवुं ते अहिनाण रे ॥ सु० ॥१८॥

शु० ॥ इम जाणीने नृप तदा, एतो सचिवनें दीध आदेश रे ॥ सु० ॥ आमह करि तस तेडीने, तुमें आवजो अत्र विशेष रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ शु० ॥ तत खिण सचिव तिहां जई, हरिबलने कीध प्रणाम रे ॥सु०॥ नृपनुं तेडुं तुम अछे, तुमें आवो आतमराम रे ॥ सु० ॥ २० ॥ शु० ॥ उठी हरिबल ततखिणे, च ढयो अश्व रत्न गुण गेह रे ॥ सु० ॥ नेट नली नृप आगलें, जइ मूकी नृप प्रणमेह रे ॥ सु० ॥ २१ ॥शु०॥ नृप पण हरिबलने तदा, एतो उठीने दीधी बांह रे सु०॥ बेंग एकण गादीयें, एतो हरिबल नृप उछा ह रे ॥सु०॥२२॥ शु०॥ आगम नीगमनी करी, एतो बे घडी वातनी गोठि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी थया, जिम कर चढे साकर पोठि रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ शु० ॥ सागर देव प्रसादथी, एतो हरिबल केरुं तेज रे ॥ सु० ॥ राज्यसन्नादिक नृप तणुं, एतो देखी वा ध्युं हेज रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ शु० ॥ बंदीजन बि रुदावली, एतो बोले क्षत्री वंश रे ॥ सु० ॥ माता वीरायें जनमीयो, एतो वीरबल कुल अवतंस रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ शु० ॥ हरिबल गुण नृप सांजली, एतो मंत्रीसर पद दीध रे ॥ सु० ॥ आनूपण अंगें

रवी, एतो नृपें निजबंधव कीध रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ शु० ॥ अश्व अमूलक पालखी, एतो हरिबल च ढवा काज रे ॥ सु० ॥ एतो आपे नृप हर्षं करी, एतो प्रबल वधारी लाज रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ शु० ॥ एतो भलें आव्या तुमें नयरमें, तुम आवे वध्युं हम तेज रे ॥सु०॥ नगरी अम पावन थई, एतो दिन दिन चढते ते ज रे ॥सु० ॥ २८ ॥ शु० ॥ इम सनमानी बोलावियो, एतो वसंतसिरीने गेह रे ॥ सु० ॥ लब्धि कहे ढाल आठमी, एतो पुण्यें लभे एह रे ॥सु० ॥ २९॥ शु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल ते निज मंदिरें, आव्यो करी आणंग ॥ वसंत सिरि हरखित थई, देखी पियुनो रंग ॥ १ ॥ म दन वेग नृपनी सदा, सारे निशदिन सेव ॥ बांध तो ड दरबारनी, हरिबल करे ततखेव ॥ २ ॥ हाल हुकु म हरिबल तणो, थयो विशालामध्य ॥ जीरण सचिव कोरें रह्या, अलगा थई अकज्ज ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनुं एक मन, दीसंता तन दोय ॥ लागी पूरण प्रीतडी, ज्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥ वसंतसिरि अपछर स मी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंदक सुरनी परें, हरिब ल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें, दंपति

करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजें भोजन सार ॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांभलो प्राणा धार ॥ इण वातें कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचा र ॥ ७ ॥ पण एक वात विचार छे, धारो चित्त म झार ॥ दीपक लेइ देखाडवो, तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाडीयो, काग अही सोनार ॥ एता नोहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ए ॥ ते माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरी ने नोतरी, द्यो भोजन अभिराम ॥ १० ॥ सांभल गोरी माहरी, साच कही तें वात ॥ जो छे दाहाडा पाधरा, शुं करशे नृप घात ॥ ११ ॥ पुण्यें वैरी आं धला, पुण्यें पाप विलाय ॥ पुण्य प्रबल जो कीजियें, तो सघलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे सांभल प्रि या, जो प्रभु दीधी आथ ॥ जिमणे हाथें दीजियें, तो ते आवे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ गणधर दश पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा; एम कही आव्यो जब रातें ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल मनहरख धरीने, आतमरंगें भेली रे ॥ गोधूम तंडुल मिशिरी खंमा, घृत सामग्री मेली रे ॥ १ ॥ खटरस भोजन

सार निपाई, सागर देव प्रजावें रे ॥ नोतरुं देवा नृप दरबारें, हरिबल पोतें जावे रे ॥ ख० ॥ २ ॥ आग्र ह करि निज आसन आपे, हरिबलने नृप हेतें रे ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें गो जीवन जेते रे ॥ ॥ ख० ॥ ३ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, नांखे सांजलो स्वामी रे ॥ हुं सेवक बुं तुम पद केरो, तुमें मुज अंतरजामी रे ॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी महोटा थाउं अमें महोटा, तुमें गो वंबित पोटा रे ॥ तुमें गो गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं घेटा रे ॥ ख० ॥ ॥५॥ तुम शिर महोटो बे परमेसर, जगशिर प्रजु तुमें सहुना रे ॥ तुमें गो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें किं बहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचने नृपनें, रीजवी हरिबल बोले रे ॥ अरज सुणो एक प्रजुजी अमारी, नोतरुं वचन ते खोले रे ॥ ख० ॥ ७ ॥ नग र सहित तुमें राज पधारो, अम घरे नोजन करवा रे ॥ हुं आव्यो बुं तेडवा सारु, तुमने जमण आचर वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मां ङी, निजस्त्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ए ॥ कुमरी नवनवा शणगार पेहरी, नृपने नोजन प्रीसे रे ॥ ह

विविध पाक नृप जमवा कामे, पीसे पवन जमीनें रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविध आननी सुखडी निरखी, जलने भीठ मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक मझो टा, देव आरोगे गुडवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक ने आंबा पोली, श्रीखंड खीर सुंहाली रे ॥ का ल दाल में घृत परनालि, निरमे ज्युं गंगा नाली रे ॥ ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तीखां व्यंजन, बत्रीश जातिनां थामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जम तां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जमतां जमतां अन्योअन्यें, रसवती जीनें वखाणे रे ॥ के धुं देव आकर्षी रसोइ, हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ ॥ १४ ॥ रसीयावाले मल्यो जन ऊपर, फूले मन आ ल्हादें रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीधां भोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगें, दें मुखवासनी चूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जमाडी, नागोलें चोखा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल लहि हरिबल पोतें, सुकृत कारज कीधुं रे ॥ख०॥ ॥ १७ ॥ मदने वेगें रसवती जमतां, वसंतसिरी ते दीठी रे ॥ मृगनयणीनुं रूप सुकोमल, देखत लागी

भीनी रे ॥ ख० ॥ १८ ॥ नृपनुं मन विह्वल थयुं ज मतां, कामें कीधो जोरो रे ॥ नृप चिंते मुफ स्त्री छे ज लेरी, पण नहि एह्वो तोरो रे ॥ ख० ॥ १९ ॥ ख टरस नोजननी सुघडाई, नृपना मनमें वेठी रे ॥ कामज्वरथी नोजन नूल्यो, स्त्रीनी चिंता पेठी रे ॥ ॥ ख० ॥ २० ॥ खाधुं न खाधुं करीनें नृपते, मन विमनो थइ ऊठयो रे ॥ असेनियो थइ नृप घरे वली यो, जाणे जगदीश रूठयो रे ॥ ख० ॥ २१ ॥ चमकी चितमें चतुरा ततखिण, दीठुं नृप मन बिगडयुं रे ॥ तव प्रीतमनें कहे निज प्यारी, चेतो नृप हेत उघ डयुं रे ॥ ख० ॥ २२ ॥ तव हरिबल कहे सांजल प्यारी, नावी हशे ते थाशे रे ॥ खणाशे ते पडशे खाईमां, आपणुं कांइ न जाशे रे ॥ ख० ॥ २३ ॥ त्रिहुं जगमें हरिबलनी कीर्त्ति, बोले गुणिजन जीहा रे ॥ सुखें समाधें दंपति दोये, सुखमें काढे दीहा रे ॥ ख० ॥ २४ ॥ जोजो नविया धीवर जाति, एक जीव उगार्‍यो रे ॥ सुरसानिध मनवंछित फलि ॥ जगमें जस विस्तार्‍यो रे ॥ ख० ॥ २५ ॥ शुद्ध परं मी, ॥ सोहमस्वामी, हीरविजय सुरिराया रे ॥ साह नवनवार जे प्रतिबोधी, जैनमार्ग दीपाया रे ॥ ख० ॥

॥ २६ ॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल गु णें करि गाजे रे ॥ कोविदशिर मुकुटामणि सोहे, तस शिष्य धनहर्ष राजे रे ॥ ख० ॥ २७ ॥ तस शिष्य कुशलविजय कविराया, दिनमणि तेज सवाया रे ॥ तस बंधव गणि कमल विजय शुन, तस श्रुतज्ञान सुहाया रे ॥ ख० ॥ २८ ॥ तस शिष्य पंमित लक्ष्मी विजय गुरु, सोहे साधु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया दो विधिशुं आराधी, आतम साधन कीना रे ॥ ख० ॥ ॥ २९ ॥ तस शिष्य दो हुवा साधु शिरोमणि, कुमती मद जीपंता रे ॥ पंमित केशर अमर दो ज्ञाता, रवि शशिपरें दीपंता रे ॥ ख० ॥ ३० ॥ ते गुरुचरण प सायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥ पहेलो उल्लास कह्यो नव ढालें, हरिबल केरो संबंध रे ॥ ख०॥३१॥ ॥ इति श्रीहरिबलचरित्रे हरिबल राजर्षि पुरवर्णन नृपवर्णनादि प्रथमउल्लासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीउल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम ज्योति परकाश कर, त्रिभुवन तिलक स मान ॥ गरिब निवाज गोडी धणी, नयनंजन जग

वान ॥ १ ॥ अविनाशी अव्यय अरुप, अशरीरी अ
अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, ते प्रणमुं शुन सं
त ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतलें, शारद मात वि
शाल ॥ वचनामृत वरसे सदा, प्रगट थई उजमाल
॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोबडा, अकलविहूणा जेह ॥ त
स घट नीतरमें वसी, सुरगुरु सम करे तेह ॥ ४ ॥
परउपगारी मातजी, बाला त्रिपुरा सोय ॥ ते हुं प्रण
मुं नारती, जिम मुज वंछित होय ॥ ५ ॥ कोविद के
शर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल म
छीरायनो, नणुं बिजो उल्लास ॥ ६ ॥ रंग रंगीली
जनसना, सांनल वेधक जाण ॥ मधुकरनी परें रस
लीए, गुणवंत नाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस र
सिया लहे, चातुर वेधक जेह ॥ पण मूरख पशु वा
पडा, शुं जाणे रस तेह ॥ ८ ॥ सरस निरस मधुक
र लहे, जे सेवे वनराय ॥ घूण शुं जाणे जीवडो, सू
कां लक्कड खाय ॥ ए ॥ खटपद सरिखा चतुर नर,
वेधक वचन रसाल ॥ राचे सरस कथा सुणी, विक
था तजी विचाल ॥ १० ॥ वक्ताने श्रोता सुणी, सा
हामो साहामी दृष्ट ॥ एक सरीखी जो हुवे, सु
णतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेमाटे नावुक तुमें, सां

करजो चित लाय ॥ पण ते सुणतां मत करो, भक्ति थी किसर न्याय ॥ १४ ॥ नृपने तेडी हरिबलें, कीधी भक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो भवियण तुमें, शी शी निपजे वात ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आव्ने जालनी देशी ॥ तेडी नृपने आगार, जोयण देइ सार ॥ आवे लाल॥ हरिबलें कीध पहेरामणी ॥ मणि माणक लख लेय, अंग आजूषण देय ॥आ०॥ वोलाव्यो नृप गृह जणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम, मंदिर वलियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें व सी ॥ अंगनारूप निहालि, मनमां थइ चकचाल ॥ आ० ॥ नृप मननी मगली खसी ॥ २ ॥ जीव रह्यो ललचाय, ज्युं मधु खग लपटाय ॥ आ० ॥ काम व शें करी जूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्याकुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥ परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥आ० ॥ विकलमूर्त्ति परें जयो ॥ खिण वाहिर खिण मांहि, जक न पडे खिण क्यांहि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण वहि गयो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतेउरी हेज ॥आ०॥ राज काज पण नवि गमे ॥ न गमे पान

तंबोल, न गमे वात टकोल ॥ आ० ॥ अन्न उदक म
न नवि रमे ॥ ५ ॥ छत्री परजापाल, मदनवेग म
छराल ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह बा
ण लागां अशेष, पड्यो गिडंदा पेच ॥ आ० ॥ का
मिनीयें कर्यो जाजरो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरछा अचे
त, जाणीयें लाग्यो केत ॥ आ० ॥ सघला सचिवने
तेडीया ॥ पहेरी नव नवा वेश, धव धव धाइ अ
शेष ॥ आ० ॥ आया मंत्री न जेडिया ॥ ७ ॥ जा
णया जोषी विशेष, पट्टा जे खाता हमेश ॥ आ० ॥
तेड्या ते वैद राजने ॥ दशो दिशें दोड्या सर्व, जाण
प्रवीण ते सर्व ॥ आ० ॥ आव्या तेडी लवाजने ॥
॥ ८ ॥ नरडा नूवा जेह, कारण काढे तेह ॥ आ०॥
आया ते शीश धुणावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, गा
रुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप वखा
णता ॥ ए ॥ वीराउला जे कहाय, हनुमंत हाक व
जाय ॥ आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ नगत
वेरागी धाय, लांबां टीलां बनाय ॥ आ० ॥ आया
ते दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि पेरें मलिया लोक, उद
हो कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा करवा नृप त
णतां ॥ निज निज ते कला सर्व, करवा मांकी अगर्व

॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे एक नाडी देख, नृपने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दाह ज्वर मूर्छा लही ॥ हांकी बोले वैद्य, छे मुझ गोली सद्य ॥ आ० ॥ छत्रीश रोग हणे सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सर्व, मनशुं राखता गर्व ॥ आ० ॥ पाली मद पोषी रह्या ॥ बहु ते कीध उपाय, पण नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोथी वह्या ॥ १३ ॥ बोल्या जोषी जाण, नांखे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥ ग्रह पीडा छे रायने ॥ ते माटे करो होम, जाय ज्युं रोगनो जोम ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुम्हे लायने ॥ १४॥ जाप जपो सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी रक्षा करे ॥ बोल्या नगतजन एम, मानो ते विष्णु जेम ॥ आ० ॥ हम णां नृप मुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें भार, छे अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजियें ॥ कहे एक गांठनो रोग, पीहो छली योग ॥ आ० ॥ चूरण बूकी दीजियें ॥ १६ ॥ भूवा बोले जगीश, नृपने झोटिंग खवीस ॥ आ० ॥ वेलावली विलगण थइ ॥ धूणे धूणावी शीश, पाडे बहुली चीस ॥ आ० ॥ वाण उतारे चिंता जइ ॥ १७ ॥ मांभयां मांभलां के

य, वाज्यां फांकजां जेय ॥ आ० ॥ पण लेखे को ना
वियां ॥ जेणें कह्युं जे जेम,तेणें कह्युं ते तेम ॥ आ०॥
पण नृप चित्त न नाविया ॥ १८ ॥ एम अनेक उपा
य, नजनजा जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणुं पट
की वह्या ॥ विराजजा हता जेह, परवंधी पण तेह
॥ आ० ॥ सिद्ध साधक सघला गह्या ॥ १९ ॥ ज
गत संन्यासी कूण, गलिया ज्युं पाणी लूण ॥आ० ॥
फोगट गाल फुलावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, वादी
गर गया ताण ॥ आ० ॥ जाणपणुं जे ढुंलावता ॥
॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे शास्त्रविवेक ॥
॥ आ०॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढ्या छे रा
य, तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोइ
तिहां गुणकरु ॥२१॥ लाधो नाडी नेद,मंत्री लह्यो ते
उमेद ॥ आ० ॥ कामज्वरें ते नृप नड्यो ॥ मूरछा
लह्यो तिण योग, पूरव कर्मना नोग ॥ आ० ॥ काम
अनल कुंमें पड्यो ॥ २२ ॥ जेह छे नृपने रोग, तेह
जुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनो कुण लहे ॥
कामनुं जेहर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥आ०॥
कहो ते रोगने कुण ग्रहे ॥२३॥ जिहांथी प्रगट्युं दुः
ख, तिहांथी होवे सुख ॥ आ० ॥ अगनि वल्यो अग

श्री हरे ॥ विरहानलनी थाक, जेहने रहि तन व्याप ॥ श्रा० ॥ ते शीतल रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहि, सभा समक्ष उम्माहे ॥ श्रा० ॥ मेहर मंत्री इम जपे ॥ नृपने रोग न कांय ॥ फोगट कीधा उपाय ॥ श्रा० ॥ जाण प्रवीणने अवगुणे ॥ २५ ॥ श्रावनुं उषध कान, कीधुं तेम निदान ॥ श्रा० ॥ सिद्ध साधक मूरख मल्या ॥ अंतरगतनी पीड, कामज्वरनी रीड ॥ श्रा० ॥ ते कुणे नवि अटकल्या ॥ २६ ॥ जे लहे शास्त्र विचार, होवे जे गुरु मुख सार ॥ श्रा० ॥ ते जाणे सघली कला ॥ शुं करे चिकित्सा कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्म ॥ श्रा० ॥ ते करे हांशने धाकला ॥ २७ ॥ सभा विसर्जी ताम, सहु पोहोता निज धाम ॥ श्रा० ॥ मंत्री हवे वेदूं करे ॥ बीजा उल्लासनी ढाल, पहेली कही उजमाल ॥ श्रा० ॥ लब्धिविजय इम उच्चरे ॥ २८ ॥ श्रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृपनी पीडा टालवा, वेगे आइ नजीक ॥ १ ॥ कामातुर नृपने लही, सचिव करे उपचार ॥ राणी सघली तेडीयो, शोल सजी शणगार ॥ २ ॥ रंभ ऊर्म क

रती आवीउं, रूपें अपरछर सार ॥ मदन तणी जे वाटिका, कामीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना प ग तलां, उल्लासें उल्लास ॥ पवन करे रंजादलें, आं जे नेत्र बरास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमणी, नृपनुं लीडी अंग ॥ शयन कस्युं घडि दो लगें, उतस्यो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोकशास्त्र तणे बलें, कीधो ए उप चार ॥ आंख उघाडी ततखिणें, महिपतियें तिण वार ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चेतन सार ॥ मेहर मंत्री जस लह्यो; वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥ मदनवेग हरख्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो मंत्रीसरु, देई बहुलुं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें कस्या, राख्यो एह प्रधान ॥ मुजने मोहोटो गुण कस्यो, दीधुं जीवितदान ॥ ए ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, म हारा डुखनो जाण ॥ में राख्यो तुजने सही,तन मन करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे मंत्री नृप सुणो, हुं बुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करशुं अमें, तन मन क रि एकरास ॥ ११ ॥ पण मुजने साची कहो, ए का रण थयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जे म ॥ १२ ॥ वगर कहे किम जाणियें, पारका मननी वात ॥ तव नृप मंत्रीने कहे,मांमी सघली घात॥१३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥ नृप कहे सानल मंत्री,कहुं तुज नीपनी ॥ हरिबल केरे मंदिर,जमतां जे ऊपनी ॥ हरिबल केरी नारि, वसंतसिरी सदा ॥ पीसवा आवी नोजन,में दीठी तदा ॥ १॥ रूप अनोपम जाणीयें, अनिनव अपछरी॥ के रंना के उर्वशी, के विद्याधरी ॥ नागकुमारी ए जाणुं के, लखमी किन्नरी॥ एहवी रूप निधान में, दीठी ए सुंदरी ॥ २ ॥ ए रूप आगल बीजी, स्त्रीयो बापडी ॥ मान गुमान ते मूकी,दशो दिशि आपडी ॥ रंना उर्वशी अपसर, जइ नन्नमें रही ॥ पद्मद्रहमें लखमी, रही अंबुज ग्रही ॥ ३ ॥ नागकुमारी किन्नरी, नूतलें जइ वसी ॥ वैताढयें विद्याधरी, रही जइने खसी ॥ जे रमणीनी उपमा,ते देतां सही ॥ वसंतसिरी को आगल, मांमि शकी नही ॥ ४ ॥ ते अंगनानुं रूप, देखि हुं वश थयो ॥ खटरस नोजन जमतां, ते नूली गयो ॥ मन ललचाणुं मुज,नमर जिम केतकी ॥ जिम मधु खग लपटाय, थयुं तिम एयकी ॥ ५ ॥ कोइक चोवडी यानी जे, आवी हिये चडी ॥ खिण खिण सांन रे वीसरे, नही ते अथ घडी ॥ चित्रलिखित जो माव

त, गजथकी उतरे ॥ तो मुफ हृदयथी वसंत, सिरी ते वीसरे ॥ ६ ॥ ते विण जें घडि जाय ते, मास स मान ज्युं ॥ मास ते जाणीयें होवे, वरस प्रमाण ज्युं ॥ मोहविलुब्धो जीव, फूरे दिन रातडी ॥ साले साल समान, खुई निज जातडी॥ ७ ॥ मत कोइने प्रभु ला गो, एकांगी प्रीतडी ॥ बाले सुरंगी देह, पतंग ज्युं रीतडी ॥ अगनी झंपापात, करेवी सोहिली ॥ पण वि रहानल वाफ, सहेवी दोहिली ॥ ८ ॥ संग्राम करतां लागे ते, नलकां सोहिलां ॥ पण ते कामिनी नलकां, ख मवां दोहिलां ॥ जिम रोगी ज्वरयोगथी, सेजें तडफ डे ॥ तिम विरही नर काम, ज्वरथी लडथडे ॥ ए ॥ चिंता चिता दोमें, अधिकी कुण वहे ॥ चिता दहे नि र्जीव, सजीव चिंता दहे ॥ जिहां सूधी ते नयणें न, निरखे अति नजे ॥ घरनां कारज तिहां सुधी, कांहि न कलजे ॥ १० ॥ लोनीनी परें जीव, रहे निज ते क ने ॥ खाधा पिधानी सूध, नही ते जीवने ॥ शून्य फरे तस देह के, मन विण मानवी ॥ लय लागी थ णुं जोर जे, ललना अभिनवी ॥ ११ ॥ विरह विष च विकार के, दृष्टि लागे लिका ॥ वीरयीनो दिल दाह, जाणे केवली लिका॥ मदिरा पीधे जीव, घुमाई ज्युं रहे ॥

विरहनो लीणो जीव, मुंकाइ स्युं वहे ॥ १ २ ॥ जोजो नविया प्रीतडी, लागे जेहने ॥ होये एह हवाल के, मानव तेहनें ॥ विरहनी वारता वीती,हशे ते जाणशे ॥ पण निसनेही मूरख, शुं ते पिछाणशे ॥१ ३॥ मननी लालच रात,दिवस रहे तेहशुं ॥न गणे सुख दुःख जीव, बंधाणो जेहशुं ॥ प्रीतिनो लीणो जीव, पडे ते कूप मां ॥ तन धन सोंपे नेही ने, सरवे ते चूंपमां ॥१ ४॥ रमणी तणां जे नेत्र ते, कज्जल पंकथी ॥ प्रगटे कंदर्प मत्त, वराह निःशंकथी ॥ कामी जन मनवनें, वराह ते संचरी ॥ मानलता खिण एकमें,जाये ते चरी ॥१ ५॥ कामी जनने काम, सुअर केडें पडे ॥ विरही जनने अह निशि, विण खूनें नडे ॥ काम वराह ते कामिनी, संग थी उसरे ॥ वीरहीजननां मन ते, तव शीतल करे ॥ १ ६ ॥ सवल पुरुष गढ कोट ते, जीते पराक्रमें ॥ कामिनी जीते त्रीजग, एक कटाक्षमें ॥ कामणगारी नारी ते, सहुने वश करे ॥ रागना लीणा सुरनर,स्त्री केडें फरे ॥ १ ७ ॥ सवला ते नवला थई, स्त्री वश रहे वहु ॥ तो माहरो कोण आशरो,मंत्री तुज कहुं ॥ रे मंत्री तुज आगल, मांभी में कही ॥ वसंतसिरीनुं कारण,ए नीपनुं सही ॥१ ८॥ जोजन करवा गया तव, ए

फल लाविया ॥ कारण करीने कारण,लोकने लाविया॥ करण विंधावतां नाक, विंधावी आवियो ॥ ए ऊखा णो लोकमें, साचो कराविये ॥ १ए ॥ ते माटे हवे कोश्क, उद्यम कीजियें ॥ वसंतसिरीमुख देखि, सु धारस पीजियें ॥ जो कोइ विद्या होय तो, पलकमें जइ मलुं ॥ राचुं माचुं मन,तिहांथी न नीकलुं ॥२०॥ बुद्धि अकल परपंच, करी कोय केलवे ॥ ठे कोय प्रजु नो वाहालो, मुजने मेलवे ॥ तन मन करुं खुरबान, के जो मुजने मले ॥ आपुं कोडि पसाय,करी जले जले ॥२१॥ ए अधिकार ते सवलो,मंत्रीयें सांजल्यो ॥ कामा तुर थयो राय, ते मंत्रीयें अटकल्यो ॥ घणुं बलीयो पण सिंह, अजाडीमें पड्यो ॥ तिम रमणी मोह जालमां, नृप पूरो जड्यो ॥ २२ ॥ तो हवे कोइक बोल, सु बोल कही जला ॥ नृपना मनमें खीनी, फि कर काढुं वला ॥ सवलुं कमल हशे तो, कहुं नृप मा नशे ॥ तो शीखामण सघली, लेखें आणशे ॥ २३ ॥ सांजलजो जवि आगल, मीठी वारता ॥ सांजलतां खुशियाल, श्रोता दिल धारतां ॥ बीजा उल्लासनी ढाल, ए बीजी पूरी करी ॥ नेहीने मन गमती ए, लब्धियें उच्चरी ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मंत्री नृपने कहे, सांजलो प्रनु महारा ज ॥ अंतरगतनी जे कही, ते में निसुणी आज ॥ ॥१॥ पण ए वात हलकी नहीं, बे नारे महिनाथ ॥ गणवा दशन यमदंमना, नचथुं चरवी बाथ ॥ २ ॥ तिम ए स्त्रीशुं नेहलो, करवो अति डुर्जन ॥ तेमो सं गति एहनी, ज्युं लहो सुख सुजंन ॥ ३ ॥ जे कीधे तुमने प्रनु,खामी लागे अपार ॥ वाड जो गलशे ची नडां, क्यां होय तास पुकार ॥ ४ ॥ परडुःखनंजन राजवी, परजन पाले लाड ॥ वाहार जोइयें जिहां थकी,तिहां किम कते धाड ॥५॥ अणघटती ए वातडी, किम कीजें प्रनु नाथ ॥ देखी पेंखी वाघना, मुखमें घालवो हाथ ॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो की जें प्रतिबंध ॥ गनी वातो नवि रहे, हिंग तणी जे म गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी प्रिया, उपजावे रंग रेल ॥ जगमें बे परणी नली,पर परणी विषवेल ॥८॥ काणी कोची फरवली, काली कुबडी जाण ॥ परणी जेह पनोतडी, पदमिणी तेह पिठाण ॥ ए ॥ आप णी गावडी चंड्मा, जे दोही पीवाय॥ शुं कीजें पर नी नली, जे दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्त्री संग

ति जे करे, तेहनां पूरण पाप ॥ कंप करी बेसे नही, न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥ घृतकुंभ सरिखा नर कह्या, अगनि सरीखी नार ॥ मधु खरडी असिधार ज्युं, तिम स्त्रीसंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना लालची, जे थया विषयाअंध ॥ नरकनिगोदें रडवड्या, सुणजो तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ राजन हे राजन, रावण सरिखो राजवी, जे बलीयो कहेवाय ॥ हे राजन ॥ लाख बेहेंतालीस गज तुरी, सेवे सोल सहस राय ॥ हे राजन ॥ १ ॥ धिक धिक काम विडंबना, कामें लुब्धा जेह ॥ हे रा० ॥ जस अपजस कांइ नवि गणे, न गणे सुख दुःख तेह ॥ हे रा० ॥ २ ॥ धि० ॥ बत्रीश सहस अंतेउरी, रूपें अपछर प्राय ॥ हे रा० ॥ ते सहुंने अवगुणी, रावण सीता ल्याय ॥ हे रा० ॥ ३ ॥ धि० ॥ राम ने लखमण बेहु मली, कीधो कटक अपार ॥ हे रा० ॥ बार वरस लगी आकरा, लड्या नर झुंझार ॥ हे रा० ॥ ४ ॥ धि० ॥ सीताकारण [illegible], केइ सुभट खपाय ॥ हे रा० ॥ अंते [illegible], दश मस्तक रोलाय ॥ हे रा० ॥ ५ ॥ धि० ॥

त्रिजगमें कंटकेश्वरी,नाम धरावतो जेह॥ हे रा०॥ चो थी नरकें ते गयो, परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥ ॥ ६ ॥ धि० ॥ लंका परलंका करी, निजनारीने लेय ॥ हे रा० ॥ निज नगरीयें रघुपति वल्यो, जितना मं का देय ॥ हे रा० ॥ ७ ॥ धि० ॥ वाणुं लख मालव धणी, जे थयो राजा मुंज ॥ हे रा० ॥ ते पण दासी मृणालथी, लुब्ध्यो कामीनि पुंज ॥ हे रा० ॥ ८ ॥ धि० ॥ ते दासीना संगथी, घर घर मागी नीख ॥ हे रा० ॥ अंते शूलि रोपण थयो, कामथी लह्यो ए शीख ॥ हे रा० ॥ ए ॥ धि० ॥ लुब्ध्यो द्रौपदी ऊपरें, कीचकें कीयो चूक ॥ हे रा० ॥ घालियो देवल कुंज मां, नीमें कीधो चूक ॥ हे रा०॥ १० ॥ धि० ॥ सर सति नामें साधवी, कालिकसूरिनी बेन ॥ हे रा० ॥ गर्धनिल नृपें तस अपहरी, कीधुं ए कामी चेन ॥ हे रा० ॥ ११ ॥ धि० ॥ कालिकसूरियें ततखिणें, मे ली प्रबल खंधार ॥ हे रा०॥ गर्धनिल नृप शिर छेदी युं, वाली निज बहेन सार ॥ हे रा० ॥ १२ ॥ धि० ॥ इत्यादिक कामीजना, पाम्या दुःख अपार ॥हे रा० ॥ परस्त्री गमन करवाथकी, पडिया नरक मझार ॥ हे रा० ॥ १३ ॥ धि० ॥ कामिनी जे संसारमां, नां

खी पापनी राश ॥ हे रा० ॥ कामी जनने पाडवा, मोहकूपें धस्यो पाश ॥ हे रा० ॥ १४ ॥ धि० ॥ नयणें देखाडी प्रीतडी, बोली मीठा बोल ॥ हे रा० ॥ प्राण हरी लीयें कामीनां, देंखाडी रंग चोल ॥ हे रा० ॥ १५ ॥ धि० ॥ आंसूं पाडी नयणथी, दुःख देखाडे आप ॥ हे रा० ॥ आ जवमें मुऊ तुम विना, बीजा जाइने बाप ॥ हे रा० ॥ १६ ॥ धि० ॥ कडकडता करि आकरा, खाये खोटा सूंस ॥ हे रा० ॥ थें पर मेसर साचलो, ठेतरे जलजला पुंस ॥ हे रा० ॥ १७॥ धि० ॥ जोलवे जोला जामिनी, राखी ते कूडी बुद्धि ॥ हे रा० ॥ जइक प्राणी वापडा, माने ते धोळुं दूध ॥ हे रा० ॥ १८ ॥ धि० ॥ कूड कथन चाले घणुं, स्त्रीनो एह सजाव ॥ हे रा० ॥ चरित्र रमे केइ जातिनां, पामी ते निज दाव ॥ हे रा० ॥ १९ ॥ धि० ॥ कूड कपटनी ठरडी, गोरडी निगुण निटोल ॥ हे रा० ॥ अजया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल ॥ हे रा० ॥ २० ॥ धि० ॥ रमणी तणां मन एहवां, जेहवां पाकां बोर ॥ हे रा० ॥ बाहिर सुंदर देखणां, मांहे कठिण कठोर ॥ हे रा० ॥ २१ ॥ धि० ॥ महिला केरो नेहलो, जेहवो संध्या राग ॥ हे रा० ॥ आसो मासनो मेहलो,

तेहवो स्त्रीनो राग ॥ हे रा० ॥ २२ ॥ धि० ॥ स्वारथ पहोंचे जिहां लगें, तिहां लगें करे रंग रेल ॥ हे रा० ॥ त्रूठी तन धन हरि लिये,रुठी विषनी वेल ॥ हे रा० ॥ २३ ॥ धि० ॥ सुरीकंतायें कंतने, हणियो देई जेर ॥ हे रा० ॥ नारी दुष्ट होवे सदा, न जुवे करतां केर ॥ हे रा० ॥ २४ ॥ धि० ॥ ब्रह्मदत्तने मारवा, लाख नां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ चुलणीयें निज पुत्रने, स्वहस्तें वन्हि दीध ॥ हे रा० ॥ २५ ॥ धि० ॥ पायुं रक्त सुजाततणुं, खवराव्युं उरमांस ॥ हे रा० ॥ ते जितशत्रुने राणीयें, नाख्यो जलधिमें तास ॥ हे रा० ॥ २६ ॥ धि० ॥ नारी न होवे आपणी, वानां जो करियें लक्ष ॥ हे रा० ॥ दूधने मांग दो नामिनी, देखाडे परतक्ष ॥ हे रा० ॥ २७ ॥ धि० ॥ मोह देखा ही दगो करे, स्त्रीनो ठे ए ढंग ॥ हे रा० ॥ ते माटे तुमें राजवी, म करो परस्त्री संग ॥ हे रा० ॥ २८ ॥ धि० ॥ इणि परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत ॥ हे रा० ॥ पण नृपनुं मन नवि मले, वसंतसिरी चित्त भ्रांत ॥हे रा०॥२९॥धि०॥मन लाग्युं जेह उपरें,विसार्युं नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा छाकमां, उप देश नावे दाय ॥ हे रा० ॥ ३० ॥ धि० ॥ लब्धि वी

जा उल्लासनी, ए कही त्रीजी ढाल ॥ हे रा० ॥ आगल नवि तुमें सांभलो, सरस कथा उजमाल ॥ हे रा०

॥ दोहा ॥

॥ वलि मेहर मंत्रीसरु, नृपने दे उपदेश ॥ जाणे किम करि नृप वले, होवे लाज विशेष ॥ १ ॥ इम जाणी मंत्री कहे, सांभलो तुमें माहाराज ॥ चिहुं जगमें छे अति घणी, तुमची महोटी लाज ॥ २ ॥ साचवीयें जल आपणुं, अणसाचवियुं जाय ॥ नालीकेर परें साचव्युं, अधिक अधिक जल थाय ॥ ३ ॥ परदुःख भंजन राजवी, जगमें इम कहेवाय ॥ परनारी ते सहोदरु, विरुद एम देवाय ॥ ४ ॥ ते मारग किम मूकीयें, आपणि जे कुलवट्ट ॥ शील सुरंगु सेवतां, ल हियें सुख परगट्ट ॥ ५ ॥ शीलें [illegible] निध करे, शीलें शीतल आग ॥ शीलें अरि [illegible] ी, भ[illegible] जाये सवि भाग ॥ ६ ॥ [illegible] मनव[illegible] हे सौभाग्य ॥ शी[illegible] ने चि[illegible] दौर्भाग्य ॥ ७ [illegible]

॥ [illegible] न

[illegible] ८ ॥ २ [illegible]

॥ मदन [illegible]

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बिंदलीनी देशी ॥ एतो शीलनो महिमा म
होटो, सहि नांखे त्रिशलानो छोटो रे ॥ नरपतिजी
निसुणो ॥ ए तो शीलथी लील विलास, शीलें पहों
चे सघली आश रे ॥ न० ॥ १ ॥ ए तो जे नर शी
लने पाले, ते आतम नव अजुवाले रे ॥ न० ॥ जे
धरे शीलशुं राग, ते पामे नवोदधि ताग रे ॥ न०
॥ २ ॥ ए तो शील छे कुलनुं आनरण, शील टाले
कर्म आवरण रे ॥ न०॥ ए तो शील छे कुलनुं रूप,
शीलें माने सुर नर नूप रे ॥न०॥ ३ ॥ ए तो शीलथी
शुक्ल ध्यान, शीलें पामे केवल ज्ञान रे ॥ न० ॥ ए
तो शीलशुं रहे एक तान, शिव रमणी दे तस मान
रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ए तो शील छे गुणनुं निधान, शी
लें पामे स्वर्ग विमान रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें संकट
नांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाजे रे ॥ न०॥ ५ ॥ ए तो
शीलें कुंअर श्रीपाल, तस कोढ गयो ततकाल रे ॥
न० ॥ ए तो शीलें सुदर्शन शेठ, शूलि फीटी सिंहा
सन बेठ रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी,
लघुवयमें थयो शिवगामी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें
नेम कुमार, थयो शिवरमणी नरतार रे ॥ न० ॥ ७ ॥

ए तो शीलें मेघकुमार, जेणें छंमी आठे नार रे॥ न० ॥ ए तो शीलें गयसुकुमाल, शिवपदवी लही सुरसाल रे॥ न० ॥ ८ ॥ ए तो शीलें थूलिनद् नाम, राख्युं चिहुं जगमें अनिराम रे॥ न०॥ ए तो शीलें श्रीमल्लिनाथ, ए तो मुगतिवधू करि हाथ रे॥ न० ॥ ए॥ ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां शीलें समारी रे॥ न० ॥ ए तो शीलें सुनद्रा सुहाडी, जेणे चंपा पोल उघाडी रे॥न०॥१०॥ ए तो डुपदी पांमव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवेरी रे॥ न० ॥ ए तो तेहने शील प्रनावें, सुर सत अष्ट चीर पहेरावे रे॥ न० ॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमाल, अहि फीटी थइ फुलमाल रे ॥ न०॥ ए तो शीलें चंदनबाला, वीरें करी छाक छमाला रे॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इत्यादिक अवदात, कहुं शीलनी केती आख्यात रे॥ ॥न०॥ जे पाले शील नर नारी, हुं जाउं तस बलिहारी रे ॥न०॥१३॥ कुशीलियो किहां न खटाय, कुक्कर ज्युं धक्का खाय रे॥न०॥ कुशीलने काढे कूटी, जिम घर मांथी हांमी फूटी रे॥न०॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे विसास, कुशीलियो फरे थइ दास रे॥ न० ॥ कुशीलियो गति नवि पामे, जाये नरक निगोदने गामें रे

॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सघले नंमाय, चोविश दंमकें दंमाय रे ॥ न० ॥ कुशीलनां कर्म अघोर, न वो नवें फिरे थई चोर रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्र यंत्र नें विद्या जेह, कुशीलने न फले तेह रे ॥ न० ॥ सिद्ध साधक नाम धरावे, कुशीलने जस कदि नावे रे ॥ न० ॥ १७ ॥ माहादेव जे देव कहाय, सरगथी मरि नरकुं जाय रे ॥ न० ॥ अहिल्याशुं इंद्र जे लुब्धो, तो सहस्त्रगो नाम दीधो रे ॥ न० ॥ १८ ॥ कुल ालुर्च साधु कहातो, गुरु द्रोहित किम जातो रे ॥ १० ॥ ते गयो गणिका संगें, वही नरकें कुशीलने ढं ं रे ॥ न० ॥ १९ ॥ वर्ष सहस ते चारित्र पाली, कुं ररीकें तप परजाली रे ॥ न० ॥ ते मरीने एकण रा ां, जइ वेगो नारकी पांतें रे ॥ न० ॥ २० ॥ कुशील ी करणी खोटी, करतो फरे नानी महोटी रे ॥ न० । कुशीलनुं तप जप फोक, वध बंधन लहे फल रोक रे ॥ न० ॥२१॥ स्वदारा दिल नवि आवे, कुशीलियो उंखर खावे रे ॥ न० ॥ ए तो जेहने जे पडी हेवा, तेह नी जाए टेव मरेवा रे ॥न०॥२२ ॥ ते माटे तुमें महीनाथ, छंमो परस्त्रीनो साथ रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं नाम धराशो, लोकोमें हांसुं कराशो रे ॥ न०॥ २३ ॥ दिल

साबुत राखो राजा, खत्रीवटनी राखो माजा रे ॥ न० ॥ ए तो तुमें बो प्रभुने वाला, इण वातें मत थाउ काला रे ॥ न० ॥ २४ ॥ ए तो वसंतसिरी जे बाला, तुमें न करो एहवुं चाला रे ॥ न० ॥ जाये जनम ते जशने कमातां, पण वार न लागे जश जातां रे ॥ न० ॥ २५ ॥ ए तो परदेशी थई बूटे, पण महीमां तुम जग खूटे रे ॥ न० ॥ इम मंत्री ते परचावे, पण नृपने दिल कांइ नावे रे ॥ न० ॥ २६ ॥ मंत्रीयें जे कही वातो, ते सांजली नृप हुउ तातो रे ॥ न० ॥ तव मंत्री थयो खिसियाणो, साहामुं नृप रोषें जराणो रे ॥ ॥न०॥२७॥ हवे सुणजो जे नृप बोले, मंत्री आगल पोथुं खोले रे ॥ न० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, कही चोथी लब्धें रसाल रे ॥ न० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥वयण सुणी मंत्री तणां, नृपने लागी हिंग ॥ नूतनराड ते नृप थयो, जाणे लागु विंग ॥१॥ हित ीखामण देवतां, नृपने कठी काल ॥ आगें अहि ोडियो, तिम हुवो नृप विकराल ॥ २ ॥ आगें वानरने वली, विढीयें ीध ॥ रीने वली, ग्वाननुं विरुद ते उपरें,

कोपाकुल थइ राय ॥ मदनवेग तिहां सचिवशुं, बो ल्यो भ्रकुटी चढाय ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं जाणतो, तुझ ने चातुर कोक ॥ वे दाणा तुझमें नही, जे बोले ते फोक ॥ ५ ॥ तें किम जाण्या कुशीलिया, करणी हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन किया पछे, स्वर्गे पहोता केह ॥ ६ ॥ ते सांभल तुझने कहुं,शास्त्र तणे अनुसार ॥ व्रत भांगी ते मुनिवरा, पाम्या भवनो पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जीणा मारुजीरी करहलडी ॥ ए देशी ॥ भूनेता कहे सचिवने, सांभल तुं एकंगो थइने कान उघाडी हो राज ॥ चोविश वर्ष घरे रही, मुनिवर आर्द्रकुमारें व्र तने लाज लगाडी हो राज ॥१॥ ते गयो ज्योति आगा रमें, सिद्ध वधूना संगमें जइ सुख भोगवे पूरां हो राज ॥ साख भली तस ए कही, श्रीवसुदेवनी हिंम में अक्रूर जो तुं सनूरा हो राज ॥ २ ॥ श्रेणिक रायनो कुंवरुं, नामें नंदिखेण जे वलियो थइ व्रत ली नो हो राज ॥ तेणें पण व्रत भांजीने,गणिकाशुं घर मांहि रह्यो रंग भीनो हो राज ॥ ३ ॥ बार वरस सुख भोगवी, अजरामर पद लहियो करणी सहु ज ग जाणे हो राज ॥ माहानिशीथ जे सूत्रमां, साख

नली जाणजे मंत्री लिखित प्रमाणें हो राज ॥ ४ ॥
पापी चिलाती पुत्र जे, स्त्री हत्या जिणें कीधी महोटी
कामें व्याप्यो हो राज ॥ ते गयो सुर लोक आठमे,
साख नली तुं जाणजे श्री योगशास्त्रें उपायो हो राज
॥ ५ ॥ आषाढभूति अणगार जे, नाटकणीने साथें
बार वरस घर मांड्यो हो राज ॥ साख नली तस
चरित्रमां,ते गयो शिवगति मांहे जाणी जे व्रत खंड्यो
हो राज ॥ ६ ॥ चंद्रशेखर विद्याधरु, ते निज नगि
नि साथें निशिदिन रंगें रमतो हो राज ॥ ते लह्यो
मुगतिवधू प्रिया, श्रीसेत्रुंजो माहातम साखी छे मन
गमतो हो राज ॥ ७ ॥ चक्री भरत नरेसरु, गंगा दे
वीने घेर रहियो थइ सुखवासी हो राज ॥ सहस व
रस सुख भोगवी, भुवन आरीसामांहे पाम्या ज्ञान
उल्लासी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, रूषभ
जिणेसर साथें मुगति पुरीयें पुहता हो राज ॥
तेनी साख तुं जाणजे, जंबुदीवपन्नत्तिमांहे अछूर
सुहता हो राज ॥ ए ॥ नामें एलाची जाणीयें,
नाटकणीनी लारें भटक्यो प्रेम विलुद्धो हो राज
॥ केवल रयण ते पामिने,मुगति पुरीमें जइने बेगो नि
र्भय सूधो हो राज ॥१०॥ गज सुकुमालिका साधवी,

मशक मसक दो जाइ तेहनी बहेन कहाणी हो राज ॥ चिरकाल सुधी ते साधवी, सारथवाहनी घरणी थइ रही उपगार जाणी हो राज ॥ ११ ॥ ते थइ आर्या कुशीलणी, अणसण खंमी पहोती तेहिज नव सुरलोकें हो राज ॥ तेहना परगट अछुरा, श्री उपदेशनी मालामांहे वांची लोकें हो राज ॥ १२ ॥ ब्रह्मा ध्यानें चूकव्या, नाटारंभ देखाडी रंभायें जो लव्यो ब्रह्मा हो राज ॥ चिहुंदिशि चउमुख नी पनां, गर्दभनुं मुख प्रगटथुं, पांचमुं उपजे शर्मा हो राज ॥ १३ ॥ मारग जातां ब्रह्मायें, वनमें दीठी रीं छडी मीठी मनमें लागी हो राज ॥ तेहशुं अभिलाप सेवतां,रींछरूपि तें रींछडी पेटें उपनो सागी हो राज ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते-ब्रह्माने, परमेसर करि माने दुनियां एकण ध्यानें हो राज ॥ तारक जग परमेसरु, निज पुत्रीशुं विलसे रंगें थइ एक तानें हो राज॥१५॥ उमया नारी छवेखीनें, जटामध्यें छानी राखी ईश्वरें गंगा हो राज ॥ तारक जाणी शंभुने, वरण अढार जे मानवि रुद्रने पूजे एकंगा हो राज ॥ १६ ॥ पुत्री उखा देखीने, त्रिनेत्री थयो शंकर तिण दिनथी गव राणो हो राज ॥ लिंगपूजा थइ तिण दिनथी, लिंग

पुराणें चावो अक्रूर ठे सपराणो हो राज ॥१७॥ विष्णु पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल थइने लोकमांहे पूजा णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते ठंमी महीयारी राधा सायें गवाणो हो राज ॥१८॥ कुंता पांडु नृप तणी,लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो राज ॥ करण थयो ते उदरनो,जग चक्षु ते देवनी सहु जग माने उलसी हो राज ॥१९॥ ए अवदात जे में कह्या, करमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बल वंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण वलिया गलिया कर्मे नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण आशरो, तिन जुवनमें सर्वने कर्मे मुक्या चूणी हो राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई ओकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुगति जे पामवी, ते करणी ठे सघली नवितव्यताने हाथें हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, शुनाशुनना बंध जे बांध्या ते आवे सायें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र तपस्यानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हुतो हो राज ॥ ते मरीने थयो सूअडो, किहां गइ करणी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥ ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहातम मांहें

है ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नही, नवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी नांखी हो राज ॥२४॥ नवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव करे पण लेखे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सींचे सो गणां, पण तेहनी उतावळे ऋतु विना फल नवि पावे हो राज ॥२५॥ तिम आपणी उतावळें, समकित रयण विना किम नवस्थिति पाकी जाय हो राज ॥ घणुंय नूख्यो पण शुं करे, लाख उतावल करी यें वे करथी न जमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम ड्व्य क्रियाथी न उघडे, नावक्रिया जब स्यंतर प्रगटे तव शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि लहुं, तिहां सुधी ते जीवने चिहुं गति कर्म नमावे हो राज ॥ २७ ॥ ड्व्यथी उंचा चरवला, एकठा कीधा जीवें मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी नही, नाव विना जे किरिया कीधी दंनी ज्युं बगला हो राज ॥ २८ ॥ ते माटें मंत्री तुमें, शील कुशीलनुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे कारण जव मिले, नवितव्यताने जोगें शुनाशुन तव नणजो हो राज ॥ २९ ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मद नवेगें दीधो चोखो हाथमें लाडु हो राज ॥ वली

पुराणें चावो अक्रूर छे सपराणो हो राज ॥१७॥ विष्णु पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल थइने लोकमांहे पूजा णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते छंमी महीयारी राधा सायें गवाणो हो राज ॥१८॥ कुंता पांडु नृप तणी, लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो राज ॥ करण थयो ते उदरनो, जग चकु ते देवनी सहु जग माने उलसी हो राज ॥१९॥ ए अवदात जे में कह्या, करमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बलवंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण बलिया गलिया कर्मे नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण आशरो, तिन भुवनमें सर्वने कर्मे मुक्या चूणी हो राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई मोकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुगति जे पामवी, ते करणी छे सघली जवितव्यताने हाथें हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, शुनाशुनना बंध जे वांध्या ते आवे सायें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र तपस्यानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हुतो हो राज ॥ ते मरीने थयो सूअडो, किहां गइ करणी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥ ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहातम मांहे

हे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नही, नवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी जांखी हो राज ॥२४॥ नवस्यिति पूरी थया विना, उद्यम जीव करे पण लेखे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सींचे सो गणां,पण तेहनी कतावलें रुतु विना फल नवि पावे हो राज ॥२५॥ तिम आपणी कतावलें, समकित रयण विना किम नवस्थिति पाकी जाय हो राज ॥ घणुंअ नूख्यो पण शुं करे, लाख उतावल करी यें बे करथी न जमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम ड्व्य क्रियाथी न कघडे, नावक्रिया जव न्यंतर प्रगटे तव शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि लहुं, तिहां सूधी ते जीवने चिहुं गति कर्म नमावे हो राज ॥ २७ ॥ ड्व्यथी उंघा चरवला,एकठा कीधा जीवें मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी नही, नाव विना जे किरिया कीधी दंनी ज्युं बगला हो राज ॥ २८ ॥ ते माटें मंत्री तुमें, शील कुशील नुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे कारण जव मिले, नवितव्यताने जोगें शुनाशुन तव नणजो हो राज ॥ २९ ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मद नवेगें दीधो चोखो हाथमें लाड हो राज ॥ वली

कहे सांजल मंत्रवी, तुझ करणी विगतावी ताहरा का न उघाडुं हो राज ॥ २० ॥ लब्धें बीजा उल्लास मां, मंत्रीने समजाव्यो जलि परें पांचमी ढालें हो राज ॥ हवे सुणजो जवियण तुमें, आगल शी शी वात निपजे ते उजमालें हो राज ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे मंत्री हुं ताहरां, जाणुं सयल चरित्र ॥ पापड खाई पदमशी, तुं थयो महोटो पवित्र ॥ १ ॥ पट्टा खाउ अम तणा, ल्यो वलि लोकां लांच ॥ लेवा देवा मापलां, राखो कूडां साच ॥ २ ॥ कूड कपट हृदयें धरी, बोलो मीग बोल ॥ धोले दिन धूतो घणुं, राखी कूडां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता फरो, पारकुं ताको छिड ॥ साची जूठी करो घणी, काढो जूना कुड ॥ ४ ॥ अम उपरालें लोकने, द्यो लेखणनो मार ॥ वेरें वींटा परजने, देवो दुःख अपार ॥ ५ ॥ अमें उसरीयें पापथी, तुमें न उसरो कोय ॥ मरण बीक राखो नही, गती टपट ज्युं होय ॥ ६ ॥ पर उपदेश देवा घणुं, माहापण राखो ठीक ॥ आप न जाये सासरे, दिये परायां शीख ॥ ७ ॥ निज अवगुण जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांधी

गोतडी, दींनो शीश धरेय ॥ ८ ॥ चंदन भार गर्दभ शिरें, जाणे लोकें दीध ॥ भारोद्वाह गर्दभ थयो, प ण चंदन स्वाद न लीध ॥ ए ॥ तिम मंत्री तुं जाण जे, तुजमां एह स्वभाव ॥ मुज उपगार जाण्यो नहीं, गर्दभ सम थयो राव ॥ १० ॥ एह वचन महिपति तणां, सांभलि चमक्यो चित्त ॥ मनमां बीनो मंत्र वी, राजा केहना मित्त ॥ ११ ॥ हित शीखामण दे यतां, साहामुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दभने हणी, गाम शुं राखे रोष ॥ १२ ॥ महिपतिनुं मन ओलखी, बो ल्यो मंत्रि तिवार ॥ हा स्वामी तुमें जे कही, मानुं ते निरधार ॥ १३ ॥ राजा के परमेसरु, जे बोले ते स त्त ॥ एहमें जूठ न संपजे, दोमें छे दैवत्त ॥ १४ ॥ मुखथी साकर थालीने, नृपने कस्यो प्रसन्न ॥ महिपति यें पण मंत्रीने, सनमान्यो सुवचन्न ॥ १५ ॥ सिरपा व देइ बोलावियो, मंत्रीने निज ठाय ॥ राज काज शुभ चालवे, मदनवेग तिहां राय ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ काविलरो पाणी लागणो, काविल मत चाले ॥ अथवा, धन मेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥ एक दिन वेगो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त

सांजरी, तस थयो उदवेग ॥१॥ धिग धिग काम विटं बना, मोहें जोवन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी ङुर्जय जीततां, घणुं दोहेलुं लागे ॥२॥धि०॥ तिण अवसरें एक मेहेतलो, कालसेन ते नामें ॥ नृपने नमि अति ढूकडो, बेठो अन्तिराम ॥ ३ ॥ धि० ॥ मननो मेलो मायावियो, मद नस्यो कंठ सूधी ॥ पण ते सर्प तणी परें, माहा ङुष्ट कुबुद्धि ॥ ४ ॥ धि० ॥ नगद आसामी ठे घणुं, जाणे जठरनो मेल ॥ चाडी चुंगली करी घणी, काढे लोकनां तेल ॥ ५ ॥ धि० ॥ एहवो कुबुद्धि मंत्रीसरु, पेठो नृपने कानें ॥ हरिबल केरी वारता, मांमी एक तानें ॥ ६ ॥ धि० ॥ हरिबल कीर्ति विस्तरी, नगरी जन मांहे ॥ ते सांजली मन मेंतलो, रीशें बले तांहे ॥ ७ ॥ धि० ॥ अवसर लेइ कालसेन ते, नृपकान नंनेस्यो ॥ ङुर्जन मुख वाणें करी, नृपनुं दिल फेस्यो ॥ ८ ॥ धि०॥ लटपट नृप आगें करे,पापी परपंच ॥ हरिबलने उडापवा, मांम्यो सूधो संच ॥ ए ॥ धि० ॥ स्वामी शुं जाणो अठो, हरिबलनी वातो ॥ नगरजन सहु वश करी, करशे तुम घातो ॥ ॥ १० ॥ धि० ॥ ठत्रीश राजकुली करे, हरिबलनी सेवा ॥ कूडो रचे ठे एक मली, तुमचो राज लेवा ॥

॥ ११ ॥ धि० ॥ चेतवुं होय तो चेतजो, घाट घडी थो ने कणे ॥ पर्छे कहेशो जे कह्युं नही, सुणने तें कृर्णो ॥ १२ ॥ धि० ॥ परदेशी अणजाणने, तुमो दोत बंधावी ॥ ते किम होवे आपणा, सुणो नृपति तावी ॥ १३ ॥ धि० ॥ वसंतसिरी अप्सर समी, हरि बलनी हे लाडी ॥ निज हाथें प्रभुयें घडी, कामिज ननी ए वाडी ॥ १४ ॥ धि० ॥ ए स्त्री जेणें दीठी न हीं, तस जनम अलेखे ॥ बे हाथे प्रभु पूजीया, ते स्त्रीने ए देखे ॥ १५ ॥ धि० ॥ धन्य दिवस धन्य ते घडी, धन्य वेला तेह ॥ एहवी स्त्री जेने घरे, तस पुण्य विशेह ॥ १६ ॥ धि० ॥ इणि परें हरिबलनी करी, चुगली ठग ताकी ॥ मेहेतले दुष्ट कुबुद्धियें, कांइ बाकी न राखी ॥ १७ ॥ धि० ॥ महिपतियें तें सांभली, चमक्यो चित्तमांहे ॥ पगथी मांभी माथा लगें, नृप परजल्यो दाहें ॥ १८ ॥ धि० ॥ आगें वेरी कर चढयो, वली करथकी तूटो ॥ आगें जुहारीनें वली, मल्यो साथी जूठो ॥ १९ ॥ धि० ॥ आगें सर्प छंछेडिने, कस्यो पुंछथी बांभो ॥ आगें अग्नि झालमां, सिंच्यो घृत मांभो ॥ २० ॥ धि० ॥ तिम नृप हरिबल ऊपरें, घणुं रोषें भराणो ॥ रे मंत्री हरिबल हणी,

तस स्त्री घर आयो ॥ २१ ॥ धि० ॥ तव मंत्री का लसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥ स्वामी हरिवलने ह णे, जनमां जाय पाणी ॥ २२ ॥ धि० ॥ पण एक स्वामी उपाय छे, तुम बुद्धि वतावुं ॥ हरिवलने तुमें मोकलो, लंका गढ गावुं ॥ २३ ॥ धि० ॥ जलनिधिमें जातां थकां, वहेशे एह वोलें ॥ तव नारी तुम मं दिरें, आवशे रंगरोलें ॥ २४ ॥ धि० ॥ गाकर चाक रनी इहां; साची खवर ते पडशे ॥ तुम आणा ते शिर धरी, लंका गढ चडशे ॥ २५ ॥ धि० ॥ ते माटे तेडी तुमें, हरिवलने पूछो ॥ एम कही घरे मेंहेंतलो, गयो घाली तूंगो ॥ २६ ॥ धि० ॥ लब्धें बीजा उल्ला सनी, कही छठी ढाल ॥ आगल नवि तुमें सांजलो, मीठी वात रसाल ॥ २७ ॥ धि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मतो करि दोय ॥ महिपति पहोतो महेलमां,मंत्री गयो घर सोय ॥ १ ॥ बीजे दिन रवि ऊगियो, प्रगट्यो राग विलास ॥ पंकु नियें बांह पसारीयां, कैरव कीध विकास ॥ २ ॥ वा छरुआं वलगां जई, धावाने हर्षेण ॥ दोवा बेसे जा मिनी, जेहने छे घर धेण ॥ ३ ॥ देखन सबले वा

जियां, फालरना फणकार ॥ तास शब्द सुणतां थकां, रजनी नावि तिवार ॥४॥ सुखन वोधी जीवडा, मांमे निज खटकर्म्म ॥ साधूजन सुख मोमती, वांधी हे जिनधर्म ॥५॥ मंगल वाजां वाजियां, वाज्यां गुहिर निशाण ॥ ए करणी परनातनी,जव ऊगे शुन नाण ॥६॥ मदनवेग नृप तिण समे, परखद मेली एकत्र ॥ वेठो सिंहासन हसी, माथे धरावी ठत्र ॥ ७ ॥ खटत्रीस राजकुली मली, वडवडा सोहे सामंत ॥ शेठ सेनापति मंत्रवी, परखद मेलि अत्यंत ॥ ८ ॥ हरिवल पण मंत्रीसरु, वेठो नृपनी पास ॥ विरुदावलि नृपजन तणी, कविजन वोले उल्लास ॥ ए ॥ रंग विनोदनी वारता,परखदमें करे सार ॥ तिण अवसर नृप वोलियो, मदनवेग तिणि वार ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कुंमरखडानी देशी ॥ सना समर्द्दे नृप कहे रे, सांनलजो सामंत ॥ सनेहा सांनलो ॥ माहरे काम थवे घणुं रे, अध्यवसाय अत्यंत ॥स०॥१॥ वैशाख शुदि पांचम दिनें रे, लीधुं ठे लग्न विशेष ॥स०॥ अंगजने परणाववा रे, मांम्यो विवाह विशेष॥स०॥२॥ उम्मर मध्ये तुम तणुं रे,काम पडयुं ठे आज ॥स०॥

॥ स्वामी जक्ता जे हुवो रे, ते सारो मुऊ काज ॥ स० ॥ ३ ॥ लंका गढ जावुं अछे रे, कहो ते जाशे कोण ॥ स० ॥ वीडुं छवो ए माहरुं रे, जे खाता होय लूण ॥ स० ॥ ४ ॥ लंकापतिने नोतरी रे, तेडी आवे जेह ॥ स० ॥ माहरी रीऊं पामशे रे, लाख वधामणी तेह ॥ स० ॥ ५ ॥ राय बिनीषण तेहशुं रे, माहरे छे बहु नेह ॥ स० ॥ शीघ्र जई लगन दिनें रे, तेडी आवो गेह ॥ स० ॥ ६ ॥ जो ममता माहरी करो रे, तो मत करजो ढील ॥ स० ॥ शीघ्र थइ वीडुं ग्रही रे, पंथें वहो मेली ढील ॥ स० ॥ ७ ॥ इणि परें महिपति यें कह्युं रे, सना समक्ष वचन्न ॥ स० ॥ पण वीडुं ग्रहवा नणी रे, कोइ न दीये तन्न ॥ स० ॥ ८ ॥ स गै मटा मटिनी परें रे, मौन करी रह्या सर्व ॥ स० मरण तणी बीकें करी रे, मूक्यो सघले गर्व ॥ स० ॥ ए ॥ अधोदृष्टि करी रही रे, सघली परखदा सो य ॥ स० ॥ ऊंची दृष्टें नवि जुवे रे, लज्जाणा सहु कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तव कर जोडी मंत्री कहे रे, कालसेन ते दुष्ट ॥ स० ॥ स्वामीयें जे कही वारता रे, सांनली हुआ संतुष्ट ॥ स० ॥ ११ ॥ पण विषम पंथ आकरो रे, जलधिमें केम जवाय ॥ स० ॥ पग

वटें सिद्ध न संपजे रे, भ्रुजाथी न तराय ॥ स० ॥ १२ ॥ गज पाखर जंबुकशिरें रे, नाखी तुमें राजान ॥स०॥ ते किम तिणथी कंधरा रे,ऊंची थावा निदान ॥ स० ॥ १३ ॥ मलकोटनी कटि उपरें रे, मूकी गोलनी गुण ॥ स० ॥ गात्र विना केम उपडे रे, जे करे गजा विहूण ॥ स०॥ १४ ॥ तिम स्वामी लंका गढें रे, शक्ति विना कुण जाय ॥ स० ॥ पूरो पराक्रमी जे होवे रे, ते जावा अंगमाय ॥ स० ॥ १५ ॥ के वहे लंका देवता रे, के विद्याधर होय ॥ स० ॥ के तपसी साधु जना रे, तो तरे जलनिधि तोय ॥ स० ॥१६॥ बीजानो शो आशरो रे, जलनिधिनो लहे ताग ॥ स० ॥ दशरथसुत एक सांजल्यो रे, जलधियें बांधी पाग ॥ स० ॥ १७ ॥ केवली हरिबलने सुण्यो रे, जे बेगो तुम पास ॥ स० ॥ जावे ए लंका गढें रे, बीडुं ठवीने उल्लास ॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए जाणियें रे, एहमां ले जगदीश ॥ स० ॥ काज तुमारुं सारशे रे, पूरशे मननी जगीश ॥ स० ॥ १९ ॥ इणि परें कुमति मंत्रियें रे, नृपने विनति कीध ॥ ॥ स० ॥ सुनट शिरोमणि इण समे रे, दीसे हरिबल सिद्ध ॥ स० ॥ २० ॥ ते निसुणी नृप तिण वेला रे,

हरिवलने कहे राय ॥ स० ॥ शीघ्र थई वीडुं ग्रहो रे, जिम मुझ वंछित थाय ॥ स० ॥ २१ ॥ राय बि नीपणने जई रे, तेडि आवजो आंहि ॥ स० ॥ मान शुं मुजरो तुम तणो रे, जीवित सूधी उछाहि ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ तव हरिवल श्रवणें सुणी रे, मनशुं विमासे आज ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, तो न रहे मुझ लाज ॥ स० ॥ २३ ॥ लाजें कप्पड पहेरीयें रे, लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचमें बेसीयें रे, लाजें वाधे मान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजें गढ कोट लीजियें रे, लाजें राखीयें सत्त ॥ स० ॥ लाज वधी मुझ चिहुं जगें रे, किम कहुं ना हवे झत्त ॥ स० ॥ ॥ २५ ॥ इणिपरें मनमां सोचीने रे, बोल्यो हरिवल ताम ॥ स० ॥ लावुं जइ लंकाधणी रे, तो हुं खरो मुझ स्वाम ॥ स० ॥ २६ ॥ मेलवुं तुम लंकापति रे, तो मुझ देजो शाबाश ॥ स० ॥ एम कही बीडुं ग्रही रे, हरिवल आव्यो आवास ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ निजपति मुख देखिने रे, वसंतसिरी उजमाल ॥ स० ॥ बीजा उल्लासनी ए कही रे, लब्धियें सातमी ढाल २७

॥ दोहा ॥

॥ हरिवल कहे निज नारीने, सांभल प्यारी मुझ ॥

जाडुं छे लंका भणी, मागुं आग्या तुज ॥ १ ॥ थिर चित करी रहेजो तुमें, देजो दान सुपात्र ॥ शील सुरंगुं पालीने, करजो निर्मल गात्र ॥२॥ धरजो ध्यान नव पद तणुं, चउद पूरवनुं सार ॥ समस्या जिम सांनिध करे, आपे शिवसुखकार ॥ ३ ॥ सेवजो गुरु देव एक मनें, जेणे वधारी शर्म ॥ कीडीथी कुंजर कह्या, उत्तम खावी जिनधर्म ॥ ४ ॥ प्रीतम वचन ते सांजली, वसंतसिरी कहे एम ॥ शे कारण जावुं पडे, ते कहो जाणुं जेम ॥५॥ तव मांमी हकिगत कही, प्यारी आगल तेह ॥ तिण कारण जावुं पडे, सांजल तुं ससनेह ॥६॥ पियुनुं गमन ते सांजली, कुमरी थइ दिलगीर॥ जाणे जाद्रव मेह ज्युं, वरसे आंसु नीर ॥७॥ कालजेको घाली वहो, प्रीतम तुम निसनेह ॥ निशि दिन विरहें तुम विना, बले सुरंगी देह ॥८॥ सघलुं दुःख खमीयें प्रजु, पण विरहो न खमाय ॥ विरहानलनी बाफ जें, पियु विण केम उलाय ॥ ए ॥ तेमाटे प्रीतम तुमें, मत जाउ परदेश ॥ मन किम वहशे मूकतां, मुजने वाले वेश ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पियु तुमें, महोटुं लाव्या विंग ॥ लंकापतिनो जाणज्यो, जिहां गयां उंटनां शिंग

॥११॥ जो प्रितम चालो तुमें, तो मुफ तेडो संग ॥ टेह
ल करेशुं तुम तणी, जोशुं लंका रंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥ तव प्रीतम कहे
सांजल प्यारी, मुफ तुं छे मोहनगारी रे ॥ सुंदरी स
सनेही ॥ तुफ मुख देखि हुं सुख पाउं, तुफ निशि दि
न चितमें ध्याउं रे ॥ १ ॥ सुं० ॥ प्राणथकी छे तुं
मुफ वाहाली, जिम चंडने रोहणी वाहाली रे ॥सुं०॥
तुं मुफ चित्रावेल समानी, तुं मुफ बुद्धि निधानी रे
॥ २ ॥ सुं० ॥ जव थइ ते प्रजुनी महेरबानी, प्री
तडी तुफशुं छानी रे ॥ सुं० ॥ लेख लिखित थयो
तुफशुं मेलो, थयो संबंध पुण्यें जेलो रे ॥ ३ ॥ सुं०॥
अहोनिश लालच रहे तुफ केरी, घणुं घणुं करि कहुं
शुं फेरी रे ॥ सुं०॥ तुफने मुकतां मन नथी कहेतो,
पंथें चालतां पग नथी वहेतो रे ॥ ४ ॥ सुं० ॥ पण
शुं करीयें नृपनी सेवा, करवी पडे पेटनी हेवा रे
॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कह्युं नवि करियें, तो नृपनो
जश किम वरियें रे ॥ ५ ॥ सुं० ॥ जेहना घरनो को
लियो खावो, तस घरनो धोलो वंधावो रे ॥ सुं० ॥
ए संसारमें रीति छे सघले, काम कीधे जस वधे स

वळे रे ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ते माटे तुं सुंदरी मोरी, मुने आणा दे हवे तोरी रे ॥ सुं० ॥ शीघ्रगतें जई आ विश वहेलो, नृपनुं लगन ते पहेलो रे ॥ ७ ॥ सुं० ॥ तव रमणी कहे सांजल प्यारा, तुम हेज जताना क्यारा रे ॥ प्रीतम ससनेही ॥ मुज वखतें तुमे सुरप ति सरिखा, मळ्या हो पुण्यें आकर्या रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ जगती जोतां प्रज्ञु तुमें जडिया, सुरमणि सम मुज कर चडिया रे ॥ प्री० ॥ सुकृतवल्लि फली सुखदा यी, यह तुमथी साची सगाई रे ॥ ए ॥ प्री० ॥ में तु मशुं जे पालव वांध्यो, जीवित सुधी नेहलो सांध्यो रे ॥ प्री० ॥ हवे मुज प्रेम पयोधिमें नाखी, केम जा ठ छेहलो दाखी रे ॥ १० ॥ प्री० ॥ वसी मुज हृदयें थया परदेशी, तन मनना सोदागर वेशी रे ॥ प्री० ॥ नाखी मुजने प्रेमनी फांसी, वेग चालवा मूकी निरा शी रे ॥ ११ ॥ प्री० ॥ मुज सरिखी नारी कां मूको, नृप मंत्रीने वयणें कां चूको रे ॥ प्री० ॥ एहवो कुण मूरख छे फांफी, जे पय मूकी पीये कांजी रे ॥ १२ ॥ प्री० ॥ ते वखाणो प्रज्ञु तुमें मेल्यो, पछे वीजानो अ विहेलो रे ॥ प्री० ॥ में तुमने कहि आगें चितारो, नृप जमतां वात संजारो रे ॥ १३ ॥ प्री० ॥ ते फल

उग्यां तुमारां वाव्यां, निज करनां घज्यां हृश्ए नाव्यां रे ॥ प्री० ॥ ते कारण लंकायें जावुं, नृपें कीधुं चूक ते चावुं रे ॥ १४ ॥ प्री० ॥ डुर्जन नृप मंत्री पज्यो केडें, पण कोइक दिन ते वेडे रे ॥ प्री० ॥ सांजलो प्रीतम हुं तुम नांखुं, नीतिशास्त्रमें जे कह्युं दाखुं रे ॥ १५ ॥ प्री० ॥ एतां सूनां कदीय न मूके, जे माह्या ते नवि चूके रे ॥ प्री०॥ स्त्री धन पुत्र जे राज सुहर्मे, सूनां मूक्यां ए न रहे शर्म रे ॥ १६ ॥ प्री० ॥ ते माटे तुमें सांजलो स्वामी, तुम वीनवुं अंतरजामी रे ॥ प्री० ॥ वहुश्रुतनें करी वचनें वहीजें, डुर्जनथी दूर रहाजें रे ॥ १७ ॥ प्री० ॥ निज नारीने साथें लीजें, पीयु प्रेम सुधारस पीजें रे ॥ प्री० ॥ कामिनी जाणे कंथ विहूणी, जेम दीसे नांगी दूणी रे ॥१७॥ प्री० ॥ कंत विना नारी नवि शोने, पग पग लहे दोप ते गोने रे ॥ प्री० ॥ कंथ विना स्त्री दीन समान, जिहां जाय त्यां न लहे मान रे ॥ १ए ॥ प्री० ॥ पियु विण स्त्रीने मंदिर मांहे, घडी जंप वले नहिं क्यांहे रे ॥ प्री० ॥ पियु विण पहेरवा जे शणगारा, ते तो लागे जाणो अंगारा रे ॥ २० ॥ प्री० ॥ पियुडा विण ते सुखनी सेज, जाणे लागे कौवच रेज

रे ॥ प्री० ॥ केइ लख लाख मंदिर जन नरिया, केइ कोडि लखि परचरीया रे ॥ २१ ॥ प्री० ॥ पण ते प्रिय विण न लागे नीका, जिम घृत विण नोजन फीकां रे ॥ प्री० ॥ धन्य ते नारीनो अवतार, जस मंदिर रहे नरतार रे ॥ २२ ॥ प्री० ॥ शा अवगुण तुमें मुजमें दीठा, विण खुनें वहो थइ धीठा रे ॥ प्री० ॥ तुमथी तिर्यंच पंखी रूडां, दूरें न रहे स्त्रीयकी सूडा रे ॥ २३ ॥ प्री० ॥ चार पहोरनो रह्यो जो अंतर, तो फूरे खग निरंतर रे ॥ प्री० ॥ तो केम तुमें निसनेही थावो, निज स्त्री विण लंका जावो रे ॥ २४ ॥ प्री० ॥ के शुं माहरो मोह उतारी, नौतन कोइ नारी संजारी रे ॥ प्री० ॥ के शुं लंका मसलुं काढी, जाउ परणवा दूजी लाडी रे ॥ २५ ॥ प्री० ॥ तुम चित्तनी पियु कल नवि सूझे, ए तो केवली विण कुण बूझे रे ॥ प्री० ॥ तो हवे तुमने वेगला न मूकुं, निज स्वामीनी सेवा न चूकुं रे ॥ २६ ॥ प्री० ॥ जो मुजने साथें नवि तेडो, पण हुं किम मेलिश केडो रे ॥ प्री० ॥ कायानी गया पेरें वलगी, केम रही शकुं तुमथी अलगी रे ॥ २७ ॥ प्री० ॥ एणी पेरें नारी प्रेम विलुद्धी, करी विनति

पियुने सूधी रे ॥ प्री० ॥ बीजा उल्लासनी आठमी ढा लें, कही लब्धि रंग रसालें रे ॥ प्री० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल कहे नारीने, सांजल तुं गुण गेह॥ प्राणजीवन मुज तुं अछे, हुं केम देइश छेह ॥१॥ पाल व बांधी ताहरो, छमीन केम थवाय ॥ राखुं जो वहे रो तुजथकी, तो मुज प्रज्ञु छुहवाय ॥ २ ॥ ते किम हुं करुं सुंदरी, तुजथी दिल बदलाय ॥ देखी पेखी म क्खिका, जीवति केम गलाय ॥ ३ ॥ पण कोय दैवना योगथी, पूरव जव मेलाप ॥ अणचिंतित जो स्त्री मले, तो तस करवुं माफ ॥४॥ तुजथी उपर वट थइ, नवि नांगुं तुज आण ॥ छेह न दाखुं तुज जणी, जगे पच्छिम जाण ॥५॥ साथें तुजने तेडतां, नथी पूरव तुं गुज्ज॥ स्त्री ते पग बंधण अछे, पंथें हुं कहुं तुज्ज ॥६॥ मत जाणे तुं मन्नमें, प्रीतम देशे छेह ॥ एकज मास ने अंतरे, आविश हुं ससनेह ॥७॥ ते माटे थिर चित्त करी, रहेजो थइ सावधान ॥ दान सुपात्रें पोखजो, धर जो अरिहंत ध्यान ॥ ८ ॥ शीख जलामण इणि परें, वसंतसिरीने दीध ॥ लंका गढ जावा जणी, हरिबल चैत्र शुदि एकम दिनें, शुज मुहूरत लीध ॥ ९ ॥

कारी नृगुवार ॥ रमणीने राजी करी, हरिवल चा ले तिवार ॥ १० ॥ तव कुमरी कहे कंथने, वरसति आंसु धार ॥ पियुजी पूरण प्रीतडी, मत मूको विसार ॥ ११ ॥ मंदिर एकलां नवि गमे, सूतां सूनी सेज ॥ अवधी उपर आवशो, तो जाणशुं तुम हेज ॥ ॥ १२ ॥ प्राणवल्लभ नहि वीसरो, अध घडी आत मराम ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, करीने रूडां काम ॥ १३ ॥ प्रीतमजी तुमें सिद्ध करो, वड ज्युं विस्तर जोह ॥ चंवर केरां वृक्ष ज्युं, थडथी तुमें फलजोह ॥ १४ ॥ इम आशिष ते देइने, वोलाव्यो नरतार ॥ हरि वल पण शिख मागवा, पहोतो नृप दरबार ॥ १५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥ नृपने जइ प्रणिपत कीधी रे, सहु साथनी आगना लीधी रे ॥ हवे हरिवल लंकायें चाले रे, नृप जन बहु वोलावा हाले रे ॥ १ ॥ शकुने पण वांहिज दीधी रे, लीधी वाट ले कानी सीधी रे ॥ घणी नूयें वोलावी वलिया रे, नृप मंत्री दो हर्षे जलिया रे ॥ २ ॥ पय मंजारी देखी ज्युं हरखे रे, तिम महीपति मनमें वरखे रे ॥ जाणे नृ प चिंतव्युं थाशे रे, मुज वसंतसिरी घेर आशे रे ॥

३ ॥ जे कहेशो ते विध करशुं रे, मनवंछित सुख ते वरशुं रे ॥ एम चिंतवी नृप घरे आवे रे, निज मन शुं बुद्धि उपावे रे ॥ ४ ॥ मन गमता मीठा मेवा रे, जेह खाता लागे हेवा रे ॥ डाख रायण आंबा केलां रें, दीठां दाढ गले तिण वेला रे ॥५॥ वेअ बदाम नि मजां पिस्तां रे, मुख देतां न लागे सस्तां रे ॥ इत्यादिक मेवा वारु रे,मेले वसंतसिरीनी सारु रे ॥६॥ करे मिशरीना पकवान्नरे, वेग नोग लिये नगवान रे ॥ दूध पेंडाने घृत पूर रे, चढे खातां दांते शूर रे ॥ ७ ॥ सिंह केसरीया ने जलेबी रे,खातां नूर वधे ते सतेबी रे॥ एम सुखडी मेली ताजी रे, जिम वसंतसिरी होवे राजी रे ॥ ८ ॥ चुवा चंदन अरगजा ताजां रे, मुखमूलां अंतर जाजां रे ॥ केइ सुगंध ड्व्य अणायां रे, शतपाक ते तेल वणायां रे ॥ ए ॥ तिल मात्र जो वस्त्रें लगावे रे, चिहुं दिशि परिमल पसरावे रे ॥ जाणे सुगंधपुरी वसाई रे, नोगी जनने सुख दाई रें ॥ १० ॥ एणी पेरें सुगंधी चूवा रे, सींसा नरिया नव नवा जूवा रे ॥ नृप जाणे कुमरी रीझे रे, मुझ कारज शीघ्र ते सीझे रे ॥ ११ ॥ बहु नारे चीर अणावे रे, कस्तारी शालु मगावे रे ॥ कसबी मशरु एक

तारी रे, पंचरंगी मसजर नारी रे ॥ १२॥ हेम रयण में घाट सुघाट रे, मेले आनूषणना थाट रे ॥ रम णीना जे शृंगारा रे, नृप मेले ते श्रीकारा रे ॥ १३ ॥ एणी पेरें सामग्री मेली रे, नरी ठाबमें सघली नेली रे ॥ ते उपर ढंगाड ढांकी रे, करी मुड़ा को न जाय झांखी रे ॥ १४ ॥ हवे दासी जे चतुरा माही रे, कामी जनने मूके जे वाही रे ॥ तेहने तेडी नृप नां खे रे, निज चित्तनी वारता दाखे रे ॥ १५ ॥ तुमें जावो हरिबल गेहें रे, जिहां वसंतसिरी ठे नेहें रे ॥ जइने तुमें ठाव ए सूंपो रे, कहेजो नृपें मूकी ए चूपो रे ॥ १६ ॥ सुललित वचनें करी कहेजो रे, तेहनुं म न वश करी लेजो रे ॥ घणी शी रे नलामण दीजें रे, तस अमृतफलरस लीजें रे ॥ १७ ॥ ते वात वधाम णी वहेली रे, लेइ आवजो दीठतां पहेली रे ॥ एम शीख नलामण दीधी रे, दोय दासीने विदाय कीधी रे ॥ १८ ॥ दासी पण ठाव ने लेई रे, पहोती हरिब ल घेरें वेई रे ॥ जिहां बेठी हरिबल नारी रे, मूकी ठा व ते आगल सारी रे ॥ १९ ॥ कहे दासी मधुरी वाणी रे, नृप मूकी ए तुमने जाणी रे ॥ तुम उपर ठे घणो नेह रे, घणुं शुं कहियें गुणगेह रे ॥ २० ॥

जिण दिनथी तुम घेर आव्या रे, तिण दिनथी तुमें
दिल नाव्यां रे ॥ जलां जोजन जव तुमें प्रीस्यां रे,
तिण वेलाथी नृप दिल हींस्यां रे ॥ २१ ॥ देखी तु
मची सुघडाइ रे, नृप चाहे तुमने सदाइ रे ॥ ए कला
लच रहे तुम केरी रे, जिम लोजीने नाणा केरी रे ॥
२२ ॥ तुम विरहें करी नृप झूरे रे, राज काज ते मू
क्यां दूरें रे ॥ जेम योगी प्रजुने ध्यावे रे, तेम नृप
तुम नाम जपावे रे ॥ २३ ॥ इम राखे एकंगी तुम
शुं रे, मन मेल करो तुमें नृपशुं रे ॥ सरिखा सरि
खो मल्यो जोडो रे, नृपशुं तुमें तान म तोडो रे ॥
॥ २४ ॥ बाइ तुम मोहोटी पुण्याइ रे, नृपशुं थइ प्री
त सगाइ रे ॥ ए वात विधातायें मेली रे, जाणे पय
मां साकर जेली रे ॥ २५ ॥ तुमें जो कहो सारंगनय
णी रे, नृप आवे तुम घरे रयणी रे ॥ इण वातें ला
ज ठे तुमने रे, राजी करी बोलावो अमनें रे ॥ २६ ॥
एम दासीनी सांजली वाणी रे, तव कुमरी रोषें जरा
णी रे ॥ जिम लागे विंठीनो चटको रे, तिम कुमरी
ने लागे जटको रे ॥ २७ ॥ हवे सुणजो कुमरी व्या
पे रे, शेर सुखडी दासीने आपे रे ॥ एतो बीजा उ
ल्लासनी ढाल रे, लब्धें कही नवमी रसाल रे ॥ २८॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कोपें करी, दे दासीने मार ॥ निं दे तिम जीवित लगें, गडदा पाटु प्रहार ॥ १ ॥ ना ठी जीवित लेइने, चतुरा माही जेह ॥ नृप आगल आवी कहे, सघली मांमी तेह ॥ २ ॥ नासंत चू न्नारे थइ, केती कहुं माहाराज ॥ लहेणेथी देणे प डी, ए फल लह्युं तुम काज ॥ ३ ॥ स्वामी तुम प रसादथी, जडियो कुंदीपाक ॥ साजी हलदर सेवशुं, तव होशे तन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिबलनी प्रिया, दीठी वडी कुपात्र ॥ जाणे कौअचवेलडी, घर सर खी नही यात्र ॥ ५ ॥ ते माटे प्रभुजी सुणो, ए नावे तुम हाथ ॥ एहथी मनडुं वाल जो, कर जोडी कहुं नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांभलि नृप ठलकाय ॥ हा हा में ए शुं कर्युं, इम नृप धोखो क राय ॥ ७ ॥ शी मनमें धारी हती, देवें शी करी वा त ॥ नृप कन्या परसादथी, व्याघ्रे द्विज नक्षात ॥८॥ जाण्युं हतुं वश आवशे, हरिबल केरी नारि ॥ पण साहामुं इणि नारियें, वताखुं नृपवारि ॥ ए ॥ हाणि अने हांसी बहु, थइ नृप चिंते एम ॥ एह दुख के हने दाखवुं, होवें दाधो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति

फूरण करे, सांजलि दासी वेण ॥ ते दिन क्यारें आ वशो, देखशुं ते स्त्री नेण ॥ ११ ॥ वलि बीजी फरि मोकलुं, जेह विचक्षण होय ॥ हषद सरीखा मान वी, निजवी आणे सोय ॥ १२ ॥ तव पटराणी नि जप्रिया, प्रीतिमती गुण गेह ॥ तेहने तेडी नृप क हे, सांजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ कारज एक तुमशुं अछे,सुगुण लही कहुं तुज्ज ॥ हरिबल केरी जे प्रिया, मेलव आणी गुज्ज ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने, सांजलजो महिनाथ ॥ प्रीति वधारी पलकमें, लेइ सोंपुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एम कही ऊठी तुरत, वीडुं लवि तिण वार ॥ चाली हरिबल मंदिरें,राणी लेइ प रिवार ॥ १६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सूरती महिनानी देशी ॥ हवे कुमरी अमरी प रें, बेठी महोल मकार ॥ निज सखीयांशुं परवरी, करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें,वसंत सीरीयें तिवार ॥ १ ॥ कुमरीयें जाण्युं जे में हणी,दा सीने काढी रे सोथ ॥ क्रोध वशें जे में हणी, तेहनी आवी ए लोथ ॥ खीज्यो नृप तव जाणी रे, मूकी ए

राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लटपट मांझ्यो उपाय ॥ १ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, राणीने नीडी रे साथ ॥ अंगोअंग मलीने रे, चरणे नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीझवे, वसंतसिरी तिण ठोर ॥ ३ ॥ चंड्रवदनी दो बेठी रे, वातें एकण थान ॥ जाणे स्वर्गथी ऊतरी, रंजा उरवशी मान ॥ रूप अनूपम बेहुनां, हुं करुं केतां वखाण ॥ जाणे कंदर्प वाडीयें, प्रगटी पुण्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राजकुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे जोडी, मलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी शुन्न सुंदरी, कहे पटराणीने आज ॥ जलें रे पधाखां राणीजी, कोडी सुधाखां रे काज ॥५ ॥ तुम आवे अम मंदिर, पावन हुवो जी चंग ॥ अम सरिखुं जे काम हुवे, ते कहो जी सुरंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, ठे एक तुमशुं जी काम ॥ बहिन करीने थापवा, आवी हुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने रे आपे रे, नवलखो नवसरो हार ॥ वली बीजां बहु मूलां, नूषण आपें श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें मांझ्यो जी पास ॥ जो नवि राखुं तो आगल, होवे महो

टो विनाश ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने डुह्वतां, पूरवे नहि इण गाम ॥ ते जाणीने कुमरीयें, नृपण रा ख्यां जी ताम ॥ मुखनी मिगाशें करी कहे, कुमरी राणीने नेह ॥ बहेन करीने थापो,ते अमें जाण्युं जी तेह ॥ ८ ॥ ते मत जाणजो राणीजी, वसंतसिरी जे जोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवनें करी मो लाय ॥ जगमणी दिशि मूकी जो, ऊगे पछिम जाण ॥ ससिहर जो अग्नि करे, तो सती न चूके गाण ॥ए॥ पण शुं करीयें राणी जी, अंतें तुमशुंजी काम ॥ नृपने जो अमें डुह्वीयें, तो वली फेडेजी गाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी रा खीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांजलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं बे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप बे एक मासनुं, ते जव पूरूं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणी जी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम सत्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणी ए, सांजली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुज आव्या नो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही

कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अशन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं महोटे मंडाण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नाथजी वेग, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, जीवनें धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृप हरखंत ॥ भाग्य दिशा मुज जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृपना मनमें गंग, तरंग ज्युं उलट्यो रंग ॥ जाणे माणशुं मासनें, अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महोटां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवनें, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जावुं केतिक वार ॥ आजने काल करंतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ॥ आशायें जीव जीवाडवा, जीव रुले संसार ॥ पण उज्जल जोजन लगें, नर वहे आशा मजार ॥ १७ ॥ आशा अंबर जेवडी, कहे डुनियां सहु कोय ॥ आशायें ईमां अनन्त तणां,

ते पण वृक्ष होय ॥ तिम ए नरपति आशामें, झू
रे दिन ने रात ॥ वसंतसिरीनुं ध्यान, धरे ते ऊठी
प्रभात ॥ १८ ॥ आंगुलीना वेढा गणे, निशिदिन
मासना दीह ॥ आशा पासमें विचरे, नरपति जेह
अबीह ॥ प्रीतिमती पटराणीयें, प्रीति वधारी रे जे
ह ॥ नृपनी रे मननी डुविधा, दूर विदारी तेह ॥ १९॥
नृप राणी दो रंग.विनोदमें काढे रे दीह ॥ राजनां का
ज संभाले, मदनवेग ते सिंह ॥ वसंतसिरी पण पोता
ने, मंदिरे करे गहगाट ॥ निज सखीयोंशुं परवरी, नि
जपतिनी जोइ वाट ॥ २०॥ हवे सुणजो जविजण तु
मे, जे थई आगल वात ॥ हरिबल चाल्यो लंकायें,
ते सुणजो अवदात ॥ बीजा उल्लासनी पनरमी, पूरण
हुई ढाल ॥ ज्ञानतणे अनुसारें, लब्धि कहे
उजमाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृप आशा हेजथी.हरिबल चाल्यो लंक ॥ वि
कम पंथ ने आकरो. ते कापे निःशंक ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] घाटां नेह ॥ मानवनां नि
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेह ॥ २ ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]

वनलता, तिणमें वहे वजमाल ॥ ३ ॥ नाग सिंहने
चीतरा, अजगर महोटा व्याल ॥ अष्टापद वलि गज
घटा, देता मृग अरि फाल ॥ ४ ॥ भूत प्रेतने व्यंतरा,
झोटिंग मोहोटा खवीस ॥ हरिबलने ठलवा भणी,
पाडे महोटी चीस ॥ ५ ॥ पण ते मन बीये नही, ग
ती वज्रसमान ॥ लोह पंजर सम चालतो, धरतो
अरिहंत ध्यान ॥ ६ ॥ सूपडकन्ना हयमुहा, वलि
इकटंगा जेह ॥ काला हबसी कावरा, हरिबल निर
खे तेह ॥ ७ ॥ अजवगुल मेहरी घणी, निरखे ग
मो गाम ॥ झडपी ले नर पंथमें, सेवे तेहशुं काम
॥८॥ एहवि अटवि उजाडमां, हरिबल चाल्यो जाय॥
ध्यान धरे नवपद तणुं, जेहथी विघन पुलाय ॥ ९ ॥
देश नगर जोतो थको, पुर पाटण केइ गाम ॥ धरती
केइ उल्लंघतो, आव्यो दरिया ठाम ॥ १० ॥ जाणे
आषाढो गाजतो, गाजतो भाद्रव मास ॥ तिम गर्जा
रव जलनिधि, करतां दीठो तास ॥ ११ ॥ कालामंबर
उछली, जलना लोढ चलंत ॥ जाणे हिमाला टूक ज्युं,
जल कल्लोल करंत ॥ १२ ॥ जोजन एंसी सहस्सनो,
कोरण विशेषें जेण ॥ लवणनिधीनी वेल ते, सगरें
आणी तेण॥१३॥जल जेहवा मछा घणा, दीसे नव न

वरूप ॥ वाघ सिंह जलमाणसां, जलमें देखे सरूप ॥ १४ ॥ एहवो लवणसमुद्र ते, देखी कंपे काय ॥ हरिबल पगलुं जल नणी, देतां सग पच थाय॥१५॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ हरिबल मनमें चिंतवे रे,शो हवे करुं उपाय॥ सहस एंसी जोय ए जलनिधि रे,प्रघुल उंमो देखाय॥१॥ प्रजुजी ते केम मुऊथी तराय ॥ पगवट पण न जवाय॥प्र०॥ जुज बलें पण न तराय॥प्र०॥तो लंका केम हलाय रे॥प्र०॥ते०॥ एआंकणी॥ जलना लोढ वहेघणा रे,श्यामला जल ऊजास ॥ज्वाला वडवानल तणी रे, निकसे प्रबल आकाश ॥२॥प्र०॥ न वहे पंखी मानवी रे,न वहे तारु ऊहाज ॥ मारग को दीसे नहिं रे, नवि दीसे किहां पाज रे ॥३ ॥ प्र० ॥ शीतल पवन वहे घणो रे, जाणे शीतल हेम॥थरहर कंपे देहडी रे,खडहडे अस्थि सेम रे॥४॥प्र०॥ एहवो खारो सागरु रे, उबले जलें असमान ॥ ते देखी धीवर घणुं रे, मरप्यो गइ तस शान रे॥५॥प्र०॥ जो फरी पाबो घर जणी रे,जाउं तो न रहे मान ॥ वीडुं लवी हुं आवियो रे, कीधुं अजाणुं काम रे ॥ ६ ॥प्र० ॥ नागें ग्रही ज्युं उंदरी रे, मूके

तो अंध थाय॥नहुणथी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनाय रे॥७॥प्र०॥ वली चरकलीयें ग्रह्युं रे,मुखमां चणिवुं चोर॥ आघुं पाछुं न कतरे रे, करे पस्तावो जोर॥ ८॥प्र०॥ इम धीवर फूरे घणुं रे, सागर कांठे जना य॥ धीवरें जाएयुं आवी बन्यो रे, वाघ न दीनो न्याय रे॥ ए॥ प्र०॥ किहां गयो माहरो इण समे रे, प्राणवल्लन मुज इष्ट॥ समरयां सार करे घणुं रे, टाले सघलां रिष्ट रे॥१०॥ प्र०॥ इम चिंतवतां तत खिणें रे, आव्यो सागर देव॥ कहे सुर शी तुं चिंता करे रे, मूकुं लंका तुज हेव रे॥ ११॥ प्र०॥ शुं वठ तुजने इहां कणे रे, आववुं थयुं हो केम॥ सुर कहे कहो मुज मांमिने रे, जाएयुं जाये जेम रे॥१२॥प्र०॥ तव हरिबल कहे देवने रे, सांनलो तातजी मुज्ज॥ नृप हेतें बीडुं ग्रही रे, आव्यो कहुं हुं तुज्ज रे॥१३॥ प्र०॥ ते सांनली जलपति थयो रे, देव स्वरूपी अ श्व॥ हरिबल ते अश्वें चढी रे,जलधि तरी लह्यो विश्व रे॥१४॥ प्रजुजी नलें आव्या तुमें नाथ॥ सुर तरुनी ग्रही बाथ॥प्र०॥ मुज शरण थयो तुम हाथ॥प्र०॥तव हुं थयो महोटो सनाथ रे॥प्र०॥१५॥॥ए आंकणी॥लं का बागमें मूकीने रे,देव थयो परगट्ट॥ काम पडे तुं सं

नारजे रे, मुफने करी गहगट्ट रे॥ १६ ॥ ॥प्र०॥ एम कहीने सुर गयो रे, पहोतो ते निज गाम ॥ हरिबल लंका देखीने रे, मनमें लह्यो आराम रे ॥१७॥ प्र० ॥ तेजें फलामल फलकती रे,हेममय लंका पीठ॥ जेहवी जनमुखें सांजली रे, तेहवी नजरें दीठ रे ॥ १७ ॥ प्र० ॥ नंदन वन सम वाटिका रे, देखी थयो सुप्रस न्न ॥ परिमल पसस्यो चिहुं दिशें रे, कुसुम तणां जि हां वन्न रे ॥ १ए ॥प्र०॥ चंपा गुलाब ने केतकी रे, मोगरा मालती जेह ॥ जाणे सुरवाडी फुली रे, हरिबल निरखे तेह रे ॥ २०॥प्र० ॥ अंब कदंब ने सुरतरु रे, सुरलता मोहन वेल ॥ हेम रजतनी उषधी रे, पस री चिहुं दिशें रेल रे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ नागरवल्ली डा खना रे, मांमवा अति सोहंत ॥ केलि जंबेरी फालसां रे, दाडिम पक्क सोहंत रे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ जातीफ ल जावंतरी रे,तज ने तमाल ते पत्र ॥ एके तरुअरें नी पजे रें, चातुरजातक तत्र रे ॥ २३ ॥ प्र० ॥ देव कु सुम ने एलची रे, सुंदर केसर गोड ॥ निमजां पिस्तां चारोली रे, बेय बदाम अखोड रे ॥ २४ ॥ प्र० ॥ पूगी श्रीफल सेलडी रे, सीताफल सह तूत ॥ खार क रायण करमदां रे, लिंबू जांबू जूत रे ॥ २५ ॥ प्र०

इम अनेक ते जातिनी रे, वणसइ नार अढार ॥ जोगी जनने कारणे रे, प्रगट थई संसार रे ॥ २६ ॥ प्र०॥ वापी कूप सरोवरु रे, नरियां अमृततोय ॥ हंस चकोर ने सारसा रे, जलक्रीडा करे सोय रे ॥ २७॥ प्र०॥ इम हरिबल जोतो वहे रे, लंकाचन सुरसाल ॥ ल ब्धि बीजा उल्लासनी रे, पनणी इग्यारमी ढाल रे॥२८॥

॥ दोहा ॥

॥ लंकापरिसर वाटिका, सोहे अति रमणीक ॥ जाणे नंदनवन तणी, नगिनी प्रगटि नजीक ॥ १ ॥ कनक रयणमें ऊलकता, महोटा मेहेल अत्यंत ॥ खंभोखली जलशुं नरी, कारिंक तिम उछलंत ॥२॥ नर नारी विद्याधरी, किन्नर अप्सर बाल ॥ सरखे सरें टोलें मली, गावे गीत रसाल ॥ ३॥ मधुरी ध्वनि आ राममें, यइ रहि गामो गाम ॥ हरिबल ते श्रवणें सुणी, मगन थयो अनिराम ॥४॥ मानव नव नलें में लह्यो, नलें लह्यो गुरु उपदेश ॥ सागरदेव पसायथी, लंका दीठि विशेष ॥५॥ वन उपवन जोतो थको, हरिबल हर्ष कलोल ॥ आव्यो अतिही चूंपशुं, लंकागढनी पोल ॥ ६ ॥ साव सोवनमय डुर्ग ते, उपे मणिमय शीर्ष ॥ जाणे नूरमणी करे, उपे कंकण नीर्ष ॥ ७ ॥

एह्वो वप्र विराजतो, नगरी राखण चंग ॥ जाणे जंबु द्वीपनो, जगती कोट उत्तंग ॥ ८ ॥ इणिपरें डिंगनो डुर्ग ते, निरखी हरखित होय ॥ पेसारो पुरमें करे, शुन्न लगनें करि जोय ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ उढणीनी देशी ॥ सासु काग हे गहुं पीसाय, आपें न जाशो हेमाल ते सोय नारी न्नणे ॥ए देशी ॥ पेगो डिंगतणी वर पोले, निरखे रे हाट मंदिर बहु ॥ सहु कोय सुणो ॥ जाणे दक्षिण उत्तर उल, नुवनपति मंदिर सहु ॥१॥ स० ॥ ए तो साव सोवनमय थंन्न, कनक रयणमें मालीयां ॥ स० ॥ तेजें जाकजमाल, अचंन्न दीसे मोतिनां जालियां ॥ २ ॥ स० ॥ जाणे नन्नथी दिनकर सार, आवी घर घर प्रगटीया ॥स० ॥ नवि दीसे तिमिर लगार, उद्योत सघले उलटीया ॥ ३॥ स० ॥ एतो कोरणी धोरणी जोर, जाणे देवपुरी वसी ॥स०॥ सोहे राय विन्नीषण गोर, राज करे मन उल्लसी ॥४॥स०॥ वसे वसती वरण अढार, राक्षस रूपें मानवी ॥स०॥ एतो न गणे नक्ष अनक्ष, एवी लंका जाणवी ॥ ५ ॥ स० ॥ घोडा गज रथ ने सुख पाल, राज्य मारगमें वहे घणा ॥स०॥ देखे महोटा

नव नवा ख्याल, हास्य कुतूहल नही मणा ॥ ६ ॥ स०॥ जोतो इणि परें नगरी मझार, हरिबल आगल संचरे ॥ स० ॥ दीठुं तव एक तेज भंमार, सुंदर मंदिर भलि परें ॥ ७ ॥ स० ॥ सोहे सुंदर पोल प्रकार, रमणिक हटें देखे सही ॥ स० ॥ पण देखे ते शून्य आगार, माणस को दीसे नही ॥ ८ ॥ स० ॥ ए तो तव तिहां अचरिज देखि, पेसोहे मंदिर पोलमें ॥ स० ॥ नखां निरखे रयण विशेष, ऊरा ऊरी ऊलमें ॥ ९ ॥ स० ॥ इम जोतो सातमी भूमि, हरिबल चढीयो चूपशुं ॥ स० ॥ जाणे स्वर्गविमाननी भूमि, रचना ते दीठी रूपशुं ॥ १० ॥ ॥ स० ॥ तिहां निरखे अचरिज एक, हिंमोला खाट सोहामणी ॥ स० ॥ तेह उपर सूती विवेक, सुंदर स्त्री रलियामणी ॥ ११ ॥ स० ॥ जाणे देही कुंकुम वर्ण, अप्सर सम करी उंपती ॥ स० ॥ पण दीसे ते मृतक समान, चेतन रहित ते झोनती ॥ १२ ॥ स० ॥ चिंते हरिबल निरखि रे तास, विस्मय पाम्यो मनमें ॥ स० ॥ एसो दीसे देव अभ्यास, सास नही ए तनमें ॥ १३ ॥ स० ॥ इम चिंतवी धीवर धिंग, अरहुं परहुं विलोकतां ॥ स० ॥ दीठी तुंबडी जल भरी चंग, खाट तले लही टोकतां ॥ १४ ॥ स० ॥ तिणें तुंबीनुं

जल लेय, ठांट्युं स्त्रीतन ऊपरें ॥ स०॥ ऊठी ततखि
ए लज्जा धरेय, हिंमोला खाटथी सूपरें ॥१५॥स०॥
मन्त्री चिंतवे चित्त मझार, ए शुं कौतुक नीपनुं ॥स०॥
ए तो थइ नवजोबन नारि, मनोहर ज्युं तेज दीपनुं
॥ १६ ॥ स० ॥ दीसे रंजा उर्वशी रूप, कामिनी
काम जगावती ॥ स० ॥ मोहे सुर नर किन्नर
नूप, कामी जन मन जावती ॥ १७ ॥ स० ॥ इम
अचिरज लहिने तास, पूछे हरिबल उल्लसी ॥ स०॥
किम रहे तुं शून्य आवास, एकली शबपणें वसी ॥
॥ १८ ॥ स० ॥ किहां गया तुझ सयण संबंध, मात
पितादिक ताहरां ॥ स० ॥ तव कहे अबला प्रबंध,
सांजलो पंथी माहरा ॥ १९ ॥ स० ॥ जलें आव्या
तुम इहां स्वामि, उपगारी दीसो जला ॥ सोय नारी
जणे ॥ बेसो आसन्न शुज्ञ ठाम, कहुं तुमने सघली कला
॥२०॥सो०॥ इहां राय बिजीषण सार, राज करे लंका
धणी ॥सो०॥ वाडी छे तस वृद्ध श्रीकार, वल्लन्न ते नृप
ने घणी ॥२१॥सो०॥ तेह वाडीनो ए रखवाल, जीम
नामें आरामी अछे ॥ सो० ॥ हुं छुं तेहनी पुत्री जी
वाल, कुसुमसिरी मुझ नाम छे ॥ २२ ॥ सो०॥ जव हुं
थई जोबनवेश, तव मुझ जनक चिंता करे ॥ सो०॥

कुण वरशे ए पुरुष विशेष, अहोनिशि इम चिंता धरे ॥ ४३ ॥ सो० ॥ तव तिहां एक जोषी जाण, फिरतो ते आव्यो मंदिरें ॥ सो० ॥ पूछे तेहने पिता गुण खाण, तेडी जई घर अंदरें ॥ २४ ॥ सो० ॥ जुर्ज जोषी ज्योतिष जोय, कहो मुजने तुमें डुःख खसे ॥ सो० ॥ जिम मुज मन वंछित होय, मुज पुत्री वर कुण हशे ॥ २५ ॥ सो० ॥ तव जोषी कहे धनपाल, सांजलो जोषयी हुं कहुं ॥सो०॥ तुम पुत्रीनो तो मही पाल, पति होशे गुणवंत लहुं ॥ २६ ॥ सो० ॥ तव हरख्यो पिता मनमांहे, सांजली जोषी वयणडां ॥ सो० ॥ दीधुं जोषीने दान उछाह, मूढ नरी शुन रयणडां ॥ २७ ॥ सो० ॥ इम कही गयो जोषी थान, वंछित दान ते लेईने ॥ सो० ॥ चिंते जनक ए पुत्री निधान, शुं करुं परने देईने ॥ २८ ॥ सो० ॥ राखुं मुज घर पुत्री रतन्न, परणी हुं थाउं नरपती ॥सो०॥ लोनी लंपट थइ एक मन्न, वात करी इण डुरमती ॥ २९ ॥ सो० ॥ मुज जनकीयें जाणी वात, फिट फिट कह्यो मुज तातने ॥ सो० ॥ लागी वज्र समान नो घात, जाल चढी कमजातने ॥ ३० ॥ सो० ॥ पंथी सांजलो मोहनी जाल, महोटी ए निपनी कार

मी ॥ सो० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, लब्धियें जांखी बारमी ॥ २१ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि कहुं पंथी सांजलो, महारा तातनां चिन्ह॥ न्याय करे जइ नृपकने, माली नीम अदीन ॥ १ ॥ कहो स्वामी जे करपणी, मसकत करी निपाय ॥ ते कण फलने करपणी, जोगवे के न जोगाय ॥ २ ॥ तव नरपति कहे मालिने, जे करे मसकत अंग ॥ ते कण फल सुखें वावरे, न्यायी थइ ते अनंग ॥३॥ ए हवो न्याय उरावियो, मालियें परपद मांह ॥ पंचनी साखें ए न्यायनुं, लिखित कयुं ते उठाह ॥ ४ ॥ तेह लिखत लेई करी,आव्यो जनक ते गेह ॥ वात लही मुफ जनकियें, मौन धरी रहि तेह ॥ ५ ॥ तव मुफ जनक संबंधियें, जाण्यो महोटो अन्याय ॥ गृह मूकी तव निकलियां, वलियां बीजे जाय ॥ ६ ॥ तिण दिनथी गृह शून्यमें, मुफने राखे तात ॥ मृतकसमान करी वहे, मंत्रबलें ते प्रजात ॥ ७ ॥ सारो दिन वाडियें रहे, करे ते वननुं काज ॥ नृपने फल फुल देइने, आवे मुफकनें सांफ ॥ ८ ॥ तुंबी जल लेई करी,

ळांटे मुक तनु जाम ॥ चेतन लहि जाणुं तदा, करे मुक जनक ए काम ॥ ए ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ मुजरो ल्योने हे जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजलो पंथी माहरा तातनी, कहुं करणी वली एक॥ पूर्वे पण एक उतुं देइनें, कीधो न्याय विवेक ॥ १ ॥ श्रेयांसनाथ इग्यारमा, तेहने जे वारे कहाय ॥ पर जापति नामें राजवी, मिणवा राणी सुहाय ॥ २ ॥ सां० ॥ तेहनी कूखें पुत्री उपनी, पदमिनी रूप अ त्यंत ॥ अनुक्रमें थइ नव यौवना, कामिनी काम ल हंत ॥ ३ ॥ सां० ॥ ते परजापति पुत्रीनुं, दीठुं रूप सरूप ॥ जाण्युं ए फल बीजे जायशे, जोगवशे अन्य नूप ॥ ४ ॥ सां० ॥ तो ए पुत्री माहरे राखवी, नहि देवुं बीजे ए क्यांह ॥ पंचमें न्याय करावीने, परण्यो पुत्री उछाह ॥ ५ ॥ सां० ॥ पंचनी साखें ए सही करुं, मेली परखदा सार ॥ जिम मुक लोकमें नवि हु वे, निंदा विकथा लगार ॥ ६ ॥ सां० ॥ इम जाणी नृप तिणि वेलमां, मेलवी पंच समक्ष ॥ पूछे परजा पति परजने, करो न्याय विचक्ष ॥ ७ ॥ सां० ॥ जे बीज वावे वाडी खेतमें, ते ऋतुसमे फल देय ॥

ते फलने मसकतीनो धणी, जोग लीये के नवि लेय ॥ ८ ॥ सां० ॥ तव ते बोली परजा एकमतें, सांजलो नाथजी एम ॥ जे फल वावे ते फल बीजने, जोग ते नवि लीए केम?॥ ए ॥ सां० ॥ पंच मलीने जे करी थापना, ते उथापी न जाय ॥ स्थिति छे अनादि ए कालनी, एह्वो ते न्याय वराय ॥ १० ॥ सां० ॥ तव परजापति हरखिने, लीधुं पुत्री लगन्न ॥ परण्यो ते निज पुत्रीने, थइ रह्यो तेशुं मगन्न ॥ ११ ॥ सां० ॥ तेह्नी कूखें जी ऊपनो, हरि ते नामें त्रिपृष्ठ ॥ श्रीजिन वीरनो जीव ते, जाणे सयल ते शिष्ट ॥ १२ ॥सां०॥ त्रेशठ शिलाका चरित्रमें, छे तेह्नो अधिकार ॥ ते न्यायधारी लंकापति, कने जइ चढ्यो दरबार ॥ १३ ॥ सां० ॥ ए करणी माह्रारा तातनी, में कही पंथिजी तुम्म ॥ लालची लोभी जे लंपटी, न वले ते कदि जुम्म ॥१४॥सां० ॥ माह्रो तात ते लालची, अहनिश राखे निराश॥दुःखदायी दुःख देयतां, तेह्ने थया खट मास ॥१५॥सां०॥ कहुं ए पंथी हुं ह्वे केह्ने, नाखुं मोह्रोटो निशास ॥ आजथी बीजे मासडे, वरशे मुजने व ह्नास ॥ १६ ॥ सां०॥ माह्रा मननी पंथी में कही, सवली मांभीने गुज्झ ॥ जबें तुमें आव्याजी मंदिरें, तु

ख शाता थइ मुज ॥ १७॥ सांजलो पंथी जीवन मा
हरा ॥ए आंकणी॥ कुसुमसिरी कहे सांजलो,पंथी क
रुणा कृपाल॥ जाग्य बली में तुम्ह उंलख्या,साहसिक
महोटा मयाल ॥१८॥सां० ॥ सघली वातें पूरा जा
णीने, में तुम्ह झाल्यो जी हाथ ॥ डुःखनिधि पार उ
तारवा, जलें आव्या तुम्हें नाथ ॥ १ए ॥ सां० ॥
मन ललचाणुं तुम देखतां, जिम मन केतकी जंग ॥
बे कर जोडीने वीनवुं, मुजने परणो सुरंग ॥२०॥सां०
॥ सूरज चंद साखें करी,परणी पूरो जी लाड ॥ नि
ज नारीने सुख देयतां, शो ते चढावुं जी पाड ॥२१॥
सां० ॥ माहरे वखतें तुम्हें आणीया, ताणी पुण्य
विशेष ॥ ते हुं टाली ते किम टलुं, लखीया पानें जे
लेख ॥ २२ ॥ सां० ॥ इणि परें वयण वेधाखुयें, कु
मरीयें नाख्यां जे बाण ॥ वेधक वाणें ते वेधियो, हरि
बल चतुर सुजाण ॥ २३ ॥ सां० ॥ परण्यो तेह कु
सुमसिरी,हरिबल पाम्यो ते चेन ॥ जाणे परण्यो वीजी
अप्सरा, वसंतसिरीनी ते वेन ॥ २४ ॥ सां० ॥ लंका
धणीने तेडवा, मधी वीडुं ठवेय ॥ गडदो ते गुण आ
वियो, लोक वखाणो कहेय ॥ २५ ॥ सां० ॥ माली
जीमो जोतो रह्यो, परण्यो पुत्रीने कोय ॥ जुतर्खां जो

षी कोली जम्या,ए उखाणो ते होय ॥ २६ ॥ सां० ॥ सिंहनो नक्र ते जंबुकें,कहो ते केम कराय॥कलिंगमहो टुं कीडी मुखें, कहो ते केम समाय ॥ २७ ॥सां० ॥ हरिबल केरा जे नाग्यमें, कुसुमसिरी लखी जेह ॥ मा लीने किम मोलवे, लख्या विधातायें लेह ॥ २८ ॥ सा० ॥ हरिबल पुण्यना जोगथी, पाम्यो मंगलमाल ॥ लब्धि बीजा उल्लासनी, पनणी तेरमी ढाल ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥हवे कुमरी कहे कंतने,निसुणो प्राणाधार ॥ आ पण वहियें बे जणां, जिहां ठे निज आगार ॥ १ ॥ सांझें माली आवशे, आखें पडशे लूण ॥ आपण बे हुने दूवशे, तो ते राखशे कूण ॥ २ ॥ तव हरिबल कहे नारिनें, सांनल प्यारी मुज ॥ लंकापतिने तेडवा, आव्यो हुं कहुं तुज ॥ ३ ॥ विशाला पुरनो धणी,मद नवेग ते नाम ॥ अंगजने परणावबा,मेले नृप अनि राम ॥४॥ वैशाखे सितपंचमी, लीधां लगनज जेह ॥ सघला देशना राजवी, तिण दिन मिलशे तेह ॥ ५ ॥ तव वीशालानो धणी,बोल्यो सना समक्ष ॥ को ठे लं का रायने, तेडी आवे विचक्ष ॥ ६ ॥ तव तिहां को इ न बोलियो, बीडुं न ठवे कोय ॥ तव तुज नाग्यव

लें करी, बीडुं में ग्रह्युं सोय ॥ ७ ॥ ते नृप आणा लेइने, हुं आव्यो छुं आंहि ॥ लंकापति तेडया विना, किम जवराए त्यांहि ॥ ८ ॥ कुसुमसिरी वलतुं कहे, सांभलो महारी वात ॥ लंकापति मदिरा वशें, ऊंघमें केइ युग जात ॥ ए ॥ ते सांधो किम वाऊशो, आप णे जावुं गेह ॥ लंकापति कने जायवुं, कविण कह्युं तुम्हें एह ॥ १० ॥ जो प्रीतम मुझने कहो, जावुं वी भीषण पास ॥ देवनमी एक खड्ग छे, लावुं ते जइ तास॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ तव हरिवल कहे ना रीने रे, जाउं उतावलां त्यांहि ॥ मोमन प्यारी ॥ ला वजो तुमें संभारीने रे, खड्ग जे चंद्रहास आंहि ॥ ॥मो०॥१॥ लावो लावो रे सुगुण जई लावो,तुमें ढील म करशो क्यांहि ॥मो०॥ए आंकणी॥ वैशाख शुदि दि न पंचमी रे,लगन उपर जवराय ॥मो०॥ तो गणे मु झने साचमें रे, मदनवेग ते राय ॥ २ ॥ मो० ॥ ते सहिनाणी खड्गनी रे, लंकाधणीनी जेह ॥ मो० ॥ लाज वधे निज वर्गनी रे, ते विधें लावजो तेह ॥ ॥ ३ ॥ मो० ॥ पण शिर बदलामी चढे रे, जगमें हां सुं होय ॥ मो० ॥ लेहणेनी देणे पडे रे, ते मत कर

जो कोय ॥ ४ ॥ मो० ॥ करतां होय ते कीजियें रे, अवर न कीजें कग्ग ॥ मो० ॥ मुंकी रहे सेवालमां रे, ऊंचा रह्या दो पग्ग ॥ ५ ॥ मो०॥ ते मत करजो कामिनी रे, सांजलि ते दृष्टांत ॥ मो० ॥ इम शीखाम ण स्वामीनी रे, धारी ते चितमें खांत ॥ ६ ॥ मो०॥ हवे कुमरी गई तिहां कणे रे, राय बिजीषण ज्यांहि ॥ मो० ॥ नर निद्रामें सूतो लह्यो रे, मदिरा छाकनी मांहि ॥ ७ ॥ मो० ॥ कल विकल करीने ग्रह्युं रे, खड्ग जे छे चंद्रहास ॥ मो० ॥ जात वलत कोणे नवि लह्युं रे, आवी प्रीतम पास ॥ ८ ॥ मो० ॥ ल्यो स्वामी आ खड्गनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥ मो० ॥ देवनमी खड्ग स्वर्गनी रे, उजाले मही विशे ह ॥ ए ॥ मो० ॥ हवे सामग्री दंपती रे, मेलवे जावा गेह ॥ मो० ॥ सार रयण ते सोंपती रे, पिशुने जे कोश नरेय ॥ १० ॥ मो० ॥ तुंबी जलतायें ग्रही रे, दंपती चाल्यां दोय ॥ मो० ॥ आव्यां जे लंका वही रे, लहे मनोवंछित सोय ॥ ११ ॥ मो० ॥ समस्यो सागर देवता रे, मही थई जलमाल ॥ मो० ॥ आ व्यो सुर पण देवता रे, करुणावंत कृपाल ॥ १२ ॥ मो० ॥ किहां मूकुं हवे तुकाने रे, सुर बोल्यो ततका

[illegible] ॥ मो० ॥ मूको स्वामी मुझने रे, निज नगरी वि
[illegible] ॥ १३ ॥ मो० ॥ [illegible] चढावी दो जणा रे, मू
[illegible] ॥ मो० ॥ चिंतव्युं होशे तुम तणुं
रे, [illegible] टीक ॥ १४ ॥ मो० ॥ एम क
[illegible] गयां रे, [illegible] जे निज धाम ॥ मो० ॥ मन
[illegible] रे, [illegible] निधान ॥ १५ ॥
मो० ॥ [illegible] जे [illegible] रे, तेहमें उतारो की
[illegible] ॥ मो० ॥ [illegible] रे, जाणे मनो
[illegible] ॥ १६ ॥ मो० ॥ [illegible] माली संध्या समे रे,
[illegible] ॥ मो० ॥ [illegible] स्वामी दृष्टि
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] गई प्यारी,
[illegible] जोतो [illegible] रे
[illegible] ॥ वि० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ वि० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ वि० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भूमि पडया दोय हाथ ॥ २१ ॥ कि० ॥ जोतो रोतो ते वल्यो रे, आव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विर हें ते चव्यो रे, शुं हवे करुं ते पेर ॥ २२ ॥ कि० ॥ पुत्री तुंबी गत थइ रे, जाणे गइ रण खेत ॥ रंभानी रंभा गई रे, टपसुं पण गइ लेत ॥ २३ ॥ कि० ॥ रां क तणे घरे सुरमणी रे, रहे कहो केती वार ॥ कि०॥ पूरव जवनी वेरणी रे, दे गइ महोटो खार ॥ २४ ॥ कि० ॥ पुत्री परणें जाणतो रे, पामशुं महोटुं राज ॥ कि० ॥ होंश घणी मन आणतो रे, माणशुं पुत्री रा ज ॥ २५ ॥ कि० ॥ तेहमें एके न संपजी रे, फोक फजेती कीध ॥ कि० ॥ दैवना मनमां शी जजी रे, एको वात न सीध ॥ २६ ॥ कि० ॥ पण पुत्री पर घरें जई रे, वसति जाणे संसार ॥ कि० ॥ एक एकने देइ वरे रे, पुत्री पर घर वार ॥ कि० ॥ २७ ॥ ते में खोटी आदरी रे, लोकें खोयो कार ॥ कि० ॥ तो किम आवे पाधरी रे, लोप्यो म्हें व्यवहार ॥ २८ ॥ मो० ॥ नीतिनी चाल में नवि गणी रे, कीधो अनीति विचार ॥ मो० ॥ तो किम रहे ए पदमणी रे, रांक घरे मुज सार ॥ २९ ॥ मो० ॥ जेहनो संबंध ते ले गयो रे, छाना करीने लोच ॥ मो०॥ जे थावुं हतुं ते थयुं रे,

शो हवे करवो शोच ॥ ३० ॥ मो० ॥ मालीयें एम मन वालीयुं रे, नावीनो मह्यो पत्र ॥ मो० ॥ आतम कुल संभालीयुं रे, काढी नाख्युं शस्त्र ॥ ३१ ॥ मो० ॥ सगां संबंधि नारीने रे, रीश उतारी तास ॥ मो० ॥ मालियें वात विसारीने रे, तेडी आव्यो आवास ॥ ३२ ॥ मो० ॥ सघला वियोग ते भांगियां रे, उपन्यो रंग रसाल ॥ मो० ॥ पूरव सुकृत जागीयां रे, भांगीया दुःख जंजाल ॥ ३३ ॥ मो० ॥ हवे हरिबलनी जे थइ रे, सांभलो पुण्यविशाल ॥ मो० ॥ त्रीजां उल्लासनी ए कही रे, लब्धें चौदमी ढाल ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल रजनीसमे, वाडियें कीधुं ठाम ॥ कुसुमसिरी मूकी तिहां, पहोतो ते निजधाम ॥ १ ॥ वसंतसिरी पेहेली प्रिया, जोउं तेहनुं चरित्र ॥ मुफ ऊपर पण केहवुं, राखे मनह पवित्र ॥ २ ॥ इम जाणी निज मंदिरें, आव्यो रजनी मध्य ॥ तस्करनी परें सांभले, देई कान ते शुद्ध ॥ ३ ॥ तिण अवसर जे विरहिणी, वसंतसिरी ते बाल ॥ पीयु नाव्यो मासंतरें, तेहनी थइ चकचाल ॥ ४ ॥ तव एक पंखी सूवटो, पाल्यो छे घरमांहि ॥ तस आगल कहे विरह

णी, वसंतसिरी जे उवांहि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुफ पीयु डो, गयो लंका शुन्न काज ॥ अवधि कही एक मास नी,ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केशरन्नख पिया कह चले, वांम्ह गयंदन्नखमांहि ॥ जलन्नख रयण पोका रियो, मो न्नख न्नावत नांहि ॥ हजीअ लगण आव्यो नही, नाव्यो को संदेश ॥ नाह निठुर मेहेली गयो, मुफने बाले वेश ॥ ७ ॥ तो दीहा किम निर्गमुं, किम करि राखुं शील ॥ मदनवेग ते न्नूधणी, केडें पडियो कुशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो माहरुं,में पण राख्युं एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमति चूकशे ते ॥ शुकवाक्यं ॥ दधिसुता सुत तासरिपु, ता त्रिय वा हनाहार ॥ सो सुंदर तुफमें नहिं, कीधो कौन वि चार ॥ ए ॥ ते माटे तुं सूडला, जा मुफ प्रीतम पा स ॥ संदेशो मुफ घरतणो,जइने कहेजे तास ॥ १०॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ विंफाजीनी ए देशी ॥ सुडाजी हो अमीरस पा उ तुफनें रे ॥ सु० ॥ चखवुं दाडिम झाख ॥ सूडा सयण वारु ॥ ए आंकणी ॥ सुडा० ॥ चांच न्नरावुं चूरमे रे ॥ सु० ॥ देउं वली आंबा साख ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो मुफ दाखवी रे ॥ सु० ॥ मेल

व तुं मुज जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइश हुं गुण ताह
रा रे ॥ सु० ॥ जीवित सुधी सदीव ॥ सु० ॥ २ ॥
॥ सु० ॥ दूधें नरीश तुज पेटने रे ॥ सु० ॥ देइश क
हीश ते लांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं बोलुं ते सही
रे ॥ सु० ॥ मानजे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु०॥
हुं कर जोडी वीनवुं रे ॥ सु० ॥ सांजल माहरी
वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सघला पंखीमें कही रे ॥ सु०॥
उत्तम ताहरी जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहु पंखी
शिरसेहरो रे ॥ सु० ॥ तुं ले चतुर सुजाण ॥ सु० ॥
॥ सु० ॥ रूपें तुं रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ता
हरी वाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ लीली ताहरी पांख
डी रे ॥ सु० ॥ चांच राती तुज चंग ॥ सु० ॥ सु० ॥
रूडी ताहरी आंखडी रे ॥ सु० ॥ राती केशू रंग ॥
॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढावुं चांचडी रे ॥ सु०॥
दूधें पखालुं पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार ठवुं गले मो
तीनो रे ॥ सु० ॥ लाख टकानो अटंक ॥ सु०॥ ७ ॥
॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥ दया
धरे मनमांहे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुज नाहने
रे ॥ सु० ॥ तुं जइ कहेजे उगांहे ॥ सु०॥ ८ ॥ सु० ॥
मानिश तुज उपगारडो रे ॥ सु० ॥ याइश नही गुण

चोर ॥ सु० ॥ सु० ॥ कीधो गुण जाणे नही रे ॥
॥ सु० ॥ माणस नही ते ढोर ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥
ऊडीने तुं पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मत करजे ढील ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुझ संदेशडो रे ॥ सु० ॥
जिहां होये नाह रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ अब
ला तुझ घर एकली रे ॥ सु० ॥ छे विरहिणीने वेश
॥ सु० ॥ सु० ॥ झुरि झूरि झंखर थइ रे ॥ सु० ॥ थइ
नारी नरवेश ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ प्रीतमना विर
हाथकी रें ॥ सु० ॥ मुउ न दीसे कोय ॥ सु० ॥ सु०॥
पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु० ॥ दिन दिन पीलां
होय ॥ सु० ॥ १२ ॥सु० ॥ पिउ विरहें करि नारियें रे
॥ सु० ॥ तजियां तेल तंबोल ॥ सु० ॥ सु० ॥ खाणां
पीणां पहेरणां रे ॥ सु० ॥ तजीयां सखीशुं टकोल
॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ पिउ विण शणगार पहेरतां
रे ॥ सु० ॥ लागे अंगारा समान ॥ सु० ॥ सु० ॥ चं
दन चूवा अंगीठियो रे ॥ सु० ॥ नागिणी नागर पान
॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥ पिउ विरहें घडी मासडो रे ॥
॥ सु० ॥ मास ते वरसज होय ॥ सु० ॥ सु० ॥ खिण
घरमें खिण आंगणें रे ॥ सु० ॥ पिउ विण ए गति
जोय ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ नयणें नावे निंदडी रे

॥ सु०॥ नावे न अन्न ने पान ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाह
विना घेली नणुं रे ॥ सु० ॥ कहीयें केतु सयाण ॥
॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ पूरव पापना योगथी रे ॥
॥ सु० ॥ पामी स्त्री जमवार ॥ सु० ॥ सु० ॥ नरजो
वन पियु घर नही रे ॥ सु० ॥ तस एळें गयो अव
तार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए मंदिर ए मालियां रे
॥ सु० ॥ पियु विना शून्य आगार ॥ सु० ॥ सु० ॥
रस कस खारां झेरशां रे ॥ सु० ॥ लागे ते चित्त
मझार ॥ सु० ॥ १८ ॥सु०॥ यौवन करवत धार ज्युं
रे ॥ सु० ॥ विरहिणी नारीने रोप ॥ सु० ॥ सु० ॥
नाहविहूणी कामिनी रे ॥ सु० ॥ पग पग पामे ते
दोप ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ कालजे करवत मेली गयो
रे ॥ सु० ॥ निशिदिन रही ते धुखाय ॥ सु० ॥ सु० ॥
नेह सुधारस सिंचिने रे ॥ सु० ॥ उलवे पियु घर आ
य ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ ते दिन क्यारें देखशुं रे ॥
॥ सु० ॥ करस्यां मननी रे वात ॥ सु०॥ सु०॥ प्राण
जीवन मुज देखीने रे ॥ सु०॥ कीजें शीतल गात्र ॥
॥ सु०॥ २१ ॥ सु०॥ दिनकर पहेलां ऊगते रे ॥ सु०॥
जो प्रीतम घरे आय ॥ सु० ॥ सु० ॥ तो माणसनी
उलमें रे ॥ सु० ॥ जीववुं ते लुगताय ॥सु० ॥ २२ ॥

॥सु०॥ जो कदि नाव्यो ऊगते रे॥ सु० ॥ तो जइ गि
रि ऊंपाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पेट कटारी खाइ मरुं रे ॥
॥ सु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ सु० ॥ २३ ॥
॥ सु० ॥ कंत विना शुं जीववुं रे ॥ सु० ॥ कंत विना
किशुं हेज ॥ सु० ॥ सु० ॥ कंत विना शुं मालवुं रे ॥
॥ सु० ॥ कंत विना शी सेज ॥ सु० ॥ २४ ॥ सु० ॥
डुःख नर ठाती फाटती रे ॥सु० ॥ रही नथी शकती
गेह ॥ सु० ॥ सु० ॥ विरहानलनी बाफमां रे ॥ सु०॥
दाफी रही बुं तेह ॥ सु० ॥ २५ ॥ सु० ॥ विरहिणी
एम विलपे घणुं रे ॥ सु० ॥ वसंतसिरी ससनेह ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ नयणें आंसू रेडती रे ॥ सु० ॥ जा
णे ज्युं नाड्व मेह ॥ सु० ॥ २६ ॥ सु० ॥ वसंतसि
री एम पावे रे ॥ सु० ॥ शुकने संदेशा जिवार ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ नारीनुं डुःख सांनली रे ॥ सु० ॥
बोल्यो मह्ली तिवार ॥ सु० ॥ २७ ॥ सु० ॥ खोलो
कमाड सहेलीयां रे ॥ सु० ॥ मूकी मननी राड ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ उलखियो पति आवियो रे ॥ सु० ॥
हर्षे उघाड्यां कमाड ॥ सु० ॥ २८ ॥ सु० ॥ निजप
तिनुं मुख देखतां रे ॥ सु० ॥ कामिनि हर्ष नराय ॥
॥ सु० ॥ सु० ॥ हर्ष विनोद जे उपनो रे ॥ सु० ॥ पु

तकें लखियो न जाय ॥ सु० ॥ २९ ॥ सु० ॥ वेधकने मन वल्लही रे ॥ सु० ॥ ए पंचदशमी ढाल ॥ सु० ॥ ॥ सु० ॥ लब्धें वीजा उल्लासनी रे ॥ सु० ॥ कही शुन्न रंग रसाल ॥ सु० ॥ ३० ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रीतम घरे आवतां,वाध्यो नवलो नेह ॥ मुह माग्या पासा ढल्या, अमियें वूठा मेह ॥ १ ॥ नव पल्लव थइ अंगना, वसंतसिरी गुणगेह ॥ प्रेम सरोवर फीलतां, वानो वधियो देह ॥ २ ॥ दंपति दो रंगें मल्यां, सुख नर कीधी वात ॥ डुःख दोहग दूरें गयां, प्रगटी ते सुख शात ॥ ३ ॥ कहे नारी पिनु सांजलो, धुरथी कहुं ससनेह ॥ तुमें चाल्या लंकाजणी, पाठ ल वीती जेह ॥ ४ ॥ में तुमने पहेलां कही, ते सं जारो नाथ ॥ नृपने मंदिर दाखव्युं, दीपक लेइ निज हाथ ॥ ५ ॥ ते वात आवी आगलें, जव तुमें चा ल्या लंक ॥ तव नृप मुऊ केडें पडयो, जाणीने निःशं क ॥ ६ ॥ मेहेमंतो कवट थइ, गज शिर नाखे धूल ॥ तिम नृप दासी मोकली, करवा मुऊ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ एतो नयडीरो मोती अजब बन्यो ॥ ए देशी ॥

एतो दासी मुझ कने मोकली, एतो लेइ नूखण साच॥ साहेब मोरा हे॥एतो चूवा रे चंदन अरगजा,ए तो सीं सा नरिया काच॥ सा० ॥ १ ॥ सांनलो प्रीतम मा हरा॥ एतो देवा मुझने लांच ॥सा०॥ए आंकणी॥ ॥ एतो मीठी साकर सूखडी, एतो मीठा मेवा झाख ॥ सा० ॥ एतो ठाब नरी वली मोकली, एतो मीठी आंबा साख ॥सा०॥२॥सां०॥ एतो जरतारी साळू नला, एतो आप्यां नव नवां चीर ॥ सा० ॥ जाणे वाघा सुरनारी तणा, एतो सोहे तेजमें हीर ॥सा०॥ ॥ ३ ॥ सां० ॥ इत्यादिक लेइ नेटणां, एतो मूक्यां चेटी साथ ॥ सा० ॥ कहे चेटी मुझ आवीने, तुम नेट करे नूनाथ ॥सा०॥४॥सां०॥ एतो दासी कहे वली मुझने, तुमें सांनलो हरिवल्ल नार ॥ सा० ॥ एनो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो यइ घणो प्यार ॥ सा०॥५॥सां०॥ एतो जे दिन तुम घरे आविया, ए तो नोजन करवा सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनथी तुमें चित्त वस्यां, मनथी न विसारे लगार ॥ सा० ॥ ॥ ६ ॥ सां० ॥ एतो ते दिनथी तुमने वर्यु. निजवा नी राखे हूंस ॥ सा० ॥ एतो एहमें जूठ न जाणजो, तुम सत्य करि कहुं सूंस ॥ सा० ॥ ७ ॥ सां०॥ एतो

तव समजी हुं चित्तमां, नृप जाण्यो लंत कुजात ॥ सा०॥ एतो पियु मुज रीश चढी घणी, उठीने में दीधी लात ॥सा०॥८॥ सां०॥ एतो कुंदीपाक कस्यो घणो, करें जीवित सुधी याद ॥ सा० ॥ एतो नाठी दासी नृप कने, जइ कीधी ते फरियाद ॥ सा०॥ ए ॥ सां०॥ एतो सांजली नृप विलखो थयो, एतो समजी रह्यो मनमां हि ॥ सा० ॥ एतो वलि राणीने मोकली, लेइ चूख ण सार उठाद ॥ सा०॥ १०॥सां०॥ एतो तव में अ वसर उलख्यो, एतो राणीने राजी कीध ॥ सा० ॥ एतो कपटें मासनो वायदो, करी राणीनें शीख में दीध ॥ सा० ॥ ११ ॥ सां० ॥ एतो आज ते मास पूरो थयो, एटले तुमें आव्या घेर ॥ सा० ॥ एतो फ लीया मनोरथ माहरा, मुज वाधी पुण्यनी शेर ॥ सा० ॥ १२ ॥ सां० ॥ एतो पियु तुम मंदिर आव ते, मुज शीयल रह्युं अखंम ॥सा०॥ एतो नृपति रह्यो हवे झूजतो, पडि तेहना मुखमें खंम ॥सा०॥१३॥ सां० ॥ एतो इत्यादिक पियु आगलें, कही रमणीयें मांमी वात ॥ सा० ॥ एतो हरिवलें सघलुं सांजली, गुण लीधो स्त्रीनो विख्यात ॥सा०॥ १४ ॥सां०॥ हवे हरिवल कहे निज प्यारीने, तुज वेहेन छे वाडी मध्य

॥ सा० ॥ एतो लंकागढथी लाविंयो, एतो परणी म होटी सलज्ज ॥ सा० ॥ १५ ॥ सां० ॥ तव वसंतसि री हरखित थइ, लजें आवी माहारी वेहेन ॥ सा०॥ एतो वारे वासे पामशुं, गुण महोटो थयो सुख चेन ॥सा०॥१६॥सां०॥ हवे वसंतसिरी सहेलीशुं, गइ वा डीयें तेडवा तेह ॥सा०॥ कुसुमसिरी निज वेहेनने,घणे हेतें लावी गेह ॥सा०॥ १७ ॥ सां०॥ एतो वसंतसिरी ने पाय पडी, दीधो कुसुमसिरीयें लाग ॥ सा० ॥ नखने मांस ज्युं प्रीतडी, तिम बिहुने थयो एक राग ॥सा०॥ १८ ॥ सां० ॥ एतो दोगुंडक सुरनी परें, दो नारीशुं लोगवे लोग ॥सा०॥ एतो हरिबल जीव दया थकी, सुख पाम्यो पुण्य संयोग ॥ सा०॥१९॥सां०॥ एतो इणिपरें जे दया पालशे,एतो सांजली गुरु उपदेश ॥सा०॥ एतो हरिबलनी परें पामशे,एतो लवोलव सुख विशेष ॥ सा० ॥ २० ॥ सां० ॥ एतो सोहम शुद्ध परंपरा, तस गादीयें हीर सूरिंद ॥ सा० ॥ एतो सा ह अकब्बर बूझवी, एतो मेलव्यो सुकृत वृंद ॥सा०॥ ॥ २१॥सां०॥ एतो तस शिष्य पंमित सोहता, धर्म विजय कविराय ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य धनहर्ष जग जयो, एतो पंमित मांहे सराय ॥ सा० ॥ २२॥

॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य कुशल विजय गणि, गणि कमल विजय तस भ्रात ॥सा०॥ एतो तस शिष्य ल क्ष्मीविजय कवि, एतो ज्ञान क्रियामें सरात ॥ सा० ॥ २३॥सां० ॥ एतो तस शिष्य केशर अमर दो, एतो जगमां कर्म जिपंत ॥ सा० ॥ एतो सूरज चंद्र तणी परें, दोय बंधव तेज दीपंत ॥ सा० ॥ २४ ॥ सां०॥ एतो तस पद पंकज किंकरु, एतो लब्धिविजय उ जमाल ॥सा०॥ शोले ढालें पूरो कस्यो, एतो बीजो उ ल्लास रसाल ॥सा०॥२५॥सां०॥ इति श्रीजीवदयापरे हरिबलमच्छीरासे लंकागमनागमनसंबंधः संपूर्णः॥२॥

॥ दोहा ॥

॥शांति सुधामयमें प्रभु, मगन रहे निशिदीस ॥ केवलज्ञान प्रकाशथी, देखे विश्व जगीश ॥ १ ॥ ज्यो तिवधूना संगमें, निशिदिन रह्यो लपटाय ॥ तस पद पंकज हुं नमुं, वामानंदनराय ॥ २ ॥ वचनामृत रस वरसती, कविमन महितल जेह ॥नवपल्लव क विने सदा, करती माता तेह ॥३॥ चरण कमल नमुं तेहनां, वाला त्रिपुरा सोय ॥ गुण गातां ध्यातां सदा, मुज मन वंछित होय ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ तस सान्निध हरिबल तणो,

पभणुं त्रीजो उल्लास ॥ ५ ॥ उत्तमना गुण गावतां, होवे उत्तम आप ॥ खाइनी खेलें नावतां, जाये मल संताप ॥ ६ ॥ धर्मना रसिया जे हशे, ते सुणशे एक मन्न ॥ धर्म कथा गुण लेयने, मानशे ते दिन धन्न ॥७॥ भारे करमी बापडा, शुं जाणे ते धर्म ॥ अवगुण ले निंदा करे, साह्मुं बांधे कर्म ॥८॥ ते माटे भावुक तुमें, अवगुण मत ल्यो कोय ॥ कीजें व्यवसाय धर्म नो, तेह्मेें खोट न होय ॥ ए ॥ इम जाणी तुमें सांभलो, हरिबल केरुं चरित्र ॥ धर्मकथा सुणतां थकां, आतम होवे पवित्र ॥१०॥ हवे सुणजो भविका तमें, हरिबल केरी ख्यात ॥ लंका जइ आव्या पछी, शी शी निपजी वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह, झबूके वीजली ॥ हो लाल झबूके वी०॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल पहेरे वेश ते, जाणी प्रेक्षनो हो लाल के ॥ जाणी प्रेक्षनो ॥ दूरथी आवतो जाणे, नरेश ते लेक्षनो हो० ॥ नरे० ॥ एहवो वेश व णाय, प्रभातें निकल्यो हो०॥ प्रभा० ॥ लोकनी दृष्टें जणाय, ते हरिबल अटकल्यो हो०॥ ते० ॥१॥ चहुटे वहेतां जुहार, जुहार ते सहु करे हो० ॥ जु० ॥ ह

रिखजने मनोहार, करे सहु जली परें हो० ॥ क० ॥
इम करतां दरबार,ते मांहे आवियो हो०॥ते०॥जिहां
बेठी परखद त्यांहे, उछांहे नावियो हो० ॥ उ० ॥२॥
नृपजन आदि परज, ते कही सहुं मली हो० ॥ते०॥
एक नृप विना बीजी परज,ते मनमें थइ रली हो० ॥
॥ ते० ॥ पूछे मांहोमांहे, ते कुशलनी वारता हो० ॥
ते०॥ पाछो उत्तर हरिबल,दे दिल धारता हो०॥दे०॥३॥
प्रगटी होलीनी झाल ते, नृपना मन्नमें हो० ॥ नृ०॥
लागी अंगो अंग, अंगीठी तन्नमें हो० ॥ अं०॥ वलि
मंत्री कालसेननुं, कालजुं नीकल्युं हो०॥ का०॥ श्याम
वदन थयुं तास,ज्युं श्याम काजल तलुं हो०॥ज्युं०॥४॥
जाणे झहाज निमज्ज, थयुं दरिया वच्चें हो० ॥ थ०॥
तिम हरिबलने देखि, दो नृप मंत्री लच्चे हो० ॥दो०॥
कारीमो रंग देखाडी, कहे मुखथी घणुं हो० ॥कहे०॥
हरिबल देइ आदर, दे नृप बेसणुं हो०॥दे०॥५॥ आ
गत स्वागत कीध, घणी हरिबल तणी हो० ॥ घ० ॥
पूछे सोज समाचार, नृप हरिबल भणी हो०॥ नृ० ॥
कहो हरिबल तुमें लंका, गढ भणि किम गया ॥हो०॥
ग०॥ राय विभीषण केरा,समाचार किम थया हो०॥
स०॥६॥ तव हरिबल ते खडग, करे लेइ भेटणुं॥हो०॥

क० ॥ राय बिभीषणे मोकल्युं, ए तुम चेटणुं हो० ॥ए०॥ हवे हरिबल कहे सांभलो, स्वामी तुम जणुं हो०॥स्वा०॥ लंका गढना समाचार, श्या कहुं तुम घणुं हो०॥श्या०॥७॥ विकटा मारग आटां, कांटा ते घणा हो०॥कां०॥ पंथें वहेतां आकरो, लाग्यो नही मणा हो०॥ला०॥ इम करतां दुःख सहेतां, पूगो जल निधी हो०॥पू०॥कालाभंवर जल भर्यां,खारो जलोदधी हो०॥ खा०॥८॥ लांवो पहोलो सहस, इसी योजन कह्यो हो० ॥ इसी० ॥ ते परमाणें महोटो, सागर जल लह्यो हो० ॥ सा० ॥ नाना महोटा मगर, मछ ते दीसता हो०॥म०॥ वाघने सिंहने रूपें, दीसे हिंसता हो० ॥दी०॥ ए॥ चिहुं दिशिमें जल पूरी, दीसे वसुमती हो० ॥ दी० ॥ माणस पंखीमात्र न, दीसे ए क रती हो० ॥ दी० ॥ जलना लोढ चले ते, हिमा ला टूक ज्युं हो० ॥ हि० ॥ उछलें जल असमान, शिखा चढे हूं कयुं हो० ॥ शि० ॥ १० ॥ जाणे अषाढो मेह, ज्युं दरियो गाजतो हो०॥ ज्युं० ॥ शूर सुभटनां मान, ते दूरें भांजतो हो० ॥ ते० ॥ एहवो जलधि भयंकर, देखी बिहामणो हो० ॥ दे० ॥ जल में पगलुं देतां, मन धूज्यो घणो हो० ॥ म० ॥११॥

पण शुं करीयें स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥
कविण कथुं तिहां मन, संजारी रामने हो० ॥ सं० ॥
पालुं केम वलाय जे, कामें नीकल्यो हो० ॥ के ॥
॥ जे० ॥ मरण कबूल कथुं पण, पाछो नवि टल्यो
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना जे बोल, ते गजदंत
नीसख्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम उसरे, पंचमें
उच्चख्या हो० ॥ पं० ॥ पंचनी साखें बोल, जे बोली
यो ते टले हो० ॥ जे० ॥ ते नरनारी जीवतां, मूआं
मां जले हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥ वयण चूकां ते मान
वी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥ इहनव परजव
कार, गयो तस जिन जणे हो० ॥ ग० ॥ इम जाणीने
स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ वाल्यो जलमें
जीव, कविण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वलि
एक हरिवल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥
कल्पित वात करी कहे, ते सहु सांजले हो० ॥ ते० ॥
जलमें गयोज न आयो, तें हुं मन संवरी हो० ॥
ते० ॥ तव एक राखस आव्यो ते, साहामो जल तरी
हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ कंचो तो जाणीयें सप्त ए, ता
ड प्रमाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥ लांबो होव ते जाणी
यें, वंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दंता जोढा ताल;

करे करी कलमली हो० ॥ क० ॥ अवली सवली दो
ट, दीये धसी फलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे
आंखो दो ऊंमी, जूंमी डुंगर दरी हो०॥ जूं० ॥ माथुं
महोटुं ते जाणीयें, हलपले धूंसरी हो० ॥ ह० ॥ मा
थे कावरा केश, ते जाणीयें कांखरां हो० ॥ ते० ॥
दंताली समा दांत, ते विरला आकरा हो० ॥ वि०
॥ १७ ॥ ताडसमा दो हाथ ते, राखस डोहना हो०
॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा जोहना
हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें ऊंमो, कूवो फूडनो
हो० ॥ कू० ॥ थंन्न समान दो चरण ते, राखस जूं
मनो हो० ॥ ते० ॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, न
यंकर नैरवो हो० ॥ न० ॥ जाणे यमनो बंधव, प्रग
ट्यो अग्निनवो हो० ॥प्र० ॥ क्रोधानलनी काल ते,
मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्टट्ट हास,
ते कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १ए ॥ मुआ
साप ज्युं गंध, गंधाय डुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उ
दरथी निकले आहार जे, ते दिन सातनो हो०॥ते०॥
एहवो बिहामणो राक्स, ते साहामो मल्यो हो०
॥ते०॥ एक तो जलधि बीजो, राक्स देखी ढल्यो हो०
॥रा०॥२०॥ म्हें तव जाणियो जूनो, पूर्वज आवियो

॥ हो० ॥ पू० ॥ विवानीयन्नो, घर्घरणो जगाडियो हो० ॥घ०॥ राज्यनुं काम सधावा में, तव बुध्धिकरी हो० ॥ में० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राखसने म्हें फरी हो०॥ रा०॥२१॥ आवो मामा जुहार,नाणेज तुमने करे हो० ॥ ना० ॥ द्यो अनेदान ते मामा, नाणेजने नलि परें हो०॥ना०॥स्वामी तुम्ह प्रसादथी,बुध्धि ए ककली हो० ॥बु०॥ राजी थयो तव राखस,वाणी सुणी नली हो० ॥ वा० ॥२२॥ पूछे राखस नाणेज, तुं इहां किहां थ की हो० ॥ तुं० ॥ किम तुं आव्यो जलधिमें, ते मुऊ कहे बकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा, मुऊ लंका तणो हो०॥ मु० ॥ दाखवो मारग माह रे, काम छे तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जावुं छे नृप कारज, शीघ्र उतावलो हो० ॥ शी० ॥ तव रा खस कहे नाणेज, दीसे तुं बावलो हो० ॥ दी० ॥ मीयां चादे चावे, चणा तुं ए नवुं हो० ॥ चा०॥ इयो तुऊ आशरो नाणेज, लंकामें जवुं हो० ॥ लं० ॥ २४ ॥ चूसी ले तुऊ राखस, धोले दी ढतां हो० ॥ धो० ॥ किम तुऊ पुरवें नाणेज,लंका गढ जतां हो० ॥ लं० ॥ जेहथी निपजे काम,ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ बांध्यो गढो खाइ, बुधां त्यां बहु बके हो०

॥बु०॥२५॥ चमक्यो चित्तमें स्वामि उखाणो सांजली हो० ॥ उ० ॥ घर सरखि नहि यात्र, ए वात में अ टकली हो० ॥ ए० ॥ तव में पूछ्युं स्वामी, राखसने ते वलि हो० ॥ रा० ॥ मुजने बतावो मामा, लंका कूंची गली हो० ॥ लं० ॥ २६ ॥ किणिविधें मामा जवाये, लंका गढ हुं लहुं हो० ॥ लं० ॥ तव राखस कहे जाणेज, सांजलो हुं कहुं हो० ॥ सां० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल, ए पहेली उच्चरी हो० ॥ ए० ॥ लब्धि कहे जवि सांजलो, आगें उजम धरी हो०॥आ०॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राखस कहे मझिनें, सांजल तुं जाणेज ॥ जो जावुं तुज लंकमें, तो करि कहुं ते हेज ॥ १ ॥ अगनी तुज काया दही, कर तुं रक्षा हव ॥ ते रक्षा पडी लेइने, सोपुं लंका तव ॥ २ ॥ इणि विधि तुं लंका लहे, बीजी विधि नवि कांय ॥ जो तुज वले लंका गयो, तो तुज राक्षस खाय ॥ ३ ॥ राक्षस वय ण ते सांजली, में धार्युं मनमांहि ॥ जीवित जो वाहालुं करुं, तो पण न रहे कांहि ॥ ४ ॥ रमणी राज्य ने क्र द्धि ते, तन धन जे वलि प्राण ॥ एतां करे अजखाम णां, वाक्यवल्लना जाण ॥ ५ ॥ ते जाणी तुम कार

जें, कीधुं मरण कबूल ॥ इंधण काष्ठ मेली करी, करवा मांमयुं सूल ॥ ६ ॥ चिता रची दोयजण मिली, कीधो अग्नि प्रगट्ट ॥ लखगाडी चय चिहुं दिशें, प्रगटी ज्वाल त्यां ऊट्ट ॥ ७ ॥ तिण विचमें तुम किंकरें, ऊं पापात ते कीध ॥ देह दही तुम कारणें, करवा काज प्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सामधर्मि थइने प्रभु, कीधी काया होम ॥ घृत मधथुं ते परजली, ज्वालज ऊंची धोम ॥ ॥ ए ॥ तेहनी जे रक्षा थइ, बांधी पोटकी ठार ॥ राखस ले गयो लंकमें, करवा मुज उपगार ॥ १० ॥ राखस ते लेइ पोटकी, नृप नजरें करि नेट ॥ राय विनीपणें पूछियुं, शी करि तें ए नेट ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नटियाणीनी देशी ॥ हवे राखस कर जोडी हो कहे आलस छोडी रायने, ए तो लंकापति अवधार ॥ हुं जव सायर कंठें हो उपकंठें छेक ते जायने, मुज वलियो आगार ॥ हवे० ॥ १ ॥ तव एक पंथी वेगे हो में दीठो निग्रंथी पणे, ए तो सायर पेले पार ॥ हुं गयो जव ते साहामो हो ते पण कहि मामो नणे, तुमें आवो मामा जुहार ॥ हवे० ॥ २ ॥ में पण पूछियुं तेहने हो तुं केहने नरोंसे इहां रह्यो, तव

बोल्यो पंथी सार ॥ राय विभीषण केरुं हो छे शरणुं भजेरुं मुज कह्युं, ए तो जाणेज बोल्यो विचार ॥ ॥ ह्वे० ॥ ३ ॥ तुम दरिसणनो अर्थी हो करि कर थी छारनी पोटकी, मुज बांधी दीधी एह ॥ कहे राखस तुम सयणे हो तुम नयणे मूकि ए पोटकी, ए तो भेट करी में तेह ॥ ह्वे० ॥ ४ ॥ इम राखस गयो कहिने हो ए तो वहीने फरी निज थानकें, तव चिंतवे विभीषण चित्त ॥ विस्मय पाम्यो मनमें हो राय जनमें छोडी जाणके, ए तो राखसनी पोटकी दीत ॥ ५ ॥ एम हरिवज कहे नृपने हो घणे यतें भस्म करें ग्रही, मुज छांटे अमृत तोय ॥ ए आंकणी ॥ विद्यावलें करी शुद्धो हो मुज कीधो जीवतो देखतां, तिणे दीधो फरि अवतार ॥ सनमान्यो मुने स्वामी हो घणुं अंतरजामी पेखतां, मुज कीधो बहु उपगार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापति मुज पूछे हो ए शुं छे तें काया दही, मुज मांभी कहो विरतांत ॥ तव में लंकापतिने हो कहि यतनें मांभीने सही, एतो आपणा घरनी वात ॥ ए० ॥ ७ ॥ वीशालापुर नगरी हो छे सवरी सवला देशमें, ए तो महोटी पुण्य पवित्र ॥ मदनवेग त्यां राया हो सुखदाया सघला

नरेशमें, ए तो सोहे प्रजामें छत्र ॥ ए० ॥ ७ ॥ अंग जने परणावा हो जस पावा चिहुं दिशिमें प्रज्ञु, एतो मांमयो उछव रंग ॥ तिण कारण नृप मेले हो मन नेले सयलाचुं विज्ञु, एतो तेडी ते आमंग ॥ ए० ॥ ॥ ए ॥ तेणें तुम आमंत्रवा हो ए तो मंत्रवा रूपे हि ये धरी, तिणे तेडवा मूक्यो मुज ॥ ते माटे तुमें वे ला हो ए तो लगननी पहेला परवरी, तुमें आवोज्युं पडे सूज ॥ए०॥१०॥ तव लंकापति बोल्यो हो मन खोली कहे मुज आगलें, तुं सांजल पंथी सुजाण ॥ में किम तिहां अवराय हो न जवराये निज नागलें, तो किम थाय प्रयाण ॥ ए० ॥ ११ ॥ ते माटे तुमें कहेजो हो मुज मुजरो लेजो दिन प्रतें, तिहां वेगा विशाला मज्ञ ॥ खडूनी आ सहनाणी हो गुण खाणी मूकी तुम प्रतें, ए तो सघले कामें सकज्ञ ॥ ॥ ए० ॥ १२ ॥ एम कहिने विनीपणें हो मुने नृप ण देइ जडावनां, वली पूत्री पण मुज दीध ॥ तुम परसादें सांइ हो प्रज्ञु मुज अंतर मांइ जावना, मुज कीधी विनीपणें वृद्ध ॥ ए० ॥ १३ ॥ घणे आमं बरें करीने हो जस वरीने मुज बोलावियो, निज पुत्री सहित महाराज ॥ वहि निज सेवक सार्थे हो ए

तो मूकी हाथे लालावियो, मुज लंकापति गुज आ
ज ॥ ए० ॥ १४ ॥ विद्यावलें पंथ काप्यो हो सुख
व्याप्यो पलकमें ढूकडे, एतो जब थइ प्रभुनी लहेर ॥
रजनी मध्य प्रदीपें हो निज नगरी समीपें रूंखडे, ए
तो मूकी वलिया घेर ॥ ए० ॥१५॥ हुं पण मंदिर आ
यो हो सुख पायो प्रभुनी महेरथी,हुंतो जे गयो बीडुं ब
वेय ॥ फलि मुज चाकरी लंका हो देइ फंका आयो तुम
लहेरथी,हुं तो लंकालाडी लेय ॥ ए०॥ १६ ॥ एसहना
णी खड्गनी हो जे निपनी सर्गनी तुम लणी,एतो मूकी
बिल्लीषणें साच ॥ वलि तुमने कर जोडी हो मान
मोडी प्रणिपत करी घणी, तुम सपगो कह्यो ए मुख
वाच ॥ ए० ॥ १७ ॥ ए सहनाणी देखी हो मुने
पेखी आव्या जाणजो, एतो अमने विवाहमांहि ॥
वलि तुम सेवक लांखे हो मुख वचनें दाखे ते मा
नजो, तुम मदनवेग उछांहि ॥ ए० ॥ १८ ॥ इणि प
रें व्यतिकर सघलो हो नृप आगल मांफि परगलो, ए
तो सपगो मह्नि कहेय॥ते नृप सांजली वाणी हो मन
जाणी हरिबल अटकल्यो, ए तो साहस धैर्य धरेय ॥
ए० ॥ १ए ॥ सघली परषदा निसुणि हो मन हर
णि सांजली वातडी, ए तो हरखित परषद होय ॥ ध

न्य करणी हरिबलनी हो गयगमणि लंका जातडी, ए तो परणी आणी सोय ॥ ए० ॥ २० ॥ नृप पण थयो मन राजी हो शुन देश्जाजी वधामणी, ए तो हरिबल कीध प्रसन्न ॥ घणे आमंबरें करीने हो हरिबलने कीध पहेरामणी, ए तो मूक्यो निज आसन्न ॥ ए० ॥ २१ ॥ गोखें बेठी देखे हो पियु आवतो पेखे रंगशुं, थइ नारी दो नल्लास ॥ दंपतीनी दो दृष्टि हो थइ सुधावृष्टि चंगशुं, ए तो पहोती सघली आश ॥ ए० ॥ ॥ २२ ॥ हवे हरिबल मतवालो हो ए तो दो गोरीनो नाहलो, ए तो सुख विलसे संसार ॥ प्रेम सुधारस प्यालो हो एतो पियुने वालो वाहलो, ए तो सफल करे अवतार ॥ए० ॥ २३॥ जुवो नवियां प्राणी हो मन जाणी जीव कुमारीयो, एक जलचर जीव जो मछ ॥ तो तस पुण्य प्रनावें हो शुन नावें जनम सुधारियो,लह्यो मही लच्छि सुलछ ॥ए० ॥२४ ॥ हुं बलिहारी तेहने हो जे जेहने लेश्या धर्मनी, तस होवे सुर नर दास ॥ त्रिजा नल्लासनी पूरी हो बीजी ढाल सनूरी मर्मनी, ए तो पनणी लब्धि सुवास ॥ए०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें हरिबल नारीनी, डुविधा मूकी दूर

॥ जाग्यो जव मंदिर धणी, नाठ्यो चोर मजूर ॥१॥ तिम नृप समजी मन्नमें, हरिबलशुं करे प्यार ॥ हरि बल पण सेवा करे, नृपनी ते दरबार ॥ २ ॥ हरि बलनी थइ वातडी, नगरि विशाला मझ ॥ लंका लाडी लावियो, परणी लज्ज सुलज्ज ॥ ३ ॥ ते वातो श्रव णें सुणी, कालसेन परधान ॥ परजले मनमें पापी यो, हरिबल सुणि जस वाण ॥४॥ दिनकर देखी घूक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं, त्युं बले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा, तस अरि अंधज होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थ यो, हरिबलने ते दुष्ट ॥ छल ताके छलवा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेगो मालीये, मद नवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, वेगो प्रण मी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन की राड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ए॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इण सरोवरीयांरी पाल, आंवा दोय रावला ॥ ल लना ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबलनां वयण, वखाण ते नृप करे ॥ ल० ॥ खागी त्यागी निकलंक के, शूर सु

नट सरे ॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गढ गयो ॥ ल० ॥ माहरुं काज सुधारवा, वली नरम थ यो ॥ ल० ॥ १ ॥ काढयो आपणे दो जणें, मलीने खीवती ॥ ल० ॥ टाढे पाणीयें वेगली, खल काढी ह ती ॥ ल० ॥ पण ते साहासुं लाडी, लंका लेइने ॥ ल० ॥ आव्यो आपणे मंदिर, मंका देइने ॥ ल० ॥ २ ॥ तो में जाणो ए पूरण, नाग्य वली घणो ॥ ल० ॥ जामा ता थइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो सहुनाणी खड्गनी, नृपशुं मत करी ॥ ल० ॥ लंका पतिनी माहरी, दो राखी सरजरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल परपंच ए, में दीठो सही ॥ ल० ॥ मद नवेगें मंत्रि आगल, वात ए सवि कही ॥ ल० ॥ काल सेनने पगथी, मांमी माया लगें ॥ ल० ॥ प्रगटी का ल ते सांजली, जागी अंगो अंगें ॥ ल० ॥ ४ ॥ बोल्यो मंत्री ताम, कहे रीशें वली ॥ ल० ॥ नलि तुम अ कल जे नरपति, हरिबलनी कली ॥ ल० ॥ शुं तुमें जाणो स्वामी, ए धूरतनी कला ॥ ल० ॥ मानो स घलुं धोलुं ते, दूध करी नला ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारें मिंग असंबंधने, अणघडीयां वली ॥ ल० ॥ गजनुं कलिंग तेमांहे, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे दी

गो चंद, अमासनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिवल
नी ए मानजो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ शुं
जाणी प्रभु वयण, वखाण करो तुमें ॥ ल० ॥ ए हं
सीनां सयल, चरित्र लहुं अमें ॥ ल० ॥ जे परदेशी
लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ नाटक चेटक जाणे,
वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट परपंच,
करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडीयें
कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फरे थइ छेल
सा ॥ ल० ॥ मोडा मोडी करे घणा, धोबी वेलसा ॥
॥ ल० ॥ ८ ॥ बेसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥
॥ ल० ॥ झिंगे झिंग चलावे ते, लोक जाणे खरी ॥
॥ ल० ॥ साची जूठी करे ते, मुखें न लगाडीयें ॥
॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ते, वदन बिगाडीयें ॥
॥ ल० ॥ ए ॥ ते माटे तुमें स्वामि, सही करी मान
जो ॥ ल० ॥ कपटीमां शिरदार ए, हरिवल जाणजो
॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥
॥ल०॥ अणमलती ए वात, घडी एणें बुत्रिका ॥ल०॥
॥ १० ॥ ए तो कोइक धूर्त, पणे करी वातडी ॥ल०॥
परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम जातडी ॥ ल० ॥ ना
म लिये निज आप, वधारवा अणघडी ॥ ल० ॥

किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ल०॥ ११ ॥ शी दुनियामें खोट, पडी हती पुरुषनी ॥ ल० ॥ लं कापतियें कीध, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवकुल नाग विछेद, गया जव महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का कीडाने, राजसरे ते अणमिले ॥ ल० ॥ १२ ॥ एउ खाणो सांभली, नृप तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम ह रिवलनी वातो ए, साची गारजो ॥ ल० ॥ जो लंका पति केरो, जमाइ साचो हशे ॥ ल० ॥ तो तुम नोतरी मंदिरें, जमवा तेडशे ॥ ल० ॥ १३ ॥ तेहने मिशें जइ आपणें, नारी दो जोश्यें ॥ ल० ॥ उत्तम मध्यमनी गति, दो कुल सोहियें ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रियें नृपना, कान भंभेरीया ॥ ल० ॥ नृपना मन ना कषाय, जुजंग ढंढेरीया ॥ ल० ॥ १४ ॥ जूठे कु बुद्धी मंत्रीयें, चकमक पाडीयो ॥ ल० ॥ हरिवल उ पर द्वेषनो, सिंह जगाडीयो ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रि यें हरिवल, नी कुबुद्धियें ॥ल०॥ नृप मन फेरव्युं जा णे, हरिवल ऋद्धियें ॥ ल० ॥ १५ ॥ इम नृप मंत्री दो जण, मलि गोष्ठी रचे ॥ ल० ॥ जमण मिशें दो नारीने, जोवा नृप लचे ॥ ल० ॥ एहवो संकेत करे जिहां, नृप मंत्री मली ॥ल०॥ तिण अवसर तिहां

आव्यो, अजाणे हरिबलजी ॥ ल० ॥ १६ ॥ आगत स्वागत हरिबल,नी ते नृप करे ॥ ल० ॥ बांह पसारी आवो, आघा आसण धरे ॥ ल० ॥ वेग एकण गा दीयें, हरिबल नृप जिहां ॥ ल० ॥ मुखथी साकर घोलतो, बोल्यो मंत्री तिहां ॥ ल० ॥ १७ ॥ हवे करे मंत्री हरिबलनी, खुश मशकरी ॥ ल० ॥ हरिबल हर्षे एहवी, बोली उच्चरी ॥ ल० ॥ कहो हरिबल तुमें लंका, लाडी लाविया ॥ ल० ॥ राय बिभीषण केरा, जमाई भाविया ॥ ल० ॥ १८ ॥ पण एक नो तरुं तेहनुं, तुम कने मागीयें ॥ ल० ॥ लेखावटनी लागति, ते नवि भांगीयें ॥ ल० ॥ लाखनी बगसिस कोडि, हिसाब न चूकीयें ॥ ल० ॥ छे संसारमां री ति ए, ते किम मूकियें ॥ ल० ॥ १९ ॥ गडदानो पण भाग, नथी कोइ मूकता ॥ल०॥ तो किम मूकशुं जम ण, अमारुं छतावतां ॥ ल० ॥ बाइना कात्यामां भा ग ते, कोइनो पाड छे ॥ ल० ॥ इम हरिबलने मंत्री, कहे हस्त चाड छे ॥ ल० ॥ २० ॥ इणि परें हास्य कु तूहल, नी करी मंत्रीयें ॥ ल० ॥ समज्यो मनमां हरिबल, सांभली गंत्रीयें ॥ ल० ॥ पापी कुमति मं त्रीयें, चकमक फेरियो ॥ ल० ॥ जमण तणो मिश

काढी, नृपने जंजेरियो ॥ ल० ॥ २१ ॥ एहेवा डुष्ट कुबुद्धि ते, कां जगें अवतस्या ॥ ल० ॥ यमने मंदिरें कां न, गया जे गलि नथा ॥ ल० ॥ परनिंदा करता फरे, डुष्ट सुसाधनी ॥ ल० ॥ खावे उंखर निंदकी, काक ज्युं वाधनी ॥ ल० ॥ २२ ॥ तप जप क्रिया कष्ट, करे जे निंदकी ॥ ल० ॥ ते मरि जाये नरग, निगोदें ए वकी ॥ ल० ॥ नारे कर्मा जीव, कह्या ए जिनवरें ॥ ल० ॥ इह नव परनव सुखने न, देखे नली परें ॥ ल० ॥ २३ ॥ पारकां छिद्र जूवे ते, निंदकी वोकडा ॥ ल० ॥ देवकीवंशें ते जपजे, ए फल रोकडां ॥ ल० ॥ समजू थइने जीव, करे निंदा पारकी ॥ ॥ ल० ॥ ते जीवने किम लेती नथी, चंमा वारकी ॥ ॥ ल०॥ २४ ॥ इम हरिबल मन समजी, खुणस राखी रह्यो ॥ ल० ॥ खेलशुं दाव ते अवसर, आवे जे लह्यो ॥ ल० ॥ गुडथी मरे जे जीव ते, विषथी न मारीयें ॥ ल० ॥ ए उखाणो लोक, कहे ते संचारियें ॥ ल० ॥ २५ ॥ इम धारी मनमांहि ते, हरिबल बोलीयो ॥ ल० ॥ स्वो प्रनु लंकानोजन, वचन ए खोलीयो ॥ ल० ॥ नगरि समेत जे परखद, लेइ पधारजो ॥ ल० ॥ करशुं टहेल ते सगति, सारु अवधा

रजो ॥ ल० ॥ २६ ॥ इम कही नृपने प्रणमी, हरि
बल चलीयो ॥ल०॥ पण हवे नृपने मंत्रीने, जगदीश
रूलीयो ॥ ल० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल ए, त्रीजी पू
री थई ॥ ल० ॥ लब्धि कहे नवि सांभलो, जे आगें
भई ॥ ल० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल घरे आवियो, बेंठी नारी दोय ॥
आवतो दीठो नाहने, करी प्रणमे सोय ॥ १ ॥ निश
भर बेठां रंगमें, दंपति करे कल्लोल ॥ प्रेम सरोवर
कीलतां, निगमे राति टकोल ॥ २ ॥ हरिबल कहे प
टनारीने, सांभल प्रिया मुज वात ॥ लंका लाडी जे
हणुं, ते नृप मागे लांच ॥ ३ ॥ पंच समक्षे मंत्रीयें,
माग्युं भोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आव्यो
हुं आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पियु सां
भल मुज्झ ॥ एक वार नृप तेडतां, लाज वली नही
तुज्झ ॥ ५ ॥ नकटी देवी देवलें, सरड पूजारो जेम ॥
लोक उखाणो जे कहे, प्रीतम ठो तुमें तेम ॥ ६ ॥
वलि शी शक तुम धाइयो,प्रीतम बीजी वार ॥ ते हुं
इम जाणुं अछुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥ देखी पे
खी कूपमें, दीपक लेइ पडो हव्व ॥ नृप मंत्री मीठुं

चवे, ते तमें मानो सच ॥ ८ ॥ मीठां बोलां मान शी, केम पतीजां जाय ॥ नीलकंठ मधुरुं लवे, साप सपुछो खाय ॥ ए ॥ तेहनी ते ए जातडी, नृप मंत्री दो लंठ ॥ चूक करी तुमने प्रज्ञु, करशे स्त्री दो चंम ॥ १० ॥ ते माटे स्वामी तुमें, म करो कोइ विसास ॥ एतां कवहि न धीरियें, जो वंठो तन आश ॥ ११ ॥ मेंप भुजंगम नामिनी, महेत ने नूपाल ॥ ए पांचने जे धीरशे, ते नर पामशे काल ॥ १२ ॥ यम वेश्या दा सी नदी, अग्नि जूआरी काल ॥ ए साते नही आप णां, प्रीतम निज संनाल ॥ १३ ॥ तव प्रीतम वलतुं कहे, हरिलंकी निसुणेह ॥ जो मुज दीहा पाधरा, शुं नृप करशे तेह ॥ १४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतमसेंती वीनवे ॥ अथवा हो मत बोले सा जनां ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल एहवो जबाप ते धीवरें, वसंत सिरीने दीध ॥ मोरालाल ॥ नोजननी जे जो इयें, मेली सामग्री सुसिद्ध ॥ मोरा लाल ॥ १ ॥ सार निपाई रसवती, जेहवी कही सूर्यपाक ॥ मो० ॥ एक जो कवल तेपेटमां, उतरे तो चढी रहे ठाक ॥ ॥ मो० ॥ २ ॥ हांरे लाल सागर देव पसायथी,

नोतर्यां नगरी लोक ॥ मो० ॥ नृपने पण विशे नोतरुं, श्रीफल लेइ करे ढोक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ हां० ॥ शाला करि चउ चिहुं दिशें, पंचरंगी बनात ॥ मो० ॥ जरतारी फेरा किया, केडें बांधि क नात ॥ मो० ॥ सा० ॥४॥ हां० ॥ नर नारीनी पांत मां, मांड्या सोवन थाल ॥ मो० ॥ रतन कचोलां शाकनां, मांड्या झाक झमाल ॥ मो० ॥ सा० ॥५॥ ॥ हां० ॥ कुंमर कुंमारी पांतमां, तिहां पण मांड्या थाल ॥ मो० ॥ बारें दरवाजे जइ, तंडुल ठवे उज माल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ६ ॥ हां० ॥ जोजन वेलाने समे, हरिबलें तेडां कीध ॥ मो० ॥ राउ राणा नग री जना, बेठी पांत प्रसिद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ ७ ॥ ॥ हां० ॥ छयल छबीला गोगाजुआ, रसिया वालम जेह ॥ मो० ॥ जांग अमल चढाइने, खाइम फेरा तेह ॥ मो० ॥ सा० ॥ ८ ॥ हां० ॥ त्रीसे पांतें त्रीस णां, सुखडी एकविश जाति ॥ मो० ॥ मेवा मीठी जातना, त्रीसें पांतिमां खांति ॥ मो० ॥ सा० ॥ ए ॥ ॥ हां० ॥ घेवर पेंडा मोतीया, कसमसीया कर्णसाई ॥ मो० ॥ झरमरीया सिंह केसरी, लाखणसाइ स वाई ॥ मो० ॥ सा० ॥ १० ॥ हां० ॥ सिरा सुंहाली

लापशी, गुंदवडां गुंदपाक ॥ मो० ॥ मर्कि जलेबी हे सभी, मेहेसु पतासां षाक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ११ ॥
॥ हां० ॥ व्यंजन केही जातिनां, खारां खाटां तिरक ॥ मो० ॥ खडका ने ब्रडका घणा, हिंग वघास्या हविख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १२ ॥ हां० ॥ मांहोमांहि ते एकमना, मांमे रसिया वाद ॥ मो० ॥ अवला सवला जूझता, करे ते भोजन स्वाद ॥ मो० ॥ सा० ॥
॥ १३ ॥ हां० ॥ शूर सुभट रण खेतमें, ज्युं लडे कर ता चोट ॥ मो० ॥ तिम रसिया लडे भोजनें, कर मुखशुं करे दोट ॥ मो० ॥ सा० ॥ १४ ॥ हां० ॥ शाल दाल ने घृतसरा, चाली ज्युं नदीनीक ॥ मो० ॥ रसिया राजन जन जम्या, स्वादें करीने ठीक ॥ मो० ॥
॥ सा० ॥ १५ ॥ हां० ॥ सारनी नीपाइ रसवती, जे हमां कांइ नवि दुःख ॥ मो० ॥ नगरी जन सहुको जमी, काढी सघली चूख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १६ ॥
॥ हां० ॥ कपूर कस्तूरी वासिया, जलशुं करे मुख शुद्ध ॥ मो० ॥ पान सोपारी एलची, तंबोल दे मन शुद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ १७ ॥ हां० ॥ पहेरामणी सहु ने करी, नर नारी विस्तार ॥ मो० ॥ मुद्रानी करी दक्षिणा, वरताव्यो जयकार ॥ मो० ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ हां० ॥ जशपडहो वजडावियो, नगरीमांहे विख्या
त ॥ मो० ॥ वातडी चाली चिहुं दिशें, हरिबल केरी
ख्यात ॥ मो० ॥ सा० ॥ १ए ॥ हां० ॥ हवे सुणजो
रसीया तुमें, जमता जे थइ वात ॥ मो० ॥ नृपने
प्रिसवा नारी दो, आवी शोनित गात ॥ मो०॥ सा०
॥ २० ॥ हां० ॥ नृप जमतां जूली गयो, निरखी दो
स्त्री रूप ॥ मो० ॥ विकलेंडिय थयो राजवी, पडियो
मोहने कूप ॥ मो० ॥ सा० ॥ २१ ॥ हां० ॥ काम
ज्वर व्याप्यो घणो, नृपने तेह अथाह ॥ मो० ॥ नृ
प जाणे दो कर ग्रही, ले जाउं मंदिरमांह ॥ मो० ॥
॥ सा० ॥ २२ ॥ हां० ॥ मूर्बागत थयो राजवी, मोह
बाण लागां असेच ॥ मो० ॥ विषयारसने कारणें,
पडियो गडदापेच ॥ मो० ॥ सा० ॥ २३ ॥ हां० ॥
नृपने घाली पालखी, ले गया निज दरबार ॥ मो०॥
जाणें जमने मंदिरें, नृप गयो जाणे संसार ॥ मो०॥
॥ सा० ॥ २४ ॥ हां० ॥ पूरव जवनी वेरणी, वसंत
सिरी दो नारि ॥ मो० ॥ चित्त हर्युं हरिणाक्षीयें, नृ
पनुं उताखुं वारि ॥ मो० ॥ सा० ॥ २५ ॥ हां० ॥ वैद्य
बोलाव्या तिहां कणे, पकडी जुए बांह ॥ मो० ॥ वै
द्य विचारा शुं करे, करक ते कालजामांह ॥ मो० ॥

। सा० ॥ २६ ॥ ह्रां० ॥ आय उपाय करे घणा, टे
ही न लागे कोय ॥ मो० ॥ जेणें दीधी वेदना, दूर
करेशे सोय ॥ मो० ॥ सा० ॥ २७ ॥ ह्रां० ॥ जो जो
करणी करमनी, नृप थयो ते असराल ॥ मो० ॥
त्रीजा उल्लासनी ए कही, लब्धें चोथी ढाल ॥ मो०॥
। सा० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणा जोषी जाण जे, परबंधी कहे आय ॥ सु
त्र पोथां दूरें रह्यां, जोर न चाल्युं कांय ॥ १ ॥ तिण
समे मेहर मंत्रवी, फरि कीधो उपचार ॥ कोकशास्त्र
रणे वर्ले, नृपने कह्यो करार ॥ २ ॥ मेहरमंत्री जस
लह्यो, नगरी विशाला मझ ॥ वाह वाह सहु को क
हे, मंत्री महोटो सकज ॥ ३ ॥ मेहर चिंते चित्तमें,
नृपने न वली शान ॥ न वले ज्युं खटमासनी, पाथ
ी पूंछडी श्वान ॥ ४ ॥ वली केताइक दिन गया, नृ
पने करतां केलि ॥ वली नृप कामें व्यापियो, वसंत
श्रीनी चढि वेलि ॥ ५ ॥ तिण अवसर नृप मंत्रीने,
तेडाव्यो ते दुष्ट ॥ ते पण आव्यो नृप कने, काल
सेन ते कुष्ट ॥ ६ ॥ प्रणमी नृपने मंत्रवी, वेगो पासें
नजीक ॥ नृप कहे मंत्री आगलें, सांजल मंत्री ठीक ॥

॥ ७ ॥ प्यारी प्राण ते ले गइ, परिसण आवि जिवा
र ॥ तन मन सुध भुली गयो, मंत्री देखत वार ॥
॥ ८ ॥ मन लाग्युं ते ऊपरें, जिम मन केतकी भ्रंग ॥
तिम मंत्री तुं जाणजे, रह्यो मुज जिउ तस संग ॥९॥
लागी लगन ललना तणी, शुं कहुं मंत्री तुज ॥
लालच रहे मुज तेहनी, सुण तुं मंत्री गुज ॥ १० ॥
ते माटें मंत्री तुमें, कोइक करो विचार ॥ छल बल
कल ते केलवी, मेलवो ते दो नार ॥ ११ ॥ मानिश
तुज उपगारडो, थाइश नही गुण चोर ॥ जीवित
सूधी ताहरी, अहनिश राखिश होर ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो छोगलो ॥ मा
रुजी ॥ ए देशी ॥ हवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल का
लसेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ,
प्रजाना पाल ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने ते
डी, आधो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं
सोंपी, आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दभने
जिम, गुरव रंगी देयवो ॥ सा० ॥ तिम हरिबलने प्र
भु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि गर्दभ पासें
शालि, भेलाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ दूध

ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि परें राजन साचो, उखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण ते डर्जन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रगव्यो, रुधिरने शोपवा ॥ सा०॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते, घाली दीपवा ॥ सा०॥ ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, कगतो वैरी छेदीयें ॥ ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने छेदतां, धर्म न वेदीयें ॥ सा०॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोढे लगाडो एहने ॥ ॥ सा० ॥ ए तो कपटीमां शिरदार, में दीठो तेहने ॥ ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो अखूट खजानो, धूर्त्ती सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो जाणजो स्वामी महोटो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आगें मारे मिंग, असंबंध जोर ते ॥सा०॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तुमें मानी साची, जाणि सवी कही ॥ सा०॥ पण हुं जाणुं इणे कल्पित, वात करी सही ॥ सा०॥ ए तो एहनो शो विशवास, करो तुमें राजवी ॥ सा०॥ ए तो एहना खाधामां पाणी, न मागे ते मानवी ॥सा०॥६ ॥ ए तो शी लंका शी लंका, गढना नायनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उलंघी जावुं, ते मुश्केल सायनी ॥सा०॥

ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥सा०॥
ए तो महोटा मगरमछ, मुखें गली जावतो ॥ सा०॥
॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथजी महोटुं, जोर ते फावतुं
॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं
नावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने
आवियो ॥ सा०॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खड्ग दे
खावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो धा
इने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो
न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो
जाणजो हरिबल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम
आगल फूल्यो ए वृक्ष, चोलो मोमर थइ ॥ सा० ॥
॥ ए ॥ ए तो एहवा नरने मूकीयें, स्वामी यमघरे ॥
॥सा०॥ ए तो काढीयें आनंद ठेट ते, दूरें नली परें
॥ सा० ॥ ए तो हवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धें चाल
शो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथें
मालशो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल,
मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हवे आज पछें कदि आण
न, लोपुं ताहरी ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करी
तें, मंत्री ते खरी ॥सा०॥ ए तो चोकस बेठी माहरे,
मनडे सहुखरी ॥ सा० ॥ ११ ॥ पण ते हवे मंत्री

वात, पडो कोइ अनिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीजे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिव लनो जे शब्य ठे, ते कादो परो ॥सा०॥ ए तो आप णे मंदिर रामा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, प्रणमी कुट ते ॥ सा० ॥ एह वातनुं बीडुं ग्रहूं हुं, हुं थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहथी दिल ठरे ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीजे, काम ते कल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हवे ते माटे तुमें सना, मध्यें बेसीने ॥सा०॥ तुमें यम नोतरवा हरिवल, मूको विह सिने॥सा०॥जब बीडुं ग्रहशे हरिवल,ते चित्त राखशुं ॥ सा० ॥ तव बाली जाली खाख, करीने नाखशुं ॥ सा० ॥ १४ ॥ विण पइशे आपणि दूर, विराध ते जा यशे ॥ सा० ॥ तव शशिवयणी मृगनयणी, आप णी थायशे ॥ सा० ॥ नवि शोने वायस कंठें, रयण नो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो ठे तुम लायक नायजी, नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन हरख्यो महि पति मंत्रिनी, वाणी सांजली ॥ सा० ॥ ए तो जली बुद्धि बताइ ते, सुखदायीमां नली ॥सा०॥ इम दो ज णे मलीने परव, कर्यो नृप मंत्रीयें ॥ सा० ॥ यम नो

तरवानो मिश करि, हरिवल्ल यंत्रीयें ॥ सा०॥ १६॥ इ
म दुर्मति दीधि नृपने, काल सेन ते ॥ सा० ॥ हरिब
लने चुकवा दो जन, रहे लय लीन ते ॥ सा० ॥ पण
एतुं न जाणे मूरख, दो जण खूट ते ॥सा०॥ किण ग
णे किणे कडणे,वेसशे कंट ते॥सा०॥ १७॥जीवलालचि
यो थइ आकरि,वांधी मोहनी॥सा०॥कोडा कोडी साग
र सत्त्वर, लहे दुःख शोहनी ॥ सा० ॥ लाख चोराशी
जीवा जोनिमें, जीव ते बहु रुले ॥ सा० ॥ पण तो
हि पाप जोगवतां, साटुं नवि वले ॥ सा० ॥ १८ ॥
ए तो काटें काट वले जिम, लोहने जाजनें ॥ सा०॥
तेम जीवने कर्में कर्म, वधे सूनाजने ॥सा०॥ ए तो पर
निंदा परद्रोह, करे जे आकरा ॥ सा० ॥ तेणें दीधां
शिवपद वारणें, आडां फांखरां ॥सा०॥ १९ ॥ ए तो
कंचन कामिनी ए दो, सारु बापडा ॥ सा० ॥ जीव
बांधे निकाचित कर्म, गलीनां कापडां ॥ सा० ॥ जी
व जटके वार अनंती, नरक निगोदमां ॥ सा० ॥ ए
तो सूक्ष्म बादर थइ फरे, राज ते चौदमां ॥ सा० ॥
२०॥ ए तो कंचन कामिनी साट, जीव वंचाय छे ॥
सा० ॥ ए तो इहजव परजव चोर, थई दंडाय छे ॥
सा० ॥ जिम मींनी देखे दूध, न देखे डांगडी ॥ सा०

॥ तिम जीव न देखे करणी, आगें अधलाकडी ॥ सा०॥२१॥ इम जाणतो जीव चेते नहिं, कर्मना ज़ोर थी ॥सा०॥ ए तो ज्ञान क्रिया दो नवि गमे, कर्म कठो रथी ॥ सा०॥ इम मंत्री बांधे निकाचित, कर्मने काल ते ॥सा०॥ ए तो हरिवल उपर द्वेष, धरे चंमाल ते ॥ सा० ॥ २२ ॥ विण खुने मंत्रि वांसे थयो, दीशाशूल ते ॥ सा०॥ पण नृप मंत्रीना मुखमें, पडशे धूल ते ॥ सा०॥ कोइ वातें पापी वीहे नही, मंत्री व्याल ते ॥ सा० ॥ पण अंतें जातां वहेशे, पाणी ढाल ते ॥ सा०॥ २३ ॥ ए तो साहिबने घरे जोतां, लेखुं एक ठे ॥सा०॥ रूडी नूमीनो जोनारो, प्रनू नेक ठे ॥सा० ए तो काल प्रस्तावने योगें, करणी संनालशे ॥सा०॥ तव दूधने जलनो वेहरो, करि देखाडशे ॥सा०॥२४॥ एक समकित विना जे जीवने, घोर अंधार ठे ॥ सा० निशि दिन घन घाती कर्मनो, नर्म वधार ठे ॥ सा० पुद्गल परावर्तन काल, अनंतो ते करे ॥ सा० ॥ जप तप क्रिया कष्ट करे ते, सवि निःफल वरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ जेहने घट अंतर समकित, केरी ज्योत ठे ॥ सा०॥ तस अनुनव सुरमणि वंछित, सुख उद्योत ठे ॥सा०॥ तस जोगें ज्योति सरूपीनुं, रूप ते उलखे ॥

सा० ॥ चिदानंद ते आनंदमें लहे, शिव सुख जिन लखे ॥ सा० ॥२६॥ जेहनी करणी शुभ महोटी, छे संसारमें ॥सा०॥ तस वास कह्यो भगवानें, सुख आगारमें ॥ सा० ॥ ए तो ढाल कही शुभ पांचमी, त्रीजा उल्लासनी ॥ सा० ॥ ए तो लब्धि कहे भवि सुणजो, आगें सुवासनी ॥ सा० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥इणि परें परख करी भलो,नृप मंत्री जण दोय॥ पहोता निज निज मंदिरें, चूप धरी मन सोय ॥ ॥ १ ॥ बीजे दिन नृप मंत्रियें, किधी कचेरी सार ॥ चामर छत्र विराजते, बेठो तखत उदार ॥ २ ॥ छत्रिश राजकुली मली, वड वडा ते सामंत ॥ खान उमराव ते आविया, परखदमें माहंत ॥ ३ ॥ हरिबल पण तिहां आवियो, बेठो नृपनी संग ॥ एकण गादी विराजता, जाणे शशि रवि चंग ॥ ४ ॥ हवे नृप तेडुं मोकले, वणिकनें घर घर सार ॥ महाजन समसत मेलियां, मूकी निज तलार ॥५॥ वड वखती व्यवहारिया, माही माना जेह ॥ माही मति छे जेहनी, मलिया ते गुणगेह ॥६॥ दानें मानें आगला,

बीसंता जडधार ॥ धनद भंडारी सारिखा, राखे सब व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ सूहारण जायो दीकरो ॥ सोनागी हे ॥ आयो मास वसंत के ॥ लाल सोनागी हे ॥ ए देशी ॥ माहाजन साथें सहू मली ॥ सो० ॥ पहेरी नवा शणगार के ॥ ला० ॥ निज निज घरनां नेटणां ॥ सो० ॥ ले आया दरबार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीमंत सातशें ॥ सो० ॥ शंकर शंभु सगाल के ॥ ला० ॥ सूरचंद सूरो सूरजी ॥ सो० ॥ सोनागी सुंदर साल के ॥ ॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मीठो मालजी ॥ सो० ॥ माणक मोतीलाल के ॥ ला० ॥ जेठो जगसी जीवणो ॥ सो० ॥ जगजीवन जगमाल के ॥ ला० ॥ ३ ॥ थानो थोनण थावरु ॥ सो० ॥ नाणो नीमो नवान के ॥ ला० ॥ कीको केशव करमसी ॥ सो० ॥ कल्याण करमी कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ दूदो देवो देवसी ॥ सो० ॥ दीपो दानो दयाल के ॥ ला० ॥ प्रेमो प्रेमजी पोमसी ॥ सो० ॥ पूरो ने पुण्य पाल के ॥ ॥ ला० ॥ ५ ॥ नेणो नेणसी नागजी ॥ सो० ॥ नाथो नथमल नील के ॥ ला० ॥ रेवो रवजी रंगजी ॥

॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगील के ॥ ला० ॥ ६ ॥ वाघो वेलो वालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद के ॥ ला०॥ हेमो हीरो हर्षसी ॥ सो० ॥ हंसो ने हरचंद के ॥ ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोडीदास गलालजी ॥ सो० ॥ गांगो ने गोपाल के ॥ ला० ॥ गणजी गणेश ने गांगजी ॥ ॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ ख वो खीमो खेमजी ॥ सो० ॥ खागोने खुशाल के ॥ ॥ ला० ॥ तारो तुलशी त्रीकमो ॥ सो० ॥ त्र्यंबकने त्रिभुवन्न के ॥ ला० ॥ ए ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥ ॥ सो० ॥ शामो ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिव शी शामजी ॥ सो० ॥ साचो साकर वृंद के ॥ ला०॥ ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहारिया ॥ सो० ॥ मलिया माहाजन साथ के ॥ ला०॥ भेट भली नृपने करी॥ ॥ सो०॥ वेग प्रणमी नाथ के ॥ ला० ॥ ११ ॥ इणि परें सहु नगरी जना ॥ सो० ॥ मेल्या वर्ण अढार के ॥ ला० ॥ वेठी परखद सहु मली ॥ सो० ॥ नृपने करीने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे नृप अवसर जोइने ॥ सो० ॥ बोल्यो वयण विचक्ष के ॥ ला० ॥ बीडुं यम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच समक्ष के ॥ ला० ॥ १३ ॥ रे सामंतो सांभलो ॥ सो० ॥ बीडुं

ग्रहो तुम एह के ॥ ला० ॥ यमने नोतरुं देइने ॥ ॥ सो० ॥ तेडी आवो तेह के ॥ ला० ॥ १४ ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें ॥ सो० ॥ तेडी लावे जेह के ॥ ॥ ला० ॥ माहरी रीज ते पामशे ॥ सो० ॥ मनोवंछित ससनेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे वीडुं ग्रहो ॥ सो० ॥ जेहमां होवे साच के ॥ ला० ॥ जीवित लगें हुं तेहनी ॥ सो० ॥ पालीश सुपरें वाच के ॥ ॥ ला० ॥ १६ ॥ इम नृप वाणी सांभली ॥ सो० ॥ सभा थई विलक्ष के ॥ ला० ॥ पर्षद मौन करी रही ॥ सो० ॥ जाणे तेलमें बूडी मक्ष के ॥ ला० ॥ ॥ १७ ॥ निज निज मुख सामुं जुवे ॥ सो० ॥ परपद थइ मन नूर के ॥ ला० ॥ उपडे को नहिं जीभडी ॥ ॥ सो० ॥ जाणे गले देवाणो सिंदूर के ॥ ला० ॥ ॥ १८ ॥ परपद जाणे मन्नमें ॥ सो० ॥ ए शुं बोल्यो राय के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरें ॥ सो० ॥ कहो किम तिहां जवराय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ सहितो ए परजले सहि ॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फरेय के ॥ ला० ॥ लूंटी धनने लेयशे ॥ सो० ॥ यमनुं मसलुं करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥ आगें तो नृप जाणतो ॥ ॥ सो० ॥ मिनि कंकण पहेर्यां केदार के ॥ ला० ॥

पण काम पडे मीनी मुंषकने ॥ सो० ॥ मुंढने मित्र
करे संहार के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ए दृष्टांत ते नृपें क
ह्यो ॥ सो० ॥ मांड्यो बिडानो ए पास के ॥ ला० ॥
कोइकनी ते फरी दिशा ॥ सो० ॥ लुसी मुसी लेशे
तास के ॥ ला० ॥ २२ ॥ इम समझी मनमें रही ॥
॥ सो० ॥ सहु परजा मौन धरेय के ॥ ला० ॥ ख
गी मटा मट जोइ रही ॥ सो० ॥ पण उत्तर कोइ न
देय के ॥ ला० ॥ २३ ॥ तव नृप बोल्यो घरकीने ॥
॥ सो० ॥ ए तो लमणे भृकुटी चढाय के ॥ ला० ॥
ग्रास खाउ तुमें अम तणा ॥ सो० ॥ हवे वेग कान
ढलाय के ॥ ला० ॥ २४ ॥ जो अम ग्रासनो खप क
रो ॥ सो० ॥ तो तुमें ग्रहो वीडुं एह के ॥ ला० ॥
नहितर को मारग ग्रहो ॥ सो० ॥ अन्य मूलकनो
होय जेह के ॥ ला० ॥ २५॥ इणि परें नरपति बोलि
यो ॥ सो० ॥ थरकी परखद त्यांहि के ॥ला० ॥ चम
क्यां सहुनां शीश ते ॥ सो० ॥ नृप मूकशे उे यम
ज्यांहि के ॥ ला० ॥२६ ॥ मावित्र द्ये दुःख गेरुने ॥
॥ सो० ॥ कहो तस कुण राखणहार के ॥ ला० ॥
वाड जो गलशे चीभडां ॥ सो० ॥ किहां होवे तास
पुकार के ॥ ला० ॥ २७ ॥ हवे सुणजो भविषण

तुमें ॥ सो० ॥ जे बोलशे मंत्री काल के ॥ ला० ॥ ए कहि लब्धि नहीं सही ॥सो०॥ ए तो त्रीजा अल्ला सनी ढाल के ॥ ला० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अवसर लहि कालसेन ते,बोल्यो तव कर जोडि ॥ अरज सुणो प्रभु माहरी, कहुं तुम आलस छोडि ॥ ॥ १ ॥ यम नोतरवा नाथजी, बीडुं ग्रहावो जेह ॥ देखत मरवा कुण ग्रहे, मरणनुं बीडुं एह ॥ २ ॥ बोरनुं बीट जे नवि लहे, शुं जाणे ते यम्म ॥ गज पाखर जंबुकशिरें, नाखी स्वामि तुम्म ॥ ३ ॥ देव रूप जे मानवी, छे तेहनां ए काम ॥ शुं जाणे शश कीडलां, यम राजानुं ठाम ॥ ४ ॥ आगें काम सुधा रियां, लंका केरां जेह ॥ ते जाशे यम तेडवा, हरि बल छे गुणगेह ॥ ५ ॥ साहासिक शिरोमणी, सघ ले कामें सज्ज ॥ वीरबल केरो पुत्रडो, ते करशे तुम कज्ज ॥६॥ इणि परें परखद देखतां,महा दुष्ट ते काल ॥ शीशथी चरण उतारीने, दूर रह्यो ते व्याल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥काली ने पीली वादली राजिंद ॥ए देशी ॥ हवे हरि बलने नृप कहे, लाला सांभल जीवन गुज्झ ॥ यमरा

जाने तेडवा, लाला सोंपुं ए बीडुं तुज ॥ १ ॥ पंथी
डा रे यमपंथ पंथें वहे तुं वेगें हो प्यारा लाल ॥ ए
आंकणी ॥ माहरुं काज सुधारवा, लाला तुऊ विण
बीजुं न कोय ॥ स्वारथीया सहु को मल्या, लाला
रोटीतोडा तुं जोय ॥ २ ॥पं०॥ जगदीश जेहमें साच
ठे, लाला पाले ते निजवेण ॥ परडुःख जांगे जे पल
कमें,लाला साचा कहियें ते सेण ॥ ३ ॥ पं० ॥ वयण
विलुध्धां मानवी, लाला अगनी कंपे समशान ॥ दो पखें
उज्जल दाखवा, लाला तन मन करे खुरबान ॥ ४ ॥
पं०॥ शिर उढे एक वयणथी, लाला रूडी जूंफी गाल ॥
सुख डुःख न गणे मन्नमें, लाला वयण तणा प्रति
पाल ॥ ५ ॥ पं०॥ श्रेणिक ज्युं वयणें करी, लाला पर
णावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने, लाला कीधो
जमाइ जीय ॥ ६ ॥ पं०॥ तेमाटे हरिबल तुमें, लाला
बीडुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें, लाला
तेडी यम घरे आण ॥ ७ ॥ पं० ॥ इम नृपवाणी सां
जली, लाला हरिबल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं
करुं, लाला तो न रहे मुऊ मान ॥ ८ ॥ पं० ॥ जा
मगरी सलगाडीने, लाला डुष्ट रह्यो ते दूर ॥ जरी
गोलिमें कोश ते, लाला नाखी नृपनी हजूर ॥ ए ॥

॥पं०॥ कोइक जवनो नीमज्यो, लाला मंत्री वेरी ब्या ल ॥ मरणनुं बीडुं ग्रहावतां,लाला कीधो महोटो जंजा ल ॥ १० ॥ पं०॥ तो हुं थयुं प्रन्नु माहरो, लाला जो ने पाथरो तेह ॥ तास पसायें कालने, लाला जीव थी टालुं नेह ॥ ११ ॥ पं० ॥ तो मुजरो खरो माह रो, लाला जग खर चाले वात ॥ महिपी नीत ते म हिपीने, लाला पाईने करुं ख्यात ॥ १२ ॥ पं० ॥ एम विचारी चित्तमें, लाला हरिबल चव्यो त्यांहि ॥ नृपने प्रणमी हाथशुं, लाला बीडुं ग्रहुं ते उद्यांहि ॥ ॥ १३ ॥पं०॥ तव परजा कर जोडीने, लाला विनवे त्यां महिनाथ ॥ हरिबलने उगारीयें, राज गांह करी दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण वि शेषें मानो हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कटकी कीडी उपरें, राज तृण पर ज्युं कूगार ॥ ते उखा णो नाथजी, राज मेलो ते निरधार ॥ १५॥रा०॥ ए परदेशी प्राहुणो, राज आव्यो वायु जकोल ॥ आप णी नगरी जमाडीने, राज देखाड्यो रंग चोल ॥ १६ ॥ रा० ॥ ते नरने किम दूवियें, राज गुण ग ण रयण करंम॥ देव करीनें पूजीयें,राज होवे लाच्छ अ खंम ॥ १७ ॥ रा०॥ ते माटे तुमें नाथजी, राज दी

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा
गे एतुं मान ॥ १ ७ ॥ रा०॥ ए बीडुं यमदूततनुं, राज
द्यो वीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांछशे, राज
करशे काज ते सोय ॥ १ ए ॥ रा० ॥ परियागतना
माल जे, राज खाता हशे तुम जेह ॥ ते किम पा
छा देयशे, राज काम पडे पग तेह ॥ २ ० ॥ रा०॥
तव नृप रीस चढाइने, राज बोल्यो त्रृकुटी चढाय ॥
रहो अणबोली परज ते, राज समजो नही तुमें
कांय ॥ २ १ ॥ रा० ॥ तव परजा छानी रहि, राज
समजी ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, रा
ज सुगुणने करशे आंहि ॥ २ २ ॥ रा० ॥ द्ये नृप
पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ आव्यो
चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २ ३ ॥ रा० ॥
ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि
लखी थइने परज ते, राज उठी मन उलजाय ॥
॥ २ ४ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज मलीयां
लोक अनेक ॥ टोलें टोलें सहु मली, राज करतां
वात विवेक ॥ २ ५ ॥ रा० ॥ कहे केताइक मानवी,
राज नृप बिगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हृष्टिल उपरें,
राज ते लालचथी देख ॥ २ ६ ॥ रा० ॥ कहे केता

हक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूठी ते करे, राज काग परें ते अशिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि बलने फुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥ रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रजु हे पाधरो, राज मटशे फुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज त्रीजा उल्लासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांजल तुं मुफ जीव ॥ पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तव हरिबल बोल्यो हसि, सांजलो स्वामी सूल ॥ कामें शे ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें प्रजु, पाठो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता, धीरज धरजो स्वाम ॥४॥ एम कही उठ्यो तुरत, हरि बल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते निज धाम ॥५॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

शीख ॥ यमने नोतरवा भणी, जावुं छे सहि इख ॥६॥ नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रह्युं छे एह ॥ यम तेडी नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें शीख द्यो, तुमें छो चतुर दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी, लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अछूं, तुम दो नारी हत्थ ॥ दान सुपात्रें पोषजो, करजो पुण्य कयत्थ ॥ ९ ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा भक्ति प्रभावना, करजो रहि साव धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्ष दो, राखजो निज गृ ह मर्म ॥ ११ ॥ शीख भलामण इणि परें, निज ना रीने कीध ॥ पंथ भणी संचारिने, गमन भणी पग दीध ॥१२॥ पियुनां वयण ते सांभली, नारी दो अकु लाय ॥ जाणे रंभा ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥१३॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम भणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन वलि नारी तदा, पहेंच पियुनो ते साही रे ॥ गद्‌गद कंठ स्युं कही, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमे वाल्हा रे, अम को मनगमतो साह रे, सो प्रीतम सुख भा णु रे, कीजें जोबन लाहो रे, कीजे स्युं नारी उछाह

रे, होवे गजबनो घाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥१॥ ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि हूणी ते नारीने,न गमे वात सोग्राह रे॥ जीवित सुधी धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें दाह रे, विरहनी फाल असाह रे ॥ पीडे मदन अ थाह रे, न रही शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए सुख मंदिर मालियां, जरियां ठे धन धान्य रे ॥ कंत विना ते कामिनी, जाणे अलूणुं ते धान रे ॥ न दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे,इम स्त्री विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥प्री० ॥ दे दोप कुमरी दो दे वने, श्यो तुफ कीधो अपराध रे, विण खूने मुफ कंत ने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध रे, काढि ते को जननी दाध रे, पाडे वियोग अगाध रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख म हिपुत्री पडो,जेह पाडे ठे वियोग रे ॥ गएया दिनमां ते नायजी, कां नथी लेतो बलिजोग रे, जाये सघ लाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे,जाणे ज्युं सघ ला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोग णी, पामे डुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते वाफ

मां, सीजी रहे तनसार रे, होवे वबूलाकार रे, खावे धावे ते वार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे शकुन श्रीकार रे, धिग ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन ते नार रे ॥ ६ ॥ प्री० ॥ विरहिणी नारीने कंतनुं, ध्यान रहे तस जीव रे ॥ तंडुलमछ परें कर्मने, बांधे निकाचि सदीव रे, शमतारस नवि पीव रे, मोहनी कर्म अतीव रे, जीवतो डुर्जन आजीव रे, चिन्ह ए विरही जहीव रे ॥ ७ ॥ प्री०॥ एणि परें प्यारी कं तने, कहे वाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर वरसती, जाणे जाड्व मेह रे, रहो प्रीतम तुमें गेह रे, म दहो सुरंगी देह रे, जोगवो तन धन एह रे, पामी पुण्यनी रेह रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ हरिवल कहे दोय प्यारीने, नांखी अमृत वाण रे ॥ म करो मन कोइ सोच ना, तुमें छो जीवन प्राण रे, आंखनी कीकी समान रे, पण छे नृपनी ते आण रे, कीडुं प्रतुं में ते जाण रे, होवे ज्युं कोडि कल्याण रे, तुमें छो घरना मंडाण रे, म करो खांचा ए ताण रे, अमें तुं पंथी केकाण रे, करवुं शीघ्र प्रयाण रे ॥ ए ॥ सांजल गोरी रे मा नी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही मही चालीयो, गं तो मूकी ते नार रे, नृपनुं वयण ते पालवा, आव्यो

वहि दरबार रे, नृपने कीध जुहार रे, कहे मन्त्री ति
णि वार रे, करो तुमें चिता तैय्यार रे, म करो ढील
लगार रे, सुणी नृप चित्त मझार रे, पाम्यो हर्ष अपा
र रे, तेडाव्यो ते तलार रे, चिता विरचावी सार रे ॥
॥ १० ॥ सां० ॥ हरिबल वले नृप कारणें ॥ ए आंक
णी ॥ अगर चंदन काष्ठना, रचना चयनी ते कीध
रे ॥ सुगंध द्रव्य ते होमतां, नृप करे मनोरथ लीध
रे, जाणे रमणी ने रिद्ध रे, प्रभुयें मुझने ते दीध रे,
थइ मुझ पुण्यनी वृद्ध रे, आजथी वंछित सिद्ध रे ॥
॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिबल चय सुधी आवीयो, पहेरी
वस्त्र विशाल रे ॥ अंगें भूषण शोभतां, पहेर्यां झाक
झमाल रे, कीधां तिलक ते भाल रे, करमां श्रीफल
जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते झा
ल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति
ण समे सागर देवता, हरिबल समरे ते चित्त रे ॥ तत
क्षण जलनिधि नायजी, आव्यो सुपरें करि हीत रे,
जाण्यां सयल चरित्त रे, बोल्यो सुर थइ मित्त रे, हरि
बल मननो पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥
॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिबल सम
कर्युं रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, वेगे चयमें ते

नूप रे, जन सहु देखे सरूप रे, जलतो मंत्री अनुप रे, हरख्यो मंत्री ते नूप रे, पण ते पडियो भवकूप रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतो जन देखिने, सबला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जलनिधितीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन कोइनां धीर रे ॥१५॥ह०॥ होमी काया ते जालमें, चरणथी शीश सराड रे॥ त्रट त्रट त्रटके तन चामडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते नाड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे, रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतानी जाल ते, लागी नभ लगें चोट रे ॥ श्याम थयुं नभ ते थकी, दीसे कालो ते थोट रे, रविरथने पण दोट रे, दीधी जालें ते कोट रे, थयो रवि आकरो लोट रे, वरुणें अरुणनो उंट रे, वम्ने अगनीनो गोट रे, थयो ते दिनथी तपकोट रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ इणि परें वैक्रिय रूप ते, हरिबलनुं करी त्यांहि रे ॥ कामिनो हरिबल जालियो, लोतां लिण एकमांहि रे, भस्म करी सहु नाखी रे, जन कहे मांहो मांहि रे, थयो अकनाकर त्यांहि रे, केनुं न चढे ते आंहि रे, केवल अ

म्याय थाहि रे ॥ १८ ॥ ह० ॥ चरम थइ जे चिंता तणी, टांटी जलशुं ते लाय रे ॥ जलशरणें करी चरम ते, हरख्या मंत्रीने राय रे, काढशुं शल्य ते प्राय रे, रमणी रिद्द दो थाय रे, हवे मुऊ वंछित थाय रे, वाह्वा मंत्रीनुं नाय रे, नज़ी तें बुद्धि उपाय रे, इम जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघला नगरीनां लोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखर मरवुं सहु कोय रे, शुं लेइ जाशो ते दोय रे, थिर धन रामा नवि होय रे, जावुं मूकीने सोय रे, शुं कीधुं ते जोय रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ पुरजन सहु वल्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्मीजन धर्म रागथी, हरिबलनुं दुःख लेय रे, कीधा उप वास तें केय रे, व्रत पञ्चखाण धरेय रे, केहि जप माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंछित सुख लहेय रे ॥ २१ ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि बल कीधो अलोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां छे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा नलनी गइ हूंफ रे, थयुं मन शीतल कूप रे, दंपति

इइ ज्युं कप रे, त्रीजा जल्लासनी चूंप रे, आतमी
दान अनूप रे,लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥१३॥ह०॥

॥ दोहा ॥

॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनछुं थइ सुप्रसन्न ॥
हरिबल मूकी मंदिरें, पहोतो निज आसन्न ॥ १ ॥
जो जो जवियां पुण्यथी, हरिबल केरी ख्यात ॥ देशें
परदेशें चली, प्रबल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया
सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह जव
परजव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ जेद कह्या
नव पुण्यना, ठाणांगसूत्र मझार ॥ इव्य जावथी मां
धतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र
सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वय
कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य
सखायी ठे, तस घर लीलविलास ॥ शक्रपरें थइ जोगवे,
रमणि रुद्धि सुवास ॥६॥ इम जाणी जाविक तुमें...
सुणी पुण्य प्रजाव ॥ हरिबलनी परें साधजो. प्रगटे
पुण्यरो नाव ॥ ७ ॥ ते नावें वेसी करि, तरीयें ...
दधितीर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें ...
शीर ॥ ८ ॥ परतख देखो पारिखुं, लोक कहे आ...
... पणुं, दल पामे परजात ॥ ...

॥ ढाल नवमी ॥

॥ माहारी सहि रे समाणी ॥ ए देशी ॥ पांचे नेदें दान प्रकाश्युं, केवलीयें जे श्राख्युं रे ॥ नवि ते पुण्य कहियें ॥ साते खेत्रे जे ड्व्य वावे, सुकृत करणी उपावे रे ॥ १ ॥ न० ॥ श्रीजिन मंदिर बिंब नरावे, पुस्तकें ज्ञान लखावे रे ॥ न० ॥ साहामीवछल नाव धरीने, जे करे चाह करीने रे ॥ २ ॥ न० ॥ श्रीजिनकेरी नक्ति करेवा,डुःकृत पाप हरेवा रे ॥न०॥ वध बंधनादिक जीव छोडावे, करुणा श्राणी नावे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ शेत्रुंजादिक तीरथ जात्रा, जे करे निर्मल गात्रा रे ॥ न० ॥ परियागतनां नाम रखावे, संघवी तिलक धरावे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तप जप संयम ज्ञान क्रिया दो, पाले करि मरियादो रे ॥ न०॥ नय विवहारथी व्रत पच्चरकाण, जे करे चतुर सुजाण रे ॥ ५ ॥ न० ॥ इत्यादिक शुन करणी नांखी, सघली ए पुण्यनी साखी रे ॥न०॥ ड्व्यथी नावथी जे करे करणी, ते नरे पुण्यनी नरणी रे ॥ ६ ॥ न० ॥ ड्व्य स्तवथी बारमे स्वर्गे, उपजे सुर उपवर्गे रे ॥ न०॥ नाव स्तवथी केवल नाणी, थइ वरे मुक्ति ते प्राणी रे ॥ ७ ॥ न० ॥ ड्व्यथी श्राशी पणे जे करणी,

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा गे एतुं मान ॥ १८ ॥ रा० ॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांछशे, राज करशे काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ परियागतना माल जे, राज खाता हशो तुम जेह ॥ ते हिम पा छा देयशो, राज काम पडे पग तेह ॥ २० ॥ रा० ॥ तव नृप रीस चढाइने, राज बोल्यो त्रूकुटी चढाय ॥ रहो अणबोली परज ते, राज समजो नहीं तुमें कांय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव परजा मानी रहि, राज समजी ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कांगियां, रा ज सुगुणने करशो आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ ए कुमर पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २३ ॥ रा० ॥ ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ लखी थइने परज ते, राज ... ॥ २४ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज ... लोक अनेक ॥ टोळे टोळे मळ्या ..., राज ... वात विवेक ॥ २५ ॥ रा० ॥ ... राज नृप बिगड्यो ... ॥ ... ... ॥ २६ ॥ ...

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूठी ते करे, राज काग परें ते उच्छिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीसा कुजात ॥ हरि बलने डुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥ रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें थोक ॥ करता हाहारव करें, राज सघली नगरीनां लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रज्जु ठे पाधरो, राज मटशे डुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज त्रीजा उल्लासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांजल तुं मुऊ जीव ॥ पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तब हरिबल बोल्यो हसि, सांजलो स्वामी सूल ॥ कामें शे ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें प्रज्जु, पाछो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता, धीरज धरजो स्वाम ॥४॥ एम कही उठ्यो तुरत,हरि बल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते निज धाम ॥५॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

जैं वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा
गे एवुं मान ॥ १७ ॥ रा०॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज
द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांछशे, राज
करशे काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ परियागतना
माल जे, राज खाता हशे तुम जेह ॥ ते किम पा
छा देयशे, राज काम पडे पग तेह ॥ २० ॥ रा०॥
तव नृप रीष चढाइने, राज बोल्यो त्रृकुटी चढाय ॥
रहो अणबोली परज ते, राज समझो नही तुमें
कांय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव परजा छानी रहि, राज
समझी ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, रा
ज सुगुणने करशे आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ ये नृप
पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ आव्यो
चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २३ ॥ रा०॥
ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि
लखी थइने परज ते, राज उठी मन उलजाय ॥
॥ २४ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज मलीयां
लोक अनेक ॥ टोलें टोलें सहु मली, राज करतां
वात विवेक ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केतांएक मानवी,
राज नृप विगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हरिबल उपरें,
राज ते लालचथी द्वेष ॥ २६ ॥ रा० ॥ कहे केता

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूठी ते करे, राज काम परें ते वज्रिष्ठ ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि बलने डुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥ रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु हे पाधरो, राज मटशे डुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज त्रीजा उल्लासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांजल तुं मुज जीव ॥ पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तव हरिबल बोल्यो हसि, सांजलो स्वामी सूल ॥ कामें शो ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें प्रभु, पाठो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता, धीरज धरजो स्वाम ॥४॥ एम कही ऊठ्यो तुरत, हरि बल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूततुं, आव्यो ते निज धाम ॥५॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु लीजे, [illegible]
गे एतुं मान ॥ १८ ॥ रा० ॥ ए बीजुं राजवनुं, [illegible]
द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे बोलो, [illegible]
करशो काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ [illegible]
माज जे, राज खाता हशे तुम [illegible] ॥ ते [illegible]
ग देयशो, राज काम पडे पग [illegible] ॥ २० ॥ [illegible]
तव नृप रीष चढाइने, राज बोल्यो [illegible]
रह्यो अणबोली परज ते, राज [illegible]
कांय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव [illegible]
समजी ते मनमांहि ॥ [illegible]
ज सुगुणने करशो आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ [illegible]
पर्जने शीखडी, राज [illegible]
चांपलदे शिरें, राज मानव [illegible]
ए उखाणो दाखवी. राज [illegible]
लखी शके परज ते, राज [illegible]
॥ २४ ॥ रा० ॥ [illegible]
लोक अनेक ॥ [illegible]
वात विवेक ॥ २५ ॥ [illegible]
राज नृप [illegible]
राज ते [illegible]

हक मेंतलो, राज कालसेन विशिष्ट ॥ खानी सूत्री ने करे, राज काग परें ते उच्छिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि बलने दुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥ रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वातां थोकें थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु हे पाधरो, राज मटशे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज त्रीजा उल्लासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांभल तुं मुझ जीव ॥ पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तव हरिबल बोल्यो हसि, सांभलो स्वामी सूझ ॥ कामें शे ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें प्रभु, पाछो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता, धीरज धरजो स्वाम ॥४॥ एम कही उठ्यो तुरत, हरिबल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते निज धाम ॥५॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

शीख ॥ यमने नोतरवा नणी,जावुं छे सहि इख ॥६॥ नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रह्युं छे एह ॥ यम तेडी नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें शीख द्यो, तुमें बो चक्षु दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी, लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अबूं, तुम दो नारी हब ॥ दान सुपात्रें पोषजो, करजो पुण्य कयब ॥ ए ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रनावना, करजो रहि साव धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्ष दो, राखजो निज घु ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख नलामण इणि परें, निज ना रीने कीध ॥ पंथ नणी संबाहिने, गमन नणी पग दीध ॥१२॥ पिसुनां वयण ते सांनली,नारी दो अकु लाय ॥ जाणे रंना ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥१३॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम नणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन लहि नारी तदा, पल्लव पिसुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें वाह रे, म करो मरणनो राह रे, बो प्रातम सुख बा ह रे, लीजें जोबन लाह रे, होवे ज्युं नारी उछाह

रे, होवे गजवनो धाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥१॥ ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि हूणी ते नारीने, न गमे वात सोछाह रे॥ जीवित सुधी धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें दाह रे, विरहनी काल असाह रे ॥ पीडे मदन अ थाह रे, न रही शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए सुख मंदिर मालियां, जरियां छे धन धान्य रे ॥ कंत विना ते कामिनी, जाणे अलूणुं ते धान रे ॥ न दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो दे वने, श्यो तुज कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंत ने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध रे, काढि ते को जवनी दाथ रे, पाडे वियोग अगाध रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने सुख म हिपुत्री पडो, जेह पाडे छे वियोग रे ॥ गएया दिनमां ते नाथजी, कां नथी लेतो वलिजोग रे, जाये सय लाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे, जाणे ज्युं सय ला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते निजोग णी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते वाफ

शीख ॥ यमने नोतरवा नणी, जावुं छे सहि श्व ॥ ६ ॥ नृपनुं कारज सावचा, वीडुं ग्रह्युं छे एह ॥ यम तेडी नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें शीख द्यो, तुमें छो चक्कु दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी, लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अछूं, तुम दो नारी हछ ॥ दान सुपात्रें पोपजो, करजो पुण्य कयछ ॥ ए ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रनावना, करजो रहि साव धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्क दो, राखजो निज गृ ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख नलामण इणि परें, निज ना रीने कीध ॥ पंथ नणी संवाहिने, गमन नणी पग दीध ॥ १२ ॥ पिशुनां वयण ते सांनली, नारी दो अकु लाय ॥ जाणे रंना ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥ १३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम नणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन लहि नारी तदा, पन्नव पिशुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें वाह रे, म करो मरणनो राह रे, छो प्रातम सुख गा ह रे, लीजें जोबन लाह रे, होवे ज्युं नारी उछाह

रे, होवे गजबनो धाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥१॥ ॥ प्रीतम प्यारा रे सांभजो ॥ ए आंकणी ॥ नाह विहूणी ते नारीने,न गमे वात सोन्नाह रे॥ जीवित सुधी धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें दाह रे, विरहनी भाल असाह रे ॥ पीडे मदन अथाह रे, न रही शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए सुख मंदिर मालियां, भरियां छे धन धान्य रे ॥ कंत विना ते कामिनी, जाणे अलूणुं ते धान रे ॥ न दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे,इम स्त्री विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो दैवने, श्यो तुज कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंतने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध रे, काढि ते को भवनी दाय रे, पाडे वियोग अगाध रे, पीडे संतने साव रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने सुख महिपुत्री पडो,जेह पाडे छे वियोग रे ॥ गण्या दिनमां ते नाथजी, कां नथी लेतो बलिभोग रे, जाये सवलाना रोग रे, भांगे मनना ते सोग रे,जाणे ज्युं सवला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोगणी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते वाफ

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी,जावुं छे सहि इ
नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रह्युं छे एह ॥ य
नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते म
शीख द्यो, तुमें बो चक्षु दोय ॥ होशे मेलो
लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सों
तुम दो नारी हब ॥ दान सुपात्रें पोषजो,
पुण्य कयब ॥ ए ॥ देव गुरु समरी सदा, धर
पद ध्यान ॥ पूजा जक्ति प्रजावना, करजो रहि
धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो
नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्ष दो, राखजो नि
ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, नि
रीने कीध ॥ पंथ जणी संबाहिने, गमन जणी
दीध ॥१२॥ पिसुनां वयण ते सांजली,नारी दो
लाय ॥ जाणे रंजा ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन
नारी तदा, पल्लव पिसुनो ते साही रे ॥ गद्गद
स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो
वाह रे, म करो मरणनो राह रे, बो प्रातम सुख
ह रे, लीजें जोवन लाह रे, होवे ज्युं नारी उह

बह्नि दरबार रे, नृपने कीध जुहार रे, करे मत्री नि
शि चार रे, करो तुमें चिता तैय्यार रे, म करो दील
लगार रे, सुणी नृप चिन मकार रे, पाम्यो हर्ष अपा
र रे, तेडाव्यो ते तलार रे, चिता विरचावी सार रे ॥
॥ १० ॥ सां० ॥ हरिबल बले नृप कारणें ॥ ए आंक
णी ॥ अगर चंदन काठना, रचना चयनी ते कीध
रे ॥ सुगंध द्रव्य ते होमतां, नृप करे मनोरथ लीध
रे, जाणे रमणी ने सिद्ध रे, प्रभुयें मुजने ते दीध रे,
थइ मुज पुण्यनी वृद्ध रे, आजथी वंछित सिद्ध रे ॥
॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिबल चय सुधी आवीयो, पहेरी
वस्त्र विशाल रे ॥ अंगें भूषण शोभतां, पहेर्यां जाक
कमाल रे, कीधां तिलक ते भाल रे, करमां श्रीफल
जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते ज्वा
ल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति
ण समे सागर देवता, हरिबल समरे ते चित्त रे ॥ तत
क्षण जलनिधि नाथजी, आव्यो सुपरें करि हीत रे,
जाण्यां सयल चरित्त रे, बोल्यो सुर थइ मित्त रे, हरि
बल मनना पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥
॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिबल सम
कर्युं रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, पेठो चयमें ते

चूप रे, जन सह देखे सरूप रे, जलतो महीं अनूप रे, हरख्यो मंत्री ते नूप रे, पण ते पडियो नवकूप रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतो जन देखिने, सघ ला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी,रोवे आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जल निधितीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन कोइनां धीर रे ॥१५॥ह०॥ होमी काया ते जालमें, चरणथी शीश सराड रे ॥ त्रट त्रट त्रटके तन चा मडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते ना ड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे, रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हरिबल बलता नी जाल ते, लागी नभ लगें चोट रे ॥ श्याम थयुं नभ ते थकी, दीसे कालो ते धोट रे, रविरथने पण दोट रे, दीधी जालें ते फोट रे, थयो रवि आकरो नोट रे, वरुणें ... ो उंट रे, वरसे अगनीनो गोट रे थयो ते ... तपकोट रे । ... ह० ॥ १... क्रिय

न्याय थाहि रे ॥ १८ ॥ ह० ॥ जस्म थइ जे चिता तणी, गंटी जलशुं ते लाय रे ॥ जलशरणें करी जस्म ते, हरख्या मंत्रीने राय रे, काढशुं शल्य ते प्राय रे, रमणी रिद्ध दो आय रे, हवे मुफ वंछित थाय रे, वाल्हा मंत्रीनुं नाय रे, जली तें बुद्धि उपाय रे, इम जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १ए ॥ ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघला नगरीनां लोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखरं मरवुं सहु कोय रे, शुं लेइ जाशे ते दोय रे, थिर धन रामा नवि होय रे, जावुं मूकीने सोय रे, शुं कीधुं ते जोय रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ पुरजन सहु वल्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्मांजन धर्म रागथी, हरिवलनुं छुःख लेय रे, कीधा उप वास ते केय रे, व्रत पच्चरकाण धरेय रे, केहि जप माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंछित सुख लहेय रे ॥ २१ ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि वल कीधो अजोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां छे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा नलनी गइ हूंफ रे, थयुं मन शीतल कूप रे, दंपति

इड ज्युं रूप रे, त्रीजा उल्लासनी चूंप रे, आठमी ढाल अनूप रे, लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥२२॥ह०॥

॥ दोहा ॥

॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनशुं थइ सुप्रसन्न ॥ हरिबल मूकी मंदिरें, पहोतो निज आसन्न ॥ १ ॥ जो जो भवियां पुण्यथी, हरिबल केरी ख्यात ॥ देशें परदेशें चली, प्रबल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह भव परभव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ भेद कह्या नव पुण्यना, ठाणांगसूत्र मझार ॥ द्रव्य भावथी सांधतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वच कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य सखायी छे, तस घर लील विलास ॥ शक्रपरें थइ भोगवे, रमणि ऋद्धि सुवास ॥६॥ इम जाणी भाविक तुमें, निसुणी पुण्य प्रभाव ॥ हरिबलनी परें साधजो, प्रगटे पुख्खरो भाव ॥ ७ ॥ ते नावें बेसी करि, तरीयें भवदधितीर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें करीयें शीर ॥ ८ ॥ परतख देख्यो पारिखुं, लोक कहे आख्यात ॥ पोतानुं परतखपणुं, दल पामे परभात ॥ ९ ॥

॥ ज्ञान नवमी ॥

॥ माह्यारी सहि रे समाणी ॥ ए देशी ॥ पांच भेदें दान प्रकाश्युं, केवलीयें जे आख्युं रे ॥ नवि ते पुण्य कहियें ॥ साते खेत्रें जे द्रव्य वावे, सुकृत करणी उपावे रे ॥ १ ॥ न० ॥ श्रीजिन मंदिर बिंब नरावे, पुस्तकें ज्ञान लखावे रे ॥ न० ॥ साहामीवछल नाव धरीने, जे करे चाह करीने रे ॥ २ ॥ न० ॥ श्रीजिनकेरी नक्ति करेवा,डुःकृत पाप हरेवा रे ॥न०॥ वध बंधनादिक जीव ठोडावे, करुणा आणी नावे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ शेत्रुंजादिक तीरथ जात्रा, जे करे निर्मल गात्रा रे ॥ न० ॥ परियागतनां नाम रखावे, संघवी तिलक धरावे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तप जप संयम ज्ञान क्रिया दो, पाले करि मरियादो रे ॥ न०॥ नय विवहारथी व्रत पच्चरकाण, जे करे चतुर सुजाण रे ॥ ५ ॥ न० ॥ इत्यादिक शुन करणी नांखी, सघली ए पुण्यनी साखी रे ॥न०॥ द्रव्यथी नावथी जे करे करणी, ते नरे पुण्यनी नरणी रे ॥ ६ ॥ न० ॥ द्रव्य स्तवथी बारमे स्वर्गे, उपजे सुर उपवर्गे रे ॥ न०॥ नाव स्तवथी केवल नाणी, थइ वरे मुक्ति ते प्राणी रे ॥ ७ ॥ न० ॥ द्रव्यथी आशी पणे जे करणी,

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ भ० ॥ जे करे भावथी करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ८ ॥ भ०॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जिणंदा रे ॥भ०॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम पदवी पावे रे ॥ ए ॥ भ० ॥ ते भव सिद्धि जिनवर भांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ भ० ॥ देव दानव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे रे ॥ १० ॥भ०॥ अष्ट माहा भय कदिय न देखे, निर्भय सघले चेखे रे ॥ भ० ॥ ईति उपद्रव रोग न होवे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ भ० ॥ पंचमे सघले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ भ० ॥ सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, हुआ ते पुण्यरा नावा रे ॥१२॥ भ०॥ ते नावाथी भवोदधि तरीया, उपशम रसथी भरीया रे ॥ भ०॥ अभ्यंतरनी गांठ विछोडी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ भ० ॥ स कोडी साधर्मी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥ भ० ॥ श्री भरतेसरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते नेहें रे ॥ १४ ॥ भ० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो, शालिभद्र भोगी जाण्यो रे ॥ भ० ॥ ते पण दान प्रभावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

। जo ॥ इत्यादिक अवदात सुणीने, नवि ल्यो ते गु
ण चूणीने रे ॥ जo ॥ तुमें पण इणिपरें सूत्र सिद्धां
तें, नवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ जo ॥ गुरु
उपदेश सुणीने नवियां, जुर्ज हरिबल चित्तमें नवि
यां रे ॥ जo ॥ तो ते जीवदयाने प्रनावें, मन वं
छित फल पावे रे ॥ १७ ॥ जo ॥ जीवदयाथी दधि
पति मलियो, दुःख दोनागयी टलीयो रे ॥ जo ॥
रमणि ऋद्धिनो थयो नुगतारी, चिहुं दिशें लाज वधा
री रे ॥ १८ ॥ जo ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
थयो शुद्ध समकितधारी रे ॥ जo ॥ गुरु उपदेशें
जीवदयायी, थयो जिनधर्ममां हायी रे ॥ १ए॥जo॥
देव प्रनावें नृपजन दृष्टी, बांधी ज्युं करी मुष्टी रे ॥
॥ जo ॥ कारिमो हरिबल जलतो देखाडी, निजगृह
मूक्यो उपाडी रे ॥ २० ॥ जo ॥ गुप्त रहे निज ना
री दो संगें, सुख विलसे ते अनंगें रे ॥ जo ॥ निज
मंदिरमें साते खेत्रें, वावरे द्रव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
॥ जo ॥ नृपजन जाणे मच्छी न जीवे, यममंदिर
जइ रीवे रे ॥ जo ॥ पण हरिबलने पुण्य प्रमाणें,
जन सहु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ जo ॥ हवे तुमें
सुणजो आगल प्राणी, वारता अमिय समाणी रे ॥

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ ज० ॥ जे करे जावथी करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ७ ॥ ज०॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जिणंदा रे ॥ज०॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम पदवी पावे रे ॥ ए ॥ ज० ॥ ते जव सिद्धि जिनवर जांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ देव दानव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे रे ॥ १० ॥ज०॥ अष्ट माहा जय कदिय न देखे, निर्जय सघले चेखे रे ॥ ज० ॥ ईति उपड्व रोग न होवे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ पंचमे सघले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ ज० ॥ सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, हुआ ते पुण्यरा नावा रे ॥१२॥ ज०॥ ते नावाथी जवोदधि तरीया, उपशम रसथी जरीया रे ॥ज०॥ अभ्यंतरनी गांठ विठोडी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ सवा कोडी साधर्मी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥ ॥ ज० ॥ श्री जरतेसरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते नेहें रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो, शालिजड जोगी जाण्यो रे ॥ ज० ॥ ते पण दान प्रजावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

॥ न० ॥ इत्यादिक अवदात सुणीने, नवि त्यो ते गु
ण चूणीने रे ॥ न० ॥ तुमें पण इणिपरें सूत्र सिद्धां
तें, नवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ न० ॥ गुरु
उपदेश सुणीने नवियां, हुउ हरिवल चित्तमें उवि
यां रे ॥ न० ॥ तो ते जीवदयाने प्रनावें, मन वं
छित फल पावे रे ॥ १७ ॥ न० ॥ जीवदयाथी दधि
पति मलियो, दुःख दोनागथी टलीयो रे ॥ न० ॥
रमणि ऋद्धिनो थयो नुगतारी, चिहुं दिशें लाज वधा
री रे ॥ १८ ॥ न० ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
थयो शुद्ध समकितधारी रे ॥ न० ॥ गुरु उपदेशें
जीवदयाथी, थयो जिनधर्ममां हाथी रे ॥ १९ ॥ न० ॥
देव प्रनावें नृपजन दृष्टी, बांधी ज्युं करी मुष्टी रे ॥
॥ न० ॥ कारिमो हरिवल जलतो देखाडी, निजगृह
मूक्यो उपाडी रे ॥ २० ॥ न० ॥ गुप्त रहे निज ना
री दो संगें, सुख विलसे ते अनंगें रे ॥ न० ॥ निज
मंदिरमें साते खेत्रें, वावरे द्रव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
॥ न० ॥ नृपजन जाणे मछी न जीवे, यममंदिर
जइ रीवे रे ॥ न० ॥ पण हरिवलने पुण्य प्रमाणें,
जन सहु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ न० ॥ हवे तुमें
सुणजो आगल प्राणी, वारता अमिय समाणी रे ॥

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ ज० ॥ जे करे जावथी करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ७ ॥ ज०॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जि णंदा रे ॥ज०॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम प दवी पावे रे ॥ ए ॥ ज० ॥ ते जव सिद्धि जिनवर जांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ देव दा नव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे रे ॥ १० ॥ज०॥ अष्ट माहा जय कदिय न देखे, नि र्जय सघले चेखे रे ॥ ज० ॥ ईति उपद्रव रोग न हो वे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ पंचमे स घले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ ज० ॥ सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, हुआ ते पुण्यरा नावा रे ॥१२॥ ज०॥ ते नावाथी जवोदधि तरीया, उप शम रसथी जरीया रे ॥ ज०॥ अन्यंतरनी गांठ विठो डी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ स वा कोडी साधर्मी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥ ॥ ज० ॥ श्री जरतेसरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते नेहें रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो, शालिजद्र जोगी जाण्यो रे ॥ ज० ॥ ते पण दान प्रजावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्थ उल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिणंद ॥ दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख वृंद ॥ १ ॥ तस पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परभात ॥ केवल कमला पामियें, देखियें विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें चंद ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा नमुं, विनवुं बे कर जोडि ॥ मुज मन मंदिरमें वसी, पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर भ्रमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल मच्छी रायनो, प भणुं चोथो उल्लास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुवो, ते सुणजो इक मन्न ॥ हरिबल गुण सुणतां थकां, होवे पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिबल कीधो वार ॥ काढ्युं शल्य जीवित लगें, उपनो हर्ष अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुज अपछरा, प्रभुयें दीधी हल्ल ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुज जीवित सुकयन्न ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥ यज्ञी सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥ को नवि जाणे राजमें, तिम चाल्यो धरी आश ॥ रज

॥ न० ॥ पुण्य प्रन्नावथी अतिहे विशाला, होशे मंग लमाला रे ॥ २३ ॥ न० ॥ शुद्ध परंपर सोहम स्वामी, हुआ मुऊ अंतरजामी रे ॥ न० ॥ तस पाटें गुरु हीर सूरिंदा, उपजे तेज दिणंदा रे ॥ २४ ॥ न०॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, निशिदिन न्नरे पुण्य उरी रे ॥ न० ॥ तस शिष्य धनहर्ष ज्ञानना दरिया, कवि जनमें अनुसरिया रे ॥ २५ ॥ न० ॥ तस शिष्य कुशलविजय कविराया, जैनमारग दीपाया रे ॥ न० ॥ तस लघु बंधव आज्ञाकारी, कमलविजय जयकारी रे ॥ २६ ॥ न० ॥ तस शिष्य लक्ष्मी विजय गुणगेही, श्रुत चारित्रना नेही रे ॥ न०॥ तस शिष्य केशर अमर दो भ्राता, पंमित जनने विख्याता रे ॥ २७ ॥ न० ॥ तस पद किंकर लब्धि कहावे, हरिबलना गुण गावे रे ॥ न० ॥ उत्तम नरना ते गुण गातां, बांधियें पुण्यना खातां रे ॥ २८ ॥ न०॥ त्रीजो उल्लास कह्यो ए पूरो, नव ढालें ते सनूरो रे ॥ न०॥ लब्धें कही ए वारता मीठी, जेहवी शास्त्रमां दीठी रे ॥ २९ ॥ न० ॥ इति श्री जीवदयापरे हरिबलच रित्रे पुण्याधिकारे तृतीय उल्लासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ उल्लासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिणंद ॥ दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख वृंद ॥ १ ॥ तस पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परभात ॥ केवल कमला पामियें, देखियें विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें चंद ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा नमुं, विनवुं बे कर जोडि ॥ मुज मन मंदिरमें वसी, पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल मछी रायनो, प भणुं चोथो उल्लास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुवो, ते सुणजो इक मन्न ॥ हरिबल गुण सुणतां थकां, होवे पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिबल कीधो ठार ॥ काढ्युं शल्य जीवित लगें, उपनो हर्ष अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुज अपछरा, प्रभुयें दीधी हत्र ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुज जीवित सुकयत्र ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥ वज्री सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥ को नवि जाणे राजमें, तिम चाल्यो धरी आश ॥ रज

नी थइ घडि दो समे, पहोतो मही आवास ॥१०॥ दूरथी नृपधणी आवतो, वसंतसिरीयें दीठ ॥ शान करी निजकंतने, हरिबलगृहमें पइठ ॥११॥ एटले महिपति आवियो, दो नारीनी पास ॥ कुमरी तव उठी तुरत, आसन आप्युं तास ॥ १२ ॥ आगत स्वागत घणि करी, मुखथी साकर घोल ॥ कर जोडी दो उभी रही, कारिमो करी रंगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महिनाथने, केम पधार्या स्वाम ॥ ते कारण मुजने कहो, खोली मन अभिराम ॥ १४ ॥ हमणां पियु गयो य स घरे, राखवो लोकाचार ॥ अध्यवसाय जे मन तणा, कही पहोंचो दरबार ॥१५॥ मुज मंदिर स्वामी तुमें, आव्या हो महाराय ॥ पण मोशीने घर वाघलो, कहो ते केम समाय ॥ १६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ तव हरखित थइ रा
बोल्यो ते ॥ विषयी त ॥
१ ॥

तुमची नावे जोड ॥ वि० ॥ तुम सुघडाइ देखीने रे, वाध्यो मोहनो गोड ॥ ३ ॥ वि० ॥ ते दिनथी नवि वीसरो रे, दो नारी तुमें चित्त ॥वि०॥ जीव रहे चरणां बुजें रे, तुमचे अविहड हीत ॥ ४ ॥ वि० ॥ ज्युं धरे ध्यान जोगीसरा रे, तिम धरुं तुमचो ध्यान ॥ वि० ॥ सास उसासमें सांजरो रे, शत वार तुम गुण थान ॥ ॥ ५ ॥ वि० ॥ ते गुणनो लीनो थको रे, आव्यो डुं धरी हूंश ॥ वि० ॥ एहमां जूठ न जाणजो रे, सत्य कहुं तुम सूंस ॥ ६ ॥ वि० ॥ कांइ न करशो शोचना रे, चतुर तुमें गुणधाम ॥ वि० ॥ वाणी सुधारस सांजली रे, द्यो मन सुख अजिराम ॥ ७ ॥ वि० ॥ तन धन जोवन पामीने रे, लीजें मनुजव लाह ॥ वि० ॥ पामी अवसर चूकशे रे, तस रहेशे दिल दाह ॥ ८ ॥ वि०॥ यौवनवय सुख पामीने रे, जे नही माणे पूर ॥ वि०॥ वननां कुसुम तणी परें रे, ते रहेशे मन फूर ॥ ॥९॥वि०॥ जीवित सूधी तुम तणुं रे, पालसुं निशिदिन वेण ॥ वि० ॥ हरिवलनी परें राखशुं रे, तन मन करीने सेण ॥ १० ॥ वि० ॥ तुम अम वचें कोइ वातनो रे, वहेरो न राखियें कोय ॥ वि०॥ मुऊ मन प्राणनि कुंजमें रे, राखुं तुमने दोय ॥ ११ ॥ वि० ॥ माहारी

हती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्भ ॥ वि० ॥
जो तुमें आपशो हेतशुं रे,ते सही जमशुं अम्म॥१२॥
वि० ॥ कोइ वातें डहवुं नही रे, माहरी करीने जी
ह ॥ वि० ॥ सवशुं कमल हर्दे धरी रे, नाव रह्यो
मुझ गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे,
नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो
रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
॥ वि० ॥ कामें केइ नर ठेतर्या रे, कहेतां नावे पार ॥
॥ वि० ॥ काम वशें मग्न कूपकें रे, पड्यो ललितांग
कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवशें थयो नारकी रे,
सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
पहोतो दरीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
ईश्वरु रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां बूड्या
बापडा रे, कुण ते रांक ने ठीक ॥१८॥ वि० ॥ जनम
लग्यन गीतमां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
नारीनां जोडलां रे, गावे उत्तम ठाम ॥ १९ ॥ वि० ॥
कामिनी कामना कूपमें रे, बूड्यो सहु संसार ॥
॥ वि० ॥ केवलज्ञानें खोलता रे, दीठो कामकुमार

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख ली चवद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुर्ड श्रेणिक रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते वीरनी चेलकी रे, वली छत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥ समवसरणें अशुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥ वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस वाम ॥ २३ ॥ ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेहुं गयो रे, म करो निंद कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विपयर्न संज्ञा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस ध खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लहे ते प्राणीया रे, जीवे एकेंद्रि मझार ॥ २५ ॥ वि० ॥ कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥ तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥ ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या क मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि सांजलो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ।

वती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्म ॥ वि० ॥
जो तुमें आपशो हेतशुं रे,ते सही जमशुं अम्म॥१२॥
वि० ॥ कोइ वातें डुहवुं नही रे, माहरी करीने जी
ह ॥ वि० ॥ सवळुं कमल हदें धरी रे, जाव रह्यो
मुफ गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे,
नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो
रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
॥ वि० ॥ कामें केइ नर ठेतस्या रे, कहेतां नावे पार ॥
॥ वि० ॥ काम वशें मल कूपकें रे, पड्यो ललितांग
कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवशें थयो नारकी रे,
सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
पहोतो दरीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
ईश्वरु रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां बूड्या
बापडा रे, कुण ते रांक ने ढीक ॥१८॥ वि० ॥ उत्तम
मध्यम गीतमां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
नारीनां जोडलां रे, गावे उत्तव गाम ॥ १९ ॥ वि० ॥
कामिनी कामना कूपमें रें, बूड्यो सहु संसार ॥
॥ वि० ॥ केवलरयणने खोलवा रे, दीठो कामकुमार

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, खली चउद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुई श्रेणिक रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते वीरनी चेलकी रे, वली बत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥ समवसरणें अशुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥ वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस गाम ॥ २३ ॥ ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेहुं गयो रे, म करो निंदा कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी संज्ञा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धाखना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही ते प्राणीया रे, जीवे एकेंद्रि मझार ॥ २५ ॥ वि० ॥ कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥ तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥ ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या कामथी दूर ॥ वि० ॥ हुं वलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि सांभलो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी राणिणी रे, चीलणा रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख ली चउद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुर्ड श्रेणिक रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते वीरनी चेलकी रे, वली छत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥ समवसरणें अशुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥ वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस ठाम ॥ २३ ॥ ॥ वि० ॥ मत्त को कोइ नेहुं गयो रे, म करो निंदा कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी संज्ञा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धा रुना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही ते प्राणीया रे, जीवे एकेंडि मझार ॥ २५ ॥ वि० ॥ कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥ तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥ ॥ वि० ॥ धन धन ते जव्य जीवने रे, जे रह्या का मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे जवि सांजलो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

ठती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्म ॥ वि० ॥
जो तुमें आपशो हेतशुं रे,ते सही जमशुं अम्म॥१२॥
वि० ॥ कोइ वातें डुहवुं नही रे, माहरी करीने जी
ह ॥ वि० ॥ सवलुं कमल हदें धरी रे, जाव रह्यो
मुफ गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे,
नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो
रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
॥ वि० ॥ कामें केइ नर ठेतख्या रे, कहेतां नावे पार ॥
॥ वि० ॥ काम वशें मल कूपकें रे, पड्यो ललितांग
कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवशें थयो नारकी रे,
सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
पहोतो द्वीपा पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
ईश्वर रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां खूच्या
[illegible] रे, कृष्ण ने [illegible] ने [illegible] ॥१८॥ वि० ॥ [illegible]
[illegible] रे, [illegible] ते पण काम ॥ वि० ॥ [illegible]
[illegible] रे, [illegible] ॥ १९ ॥ वि० ॥
[illegible] रे, [illegible] सहु संसार ॥
कामिनी [illegible] रे, [illegible]
॥ वि० ॥ [illegible] रे, दीठो [illegible]कुमार

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, खली चवद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुई श्रेणिक रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते वीरनी चेलकी रे, वली छत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥ समवसरणें अणुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥ वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस ठाम ॥ २३ ॥ ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेहुं गयो रे, म करो निंदा कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी संज्ञा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धा खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही ते प्राणीया रे, जीवे एकेंद्रि मझार ॥ २५ ॥ वि० ॥ कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि०॥ तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥ ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या का मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि सांभलो रे, बोले दो कुमरी वाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी वाणी सांजली,बोली कुमरी ताम ॥ ए शुं
बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ मह्टो
टी मतिना ठो धणी, ए शी कीधि अकह्न ॥ विण तेडे
स्वामी तुमें, आव्या थइ वेकह्न ॥ २ ॥ एम न कीजें
नाथजी, ठोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें,
नवि पेसीजें जत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम ठे जंवनुं, जेहमें
जांगे जार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमे
सार ॥४॥ परणी घरणी जे हुवे, तेहने चढावो पाड
॥ खाशे ते खमशे प्रत्तु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥
परडुःख नंजन राजवी, ए ठे तुम्म बिरुद ॥ परनारी
सहोदरु, ते किम ठंम्रो हद ॥६॥ हुं परजा असें तुम
तणी, बेटा बेटी समान ॥ अण घटती ए वातडी,
केम करो राजान ॥ ७ ॥ वाहार जोइयें जिहांथकी,
तिहांथी आवे धाड ॥ कहो ते कुण आगल
कहे, जे निज डुःखनी राड ॥८॥ आवला जाणी ए
कली, जाण्युं ते माखी मध ॥ शुं जाणीने आवी
या, लेवा रमणी रुध ॥ ए ॥ कंत विहूणी कामिनी,
जाण्युं ते महिराण ॥ पण मुफ मनडुं हाथ ठे, तेणें
हुं सपराण ॥१०॥ लोक उखाणो पण कहे, जो होय

देख्युं हाथ ॥ काम हुवे तो विहुं दिशें, जइयें पिंगा साथ ॥ ११ ॥ एक तो माहरा कंतने, मूक्यो जम घर श्रज्ञ ॥ वली शुं करवा आवीया, थइ नकटा निर्लज्ज ॥१२॥ तुमें तो महारा तात छो, एवा म कहो बोल ॥ सो वातें एक वातडी, सती न चूके तोल ॥ १३ ॥ एहवां वयण ते सांजली, प्रगटी नृपने जाल ॥ क्रोधा नलनी श्राफमां, सीकि गयो ततकाल ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तुं तो पाधरुं बोल शीपाइडा ॥ ए देशी ॥ तव खीज्यो नृप नराडो, जिम आगें हाथी हराडो, बोल्यो थइ लाडो रे, दो कुमरीशुं रोष धरी खरो ॥ तुमें सांजलो दोय सहेली, तुम लेखवुं मोहनवेली, चालो थइ वे हेली रे, मुज मंदिर महेल मूकी परो ॥ १ ॥ तुमें पाधरुं बोलो राजनजी, तुमें वांकुं म बोलो राजनजी, नारी पीयारी रे, राजनजी थाहरी को नही ॥ सेना विहूणी जाणी, पण मनथी हुं सपराणी, जांखे इम वाणी रे, दो कुमरी नृपने मुखें रही ॥ २ ॥ तु० ॥ तुम मन तो रहेशे दूरें, श्रम जाएणुं थाशे सनूरें, जांखे मद पूरें रे, नृप कामातुर थइ घणो ॥ नृप आकुल व्याकुल थाय, जिम जल विना मछ तडफाय, देखी तव

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी वाणी सांजली, बोली कुमरी ताम ॥ ए शुं
बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ महो
टी मतिना गो धणी, ए शी कीधि अकच्च ॥ विण तेडे
स्वामी तुमें, आव्या थइ वेकच्च ॥ २ ॥ एम न कीजें
नाथजी, गोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें,
नवि पेसीजें जत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम बे लंगनुं, जेहमें
नांगे नार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमें
सार ॥४॥ परणी घरणी जे हुवे, तेहने चढावो पाड
॥ खाशे ते खमशे प्रन्तु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥
परडुःख नंजन राजवी, ए बे तुम्म विरुद्द ॥ परनारी
सहोदरु, ते किम बंमो हद्द ॥६॥ हुं परजा असें तुम
तणी, बेटा बेटी समान ॥ अण घटती ए वातडी,
केम करो राजान ॥ ७ ॥ वाहार जोइयें जिहांथकी,
तिहांथी आवे धाड ॥ कहो ते कुण आगल
कहे, जे निज डुःखनी राड ॥७॥ आवला जाणी ए
कली, जाण्युं ते मारवी मढ ॥ शुं जाणीने आवी
या, लेवा रमणी रुढ ॥ ए ॥ कंत विहूणी कामिनी,
जाण्युं ते महिराण ॥ पण मुज मनडुं हाथ बे, तेणें
बुं सपराण ॥१०॥ लोक उखाणो पण कहे, जो होय

तव में ए दाक काढी परी ॥ ८ ॥ तु० ॥ मुझ आगल
थवे किहां जाशो, तुम करणी तुमेंहिज पाशो, मा
क घणुं थाशो रे, जिम तस्कर संधि मुखें ग्रहे ॥
जो मुझने करशो राजी, तुम राखिश अहोनिश ता
जी, रहेशो तुमें गाजी रे, अगंजी मुझ चित्तशुं वहे ॥
॥९॥ तु०॥ अहि आगें मेडकुं जेते,हरि आगें मृग जाय
केते,जाय कहो केतें रे,बाज आगें चडकली दोडीने॥ति
म तुमेंहीज नामिनी नोली, तुमें रहेशो आंख्यो चोली,
जाशो किहां रोली रे, मुझ आगलें डिंग ते गोडीने ॥
१०॥तु०॥ तव कुमरी नांखे बोल,नृप दीसो गो फूटा
ढोल,निगुण निटोल रे,वडा दीसो गो कोइ तुमें ॥ क
हे कुमरी रीपें भंभेरी, जिम कूदे कच्ची वछेरी, नाखुं
नस वेरी रे, नरपतिजी हुं अवला अमें ॥ ११ ॥
तु०॥ के शुं नृप हियडो फूटो,के शुं तुम जगदीश रू
गो, के शुं कांइ खूटो रे, तुम सालोसाल हतो जिके
॥ तुमें शुं नृप आप वखाणो, तुमें अवलाशुं मत
ताणो, अवलायी जाणो रे, केइ हास्या नर बलीया
तिके ॥ १२ ॥ तु० ॥ तुमें सुणो परदेशी राजा, जे
हनी हती महोटी माजा,तेहनी ते नार्यां रे, स्त्रीकें
तोयें नख देइ हण्यो ॥ वली जितशत्रु महिनाय, हतो

परजनी महोटी आय, राणीयें ज्ञरी वाय रे, पियु ना ख्यो जलनिधिमें लुख्यो ॥ १३ ॥ तु० ॥ ए तो इत्या दिक नर वलीया, पण नारी आगलें गलीया, तो शुं तमें वलीया रे, अम आगल नरपति शुं वको ॥ अम च रित्रथी को नवि जीत्यो, त्रीजगने नाख्यो चीतो, सु र नर खूतो रे, स्त्री आगल को नवि जक्यो ॥ १४॥ ॥ तु० ॥ सिद्ध साधक जे होय जाण, तेहनां अमें चुकवुं वाण, एकादश गुणगाणें रे, अमें पाडुं तिहांथी नरज्ञणी ॥ अमें जातें हुं स्त्री जूंफी, अमें चालती नरकनी कूंफी, हुं अमें हूंफी रे, ए तो चाल ती नव दंमक तणी ॥ १५ ॥ तु० ॥ तेमाटें नृप तु म आखुं, अमें कूडुं कदिय न जांखुं, चपटीमें नाखुं रे, जमाडी खोखुं नहि जडे ॥ अमें सतोष न चुकुं वाडुं, अमें दीठो ते आ राडुं, बीजो न चाडुं रे, नरपतिजी सुरगिरि जो पडे ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुम करवुं होय ते करजो, धन लेई पोतुं जरजो, पण में तुम वर ज्यो रे, ए तो पहेलां दासी आवी हती ॥ तव में तत काली कूटी, जिम घरथी हांसी फूटी, दासीने में लूंटी रे, में मूकी तुम घर दीठने ॥ १७ ॥ तु० ॥ तुम अलिवल स्यानलां नाखो. तुम बल तुम स्त्रीने

राख्यो,बांधी मूकी राख्यां रे, नरपतिजी मत नेटो कोइ ने ॥ तुम कुल मरजादायें चालो,जिम तुमें मंदिरमां मालो, मूक्या तुमें ल्याजो रे, नरपतिजी परस्त्री जोइने ॥ १८ ॥ नुं० ॥ तव सांचली नरपति कोप्यो, क्रो धारुण अग्निमें रोप्यो, कामें करी लोप्यो रे,नृप निर ह्मनल दाझी गयो ॥ तव नृपनी दुर्मति झाली, मुख कुमरीने कर गाल, कीधी नृपें काली रे, दो कुमरोशुं द्वेषी थयो ॥ १९ ॥ तु० ॥ तव कुमरी रोगें दाधी, नृपने तिहां काढयो बांधी, जकडबंध बांधी रे, नृप नाख्यो बंधे मस्तकें ॥ थे गडदा पाटु प्रहार, करे मुद गरना प्रहार॥ दासी मली मारे रे, ए तो नृपने जवड जस्त के ॥ २० ॥ तु०॥ नृप पाडे बहुली चीस, कहे तोबां मुख जगदीश, कुमरी ते रीपें रे, ए तो नृपना पाड्या दांतडा ॥ वली त्रोडे नृपनी मूछ, फल लेतो जा तुं तुछ, कुमरी दो पूछे रे, नृप किहां गयुं बल तुम जातडा ॥ २१ ॥ तु० ॥ ए तो कुमरीयें नृपने रांक, कस्यो पूरो कुंदीपाक, काने पडी धाक रे, सुन कारें नृप चढयो हेडकी ॥ कुमरी हणे नृपने तमाचे, तेतो हरिवल केरी साचें, गारुडीयी नाचे रे, ए तो फणिधर माथे देडको ॥ २२ ॥ तु० ॥ नृपने कस्यो

घणो उपसर्ग,नृप जाणे पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गें रे,नृपपाणी उताखुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप बोल्यो मान संकोडी, मूको मुफ छोडी रे, हुं आज थी अनीति नहिं करुं ॥ तु० ॥ इम करतां थयो प रजात, जाणी धीवरें सघली वात, मछीनी जाती रें, हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो चोथा उल्लासनी मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीठी रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ २३ ॥ तु० ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥ फलरिना फणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥ दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ पराधी तुम तणो, तुं मुफ बंधन छोड ॥२॥ हुं मूरख तुमशुं थयो, सतीशुं घाली बाथ ॥ जेहवी करि ते हवी लही,वृद्ध पणानी आथ ॥३॥ जाणशुं तो घणी ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणे जाउं गृहे, जि म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पड्यो कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो पाधरो नेत्र ॥ ५ ॥ सतीयोने दुःख दाखवी, जे कीधो अपराध ॥ ते तुमें खमजो मातजी,हुं छुं तुम सुत साध ॥६॥ इत्या

दिक वचनें करी, रीझवी कुमरी दोय ॥ बंधनथी जो
ड्यो परो, मदनवेग नृप सोय ॥ ७ ॥ गुप्त पणे नृ
प तिहां थकी, आव्यो निज गृह मद्य ॥ मुख पो
थावो आवियो, निगुण थइ निर्लज्ज ॥ ८ ॥ जिम
कोठीमें मुख घालीने, रोवे तस्कर मात ॥ तिम नृप
रोवे मन्नमें, जे लह्यो प्रछन्न घात ॥ ए ॥ जाण्युं हतुं
सुख मालशुं, दो प्यारीनी साथ ॥ लेणेथी देणे पडी,
खाली पडी नरी वाथ ॥ १० ॥ जे नर मूरख वापडो,
देखी परायो माल ॥ लेवा जाये दोडीने, ते थाये पें
माल ॥ ११ ॥ ते करणी नृपने थइ, मनमें रह्यो
फूर ॥ मुख दीवाली दाखवे, वहे मन होलीपूर
॥ १२ ॥ रमणीथी मन वालीयुं, मूकी ममता दूर ॥
राज काज नृप चालवे, दिन दिन चढते नूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ धण समरथ पियु नानडो ॥ ए देशी ॥ हवे कुम
री दो कंतने, कहे कर जोडी सुणो सुलतान ॥ सजनी
नृपने काढयो कूटीने, जिम हांकोटी काढे श्वान ॥१॥
सांजलो प्रीतम माहरा, तुम परसादें वाध्युं जोर ॥
ढिंक पाटुना प्रहारथी, मजबुत काढयो ज्युं करी ढोर ॥
२ ॥ सां० ॥ जीवित लगें नृप जाणशे, खटकशे निशि

घणो उपसर्ग,नृप जाणे पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गे रे,नृपपाणी उताखुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप बोल्यो मान संकोडी, मूको मुफ गेडी रे, हुं आज थी अनीति नहिं करुं ॥ तु० ॥ इम करतां थयो प रजात, जाणी धीवरें सघली वात, मल्लीनी जाती रें, हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो चोथा उल्लासनी मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीठी रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ २२ ॥ तु० ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥ फलरिना फणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥ दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ पराधी तुम तणो, तुं मुफ बंधन गेड ॥२॥ हुं मूरख तुमशुं थयो, सतीशुं घाली बाथ ॥ जेहवी करि ते हवी लही,वृद्ध पणानी आथ ॥३॥ जाणशुं तो घणी ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणे जाउं गृहे, जि म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पड्यो कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो पाधरो नेत्र ॥ ५ ॥ सतीयोने दुःख दाखवी, जे कीधो अपराध ॥ ते तुमें खमजो मातजी,हुं छुं तुम सुत साध ॥६॥ इत्या

ज्योति निवास ॥११॥सां०॥ नर नारी सोहे सत्यथी, सत्यथी माने सहु संसार ॥ सत्यथी चूके जे मानवी, नव दंमक लहे ते निरधार ॥ १२ ॥ सां० ॥ शिरनामें लखे कागलें,साडी चम्मोतेर आंक जे दोय ॥तेहमें पण जन पंमितें, सत्य वराव्युं लोकमे जोय ॥ १३॥सां०॥ सत्य मत छोडे मित्र तुं, चोगडे लछी चोगणी होय ॥ सुख डुःख रेखा दो कर्मनी, टाले पण न टले होय॥ १४॥सां०॥ इणि परें पण लौकिक मतें,सत्यथी पामे सुखनी रेख ॥ मानवी चूके जो सत्यथी,तो लहे डुःखनी रेखा देख ॥१५॥सां०॥ सतीया सत्त न छोडीयें, सत्त छोडे पत जाय ॥ सत्तनी वांधि लछी ते, आवे सन्मुख धाय ॥ १६ ॥ सां० ॥ नृदेव नामें द्विज थयो, तेणें न मूक्युं सत्य लगार ॥ दश दोकडा नृप दानथी, सत्यथी लह्यो ते अखुट नंमार ॥ १७ ॥ ॥ सां० ॥ धण कण कंचण पामीयें, ते पण सत्य तणो परजाव ॥ मनवंछित महिला मिले, सतिय शिरोमणि शुद्ध सुनाव ॥ १८ ॥ सां० ॥ शोल सती थइ मोटकी, ते पण अद्यापी गवराय ॥ सत्य जो राखे आपथी, जिनवर ते पण सूत्रें चढाय ॥१९॥ सां०॥ त्रेशठ शिलाका पुरुष ते, सत्यवादी थया थाशे अने

दिन कालजे साल ॥ निराशी थइ दीन ते मारनी, पूंजी ले गयो माल ॥ ३ ॥ सां०॥ साजी हलदर फट कडी, सेववी पडशे मास बे चार ॥ मम्मइ अशेलीयो, खाशे त्यारें थाशे करार ॥ ४ ॥ सां० ॥ इत्यादिक श्रवणें सुणी, हरिबल नारीनां करय वखाण ॥ सुकुलीणी साची तुमें,पणधारी में दीठी सुजाण ॥५॥ सांजलो प्यारी माहरी ॥ ए आंकणी ॥ तुमें ठो आत म जीवन प्राण ॥ आंखनी कीकी ठो तुमें, तुमें ठो महोटां घरनां मंमाण ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुलवधूनां ए चिन्ह ठे, पियुशुं राखे मनह पवित्त ॥ कष्ट पडे कें इ जातिनां, तो पण सतीय न मूके सत्त ॥ ७ ॥ सां० ॥ सत्य वडुं संसारमां, सत्यथी वरशे जग ज ल धार ॥ सत्यथी पृथिवी थिर रहे, धूतारी रहे सत्य आधार ॥ ८ ॥ सां० ॥ सुरगिरि पण रहे सत्यथी, सत्यथी शशि रवि चाले आकाश ॥ पृथिवी पण फ ले सत्यथी, वणसइ जार अढार उल्लास ॥ ए ॥ सां० ॥ वणज व्यापार चाले वहु, हुंमी चाले देश प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कह्युं सत्य विशेष ॥ १० ॥सां०॥ केवली केवल सत्यने,त्रिगडे वे सी करेय प्रकाश ॥ धर्मनुं मर्म ते सत्य ठे,सत्यथी पामे

॥ सां० ॥ ए मुडायें कामिनी, कालने घालानुं ने का म ॥ काल जूनो ले संसारमां, कालथी बिगडे केहिनां गाम ॥ २९ ॥ सां० ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, स मख्यो सागरसुर उजमाल ॥ लब्धि कहे शुन सत्यनी, चोथा उल्लासनी त्रीजी ढाल ॥ ३० ॥ सां० ॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल हरखें करी, समख्यो सागर देव ॥ ते पण ततखिण आवियो, कहो वछ किम समरेव ॥ ॥ १ ॥ तव हरिबल कर जोडिने, सुरने कहे सोछाह ॥ कालसेन कम जातिने, द्यो तुमें अग्निमांह ॥ २ ॥ शल्य काढो प्रजु माहरुं, जिम लहुं सुख जरपूर ॥ वि ण खूने मुजने नडे, तेहने टालो दूर ॥ ३ ॥ हरिब लनी वाणी सुणी, थयो तव सुर परसन्न ॥ हरिबल केरी कांतिमें, संक्रम्यो सुर तस तन्न ॥ ४ ॥ दिव्यां वर पहेरी करी, पहेरी जूषण चंग ॥ दिव्य रूप हरि बल तणुं, कीधुं सुरसम अंग ॥ ५ ॥ हरिबल पासें सुर करे, वैक्रिय बीजुं रूप ॥ नज मारगथकी उतरी, आवि दो जेटे नूप ॥ ६ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, हरखित परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मलिया बांह पसार ॥ ७ ॥ नृप मंत्रीने प्रगटीयुं, महोटुं ॰

[illegible] कामी आवो गुणें, आपणो गुणो [illegible] कि
[illegible] ॥ ३६ ॥ गी० ॥ [illegible] पर रुचियो नारीन, [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] करी, [illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ गी० ॥ [illegible] गमार्यं [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥ गी० ॥
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥ गी० ॥ [illegible], करी
[illegible] ॥ [illegible]

मुजने जीवित दीध हे ॥ २४ ॥ रं० ॥ आगत सागत घणि करी, मुजने ते धर्मराज हे ॥ सोक समाचार तुम तणा, पूछे ते यमराज हे ॥ २५ ॥ रं० ॥ तव में तिहां कर जोडीने, यमने करि अरदास हे ॥ आव्यो छुं एक राजथी, तेडवा तुम उल्लास हे ॥ २६ ॥ रं० ॥ विशाला पुरनो धणी, मदनवेग ते राय हे ॥ अंग जने परणाववा, उछव महोटो कराय हे ॥ २७ ॥ ॥ रं० ॥ देश देशाउरि राजवी, मेलशे महोटा राज न्न हे ॥ वैशाख शुदि पांचम दिनें, परणशे पुत्र रत न्न हे ॥ २८ ॥ रं० ॥ ते माटे तुम तेडवा, मूक्यो छे मुज आज हे ॥ तुम आवे प्रज्ञु जगधणी, वधशे म होटी लाज हे ॥ २९ ॥ रं० ॥ इणि परें अरज ते सां नली, बोल्यो यम ततकाल हे ॥ चोथी चोथा उल्ला सनी, लब्धि कही ए ढाल हे ॥ ३० ॥ रं० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरखित थइ यमराजजी, बोल्यो मुखथी मि ष्ट ॥ यम कहे हरिबल तुम धणी, छे मुज मननो इष्ट ॥ १ ॥ पण तुम नृप मुज मंदिरें, जो आवे इक वार ॥ त्यार पछें मुज आवबुं, थाशे तव निरधार ॥२॥ अवली गंगा जो वहे, तो मुजथी अवराय ॥ डुनियां

॥ रं० ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल हे ॥ चित्र विचित्र दो दफतरी, पुण्य पाप लिखत विशाल हे ॥ १५ ॥ रं० ॥ डुनीयां जे करणी करे, सुकृत डुःकृत देख हे ॥ चित्र विचित्र ते मांमिने, दाखवे यमने लेख हे ॥ १६ ॥ रं० ॥ ते करणी यम देखीने, घे डुनियाने शीख हे ॥ सुकृतने सुख दाखवे, डुःकृतने दे नीख हे ॥१७॥रं०॥ ईति उपद्रव जगतने, मर्कीना जे रोग हे ॥ काल डुकाल तें जे पडे, ज्वरना मेलवे जोग हे ॥ १८ ॥ रं० ॥ पूर्वज व्यंतरी व्यंतरा, वलगे ते सनमुख हे ॥ ए सवि करणी यम तणी, डुनियां जे लहे डुःख हे ॥ १ए ॥ रं० ॥ रूसे जो यम जगतने, दाखवी नारकी घात हे ॥ तूसे तो यम ने हणुं, आपे ते सुख शात हे ॥ २० ॥ रं० ॥ जोरो घणो यमराजनो, कहेतां नावे पार हे ॥ यमनो विचार विशेष हे, नगवतीमांहे विस्तार हे ॥ २१ ॥ ॥ रं० ॥ लौकिकने मतें जे सुणो, तेह में दीवो सत्य हे ॥ तेह सनामें हुं गयो, यमने करी प्रणिपत्य हे ॥ ॥ २२ ॥ रं० ॥ ततखिण यमें मुज उंलख्यो, अवधि ज्ञानें सार हे ॥ देव शक्ति करी मुजने, फरी दीधो अवतार हे ॥ २३ ॥ रं० ॥ नौतन काया माहरी,

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फतमलनी देशी ॥ नरपति सांजलो माहरी वाण, आसोमन्न वेधक कहे.॥न०॥ ठे जगमें यमराण, त्रिजग आणा शिर वहे ॥ १ ॥ न० ॥ तेणें मुफ तुम संग, मूक्यो तुम आमंत्रवा ॥न०॥ राखी मने बहु रंग, चालो तुमें स्वर्ग पंत्रवा ॥२॥न०॥ ठे मनमें घणी होंश,मिलवा तुम यम नाथने.॥न०॥ दीधा ठे घणा सुंस, वेगें पधारो लेइ साथने ॥ ३॥ न० ॥ मंत्रि प्रमुख परिवार, तुम नगरीमें जे होवे ॥ न० ॥ ल्यो तुम साथ विस्तार, सुरलोक नर नारी जोवे ॥ ४ ॥ न० ॥ तुम मन वंछित होय, रमणी रुद्धि दो पावशो ॥ न० ॥ अजरामर पद जोय, सो पण लहेशो जो आवशो ॥ ५ ॥ न० ॥ म करो ढील लगार, शीघ्र थाउ तुमें नूधणी ॥ न० ॥ यम नृप तुमशुंजी प्यार, राखे ठे एकंगो तुम नणी ॥ ६ ॥ न० ॥ इणिपरें सुर ते वदंत,हरिबल शाखा नेदयी ॥ न०॥ सांजली मन हरखंत, यमना संदेशा उमेदयी ॥ ७ ॥ न० ॥ धन घडी धन मुफ दीस, यमशुं थयो मुफ नेहलो ॥ ॥ न० ॥ सज थइ विशवावीश, यम कने जाउं जो वेहलो ॥ ८ ॥ न०॥ पूठी यमने संदेश, मननी ब्रांति

माने मुझने,करि परमेसर गाय ॥३॥ तेमाटे हरिबल
तुमें, कहेजो नृपने एम ॥ एक वार मुझ मंदिरें,आवो
ज्युं करि तेम ॥ ४ ॥ जो सेवक साचो हुवे, तो ले
नगरी साथ ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, मदनवेग महि
नाथ ॥ ५ ॥ मुझ मंदिरनी रसवती, कबुल करेशो
आय ॥ तव तुम मंदिर चाहिने, आवीशुं अमें धाय ॥
॥ ६ ॥ एह संदेशो अम तणो, हरिबल कहेजो तु
म्म ॥ तुम नृपने अम तेडवा, मूकुं ए नृत्य अम्म
॥ ७ ॥ वलि तुमें शाता पूछजो, कहेजो अम्म जु
हार ॥ जो आशा करो अम तणी,आवजो सर्ग मझार
॥८॥ एम कही सनमानिने, पहेरावी शणगार ॥ वो
लावी अमने वल्या, यमराजा हितकार ॥९॥ देव प्र
भावें ततखिणें, जोतां एक पलक्क ॥ तुम पासें अमें
आविया, जोई सर्ग हलक्क ॥१०॥ यमनृपनो ए नृत्य
छे, आसोमछ नामें सनूर ॥ आमंत्रण करवा भणी,
आव्यो तुम्म हजूर ॥ ११ ॥ इणिपरें हरिवलें मांझीने,
कह्या संदेशा जाम ॥ मदनवेग राजी थयो, ते निसुणी
अभिराम ॥ १२ ॥ तिणे अवसर तक जोइने, सुरनें
कीधी शान ॥ सुर वोल्यो जमनो थइ, सांभलो तुमे
राजान ॥ १३ ॥

मक करतां रे एम, नागर जन सहु संचर्यां ॥ न० ॥ हरिवल ने सुर तेम, ते पण साथें नीसर्या ॥ १८ ॥ ॥ न० ॥ तिल जेटलो नहि माग, एटली मांधाता म ली ॥ न० ॥ चय सुधी पामी ते लाग, तव हरिवल मन अटकली ॥ १९ ॥ न०॥ मह्रीयें जाणी ते वात, सही तो ए नृप कांठे चढे ॥ न० ॥ अंतेउरी पण साथ, ते पण जइ वासें चढे ॥ २० ॥ न० ॥ बीजा नगरजन सर्व, ते पण नृपनी केडें चढे ॥ न०॥ तव होवे पापनुं पर्व, घोर करणी बहु नव नडे ॥ २१ ॥ ॥ न० ॥ हरिवल चिंते रे ताम, ठे मुऊ वयरी जे माहरे ॥ न० ॥ बीजानुं शुं काम, काम ठे एकनुं मा हरे ॥२२॥न०॥ देउं उपाडी तास, चिता अग्नीनी ऊा लमां ॥ न० ॥ निकले जमनो पास, एव जायें यम शालमां ॥ २३ ॥ न० ॥ चिंतवी इम अनेदान, देउं नृपादिक जंतुने ॥ न० ॥ गुरु उपदेशने मान, जी वित देउं बीजा संतने ॥ २४ ॥ न० ॥ इम जाणी ततकाल, सलगाडी चिंता तिण समे ॥ न० ॥ नल लगें प्रगटी त्यां जाल, देखत कायर मन नमे ॥ २५ ॥ ॥ न० ॥ नृप कहे करी शणगार, वाजित्र महोटे वाजते ॥ न० ॥ पेसे ते अगनी मऊार, तव हरिवल

टाळुं परी ॥ न० ॥ यमशुं वधारी नेह,अमरपणुं ते लहुं खरी ॥ ए ॥ न० ॥ नगरमां पडहो वजाय, घरोघर लोकने नोतर्यां ॥न०॥ नर नारी हर्षे नराय, यमघर जावाने परवर्या ॥ १० ॥ न० ॥ निर्धन वि रहिणी नार,बालरंभादि दो नागिया ॥न०॥ जाणे जम दरबार, जाइने थइयें सोन्नागियां ॥ ११ ॥न०॥ वां जीया वांढा वेकार, डुःखीया स्त्री सुत कारणें ॥ ॥ न० ॥ ते पण उमह्या अपार, जावाने यम बा रणें ॥ १२ ॥ न० ॥ रोगीने डुःखीया जेह, लुला टूं टा ने पांगला ॥न०॥ कोढीया काला तेह, काणा कौं चा ने आंधला ॥ १३ ॥ न०॥ बाल तरुण जे वृद्ध, सज्ज थयां मोकर मोकरी ॥ न० ॥ अमर पदवी पर सिद्ध, ले आवो यमने नोरो करी ॥ १४ ॥ न० ॥ इक इकनी माहोमांहे, उपरा उपर पडी चहे ॥ न० ॥ जावाने स्वर्ग उठाह, जमण लाडु खावा गह गहे ॥ ॥ १५ ॥ न० ॥ इणिपरें नगरीनां लोक, यमनणी जावाने हलफले ॥ न० ॥ नृप पण यम सारु ढोक, लेइने नृप पण नीकले ॥ १६ ॥ न० ॥ अंतेउरी पण साथ, नृप संगें करी परवरी ॥ न० ॥ नेटवा ते य मनाथ, वत्रीश नृपकुली संचरी ॥ १७ ॥ न० ॥ थक

मझार ॥ नली कही इण नाकियें, श्राणी मन उप माह ॥८॥ तव नरपति कहे मंत्रिने, सांजल तुं कालसेन ॥ जमदरबारें जायवा, शीघ्र थाउ तुम तेण ॥९॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ नयन हमारे लालनां ॥ ए देशी ॥ तव हरखित मंत्री थयो, सांजलि नृपनी वात ॥ सनेही ॥ यमने मंदिर जायवा, थयो उत्सुक हरखात ॥ स० ॥ त०॥१॥ जाणे मंत्री मननमें, तुग मुज जगवान ॥ स० ॥ यम मंदिर हुं जाइने, मागुं वंछित दान ॥ स०॥ त०॥२॥ राजी करुं श्राद्धदेवने, लटपट करी गुण गेह ॥ स०॥ श्रमर पटो लेउं मागीने, रमणी ऋद्धि सुदेह ॥ स० ॥ त० ॥ ३ ॥ इणिपरें मंत्री श्रालोचीने, सज्ज थयो तिणिवार ॥ स० ॥ कर जोडी कहे रायने, मंत्री वयण उदार ॥ स० ॥ त० ॥ ४ ॥ यमनो जे पडिहार ठे, तें श्रावे मुज साथ ॥ स० ॥ तो जइ यमने नेटीयें, नरीयें वंछित बाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ५ ॥ तव नृप कहे पडिहारने, मुज मंत्री ले संग ॥स०॥ सर्ग जुवन पद दाखवा, मेलवो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥६॥ करी प्रणिपत माहरी तिहां, करजो मुज श्ररदास ॥ स०॥

कह्यो तो वडी असवारीशुं, आवुं तुमचे विसास ॥
॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥ कह्यो तो सहु नगरी तणो, सब
जो आवे साथ ॥ स० ॥ यम राजाने भेटवा, आवे
विशालानाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ८ ॥ इणिपरें विनती
मानजी, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ शीघ्रगतें तुम आ
वजो, यमनी रजा लेय ॥ स० ॥ त० ॥ ९ ॥ तव सु
र कहे ते रायने, जाणी कही तुमें गुज ॥ स० ॥ मुज
स्वामी यमनायने, मेलवुं मंत्री तुज ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १० ॥ एम कही पडिहार ते, मागी नृपनी शीख
॥ स० ॥ वेगे अगनी ज्वालमां, सहु जन देखत
ईख ॥ स० ॥ त० ॥ ११ ॥ मंत्री पण कालमेन ते,
नृपने कीध जुहार ॥ स० ॥ नगरी जन सहु साथने,
अगनी करे सहुकार ॥ स० ॥ त० ॥ १२ ॥ पेठो च
पनी ज्वालमां, मंत्री पण तेणि वार ॥ स० ॥ गुरु
[illegible] कालमेन ते, मंत्री बली थयो छार ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १३ ॥ नगरी जन सहु देखतां, मंत्री [illegible]
[illegible] ॥ स० ॥ [illegible] [illegible] राजाना यम

बे घडी चौ घडी, मंत्रीनी जोई वाट ॥ स० ॥ हजीय लगण आव्यो नही, नृप कहे शो थयो घाट ॥ स० ॥ ॥ त० ॥ १६ ॥ तव हरिबल कहे नृपने, शुं कहो स मकू थाय ॥ स० ॥ जे गयो यमने मंदिरें, ते किम आवे धाय ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ जे गयां मडदां मशाणमां, ते जो जीवतां थाय ॥ स० ॥ तो पाछो मंत्री इहां, आवे तुमचे पाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥ शी हवे एहनी चिंता करो, म करो मंत्रिनी तांत ॥ ॥ स० ॥ करणी जेहवी इणें करी, तेहवो लह्यो ते घात ॥ स० ॥ त० ॥ १९ ॥ विण खूने तुम मंत्रवी, लीधी माहरी केड ॥ स० ॥ तव में दीधो ए अग्निमें, यम मिशें ए करि जेड ॥ स० ॥ त० ॥ २० ॥ वली तुमने इणे कुमतियें, तुमचां भंगव्यां हाड ॥ स० ॥ दांत पडाव्या जे तुम तणा, ते तुम मंत्रीनो पाड ॥ ॥ स० ॥ त० ॥ २१ ॥ ए गुण मंत्री तुम तणा, हुं करुं केतां वखाण ॥ स० ॥ दुष्ट कुबुद्धि जे हतो, ते हनां में काढ्यां प्राण ॥ स० ॥ त० ॥ २२ ॥ एहनो धोखो मत करो, राखो मन नृप गोर ॥ स० ॥ मूक्यो में नारकी पांतिमां, सातमी जे कही घोर ॥ स० ॥ ॥ त० ॥ २३ ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहवी लहे

फलपत्य ॥ स० ॥ उंकण झुंकणनी परें, मेल्यो उखाणो सत्य ॥स०॥त०॥२४॥ कुण राणा कुण दूबला, करणी सारु होय ॥ स० ॥ कुगति सुगति लहे करणीयें, उत्तम मध्यम जोय ॥ स० ॥ त० ॥ २५ ॥ इणिपरें नरपतिजी तुमें, जो करशो अन्याय ॥स०॥ तो तुमची गति इणि परें, होशे वाउकी राय ॥स०॥ ॥ त० ॥ २६ ॥ इणिपरें वाणी सांभली, चमक्यो नरपति चित्त ॥ स०॥ सांभल रे भीत भाटिका, जाणी मह्रीनी रीत ॥ स०॥ त०॥ २७ ॥ मंत्रीनी लइ भस्मते, जल शरणें करी राय ॥ स० ॥ हरिबल कहे नृपपुर तणी, जाय अलाय बलाय ॥स०॥त०॥२८॥ इमकहि नृप मंदिरें, वलियो ते महिपाल॥स०॥ लब्धि कहीबही मर्मनी, चोथा उल्लासनी ढाल ॥स०॥त०॥२९॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपादिक नगरी जना, सहु समज्या मनमांहि ॥ ए करणी हरिबल तणी, जाणी सघले त्यांहि ॥ १ ॥ भली थई भावठ गई, विण उपधें विराध ॥ हरिबल केरा धर्मथी, हवे थइ सुख समाध ॥ २ ॥ इम कहेतां नगरी जनां, वलीयां निज घर लोक ॥ हरिबल साचो हीरलो, पुण्य तणो ए थोक ॥ ३ ॥ कालसेन कृपा

श्रमे, थाल्यो हरिवलें नीप ॥ जन दिये रंग वधामणां, घर घर घृतना दीप ॥ ४ ॥ सर्ग नरग दुनियां सुर्खे, नाखे सघली वात ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेह वी वहे ख्यात ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो कहे ज्ञानथी, देखी सर्ग ने नर्ग ॥ पण कहे लोक मतें करि,करणीयें नर्ग ने सर्ग ॥ ६ ॥ सागरदेव पसायथी, कीधुं जाएयुं का म ॥ हरिवल चरित्र ते देखिने, लाज्यो नरपति ताम ॥ ७ ॥ तव हरिवल कहे रायने, म करो मनमें सो च ॥ तुम मंत्री ते कुमतियें, तुमचो कराव्यो लोच ॥ ॥ ८ ॥ लंकायें मुज मोकल्यो, वलि मूक्यो यम घेर ॥ तुमें चूक्या मुज नारीशुं, तव में करि ए पेर ॥ ए ॥ तुम मंत्रीनी संगतें, करता तुमें पण साथ ॥ पण में राख्या जीवता, करुणा आणी नाथ ॥१०॥ ए गुण लेजो माहरो, जीवित सूधी नृप ॥ एम कही हरिव ल तिहां, आव्यो निज घर चूंप ॥ ११ ॥ वसंतसिरी कुसुमसिरी, दो प्यारी गुणवंत ॥ पिछु सुखचंद विलो कतां, दो कुमरी हरखंत ॥ १२ ॥ सुख विलसे संसा रमां, टाली सघलां शल्य ॥ करणी करे जिन धर्मनी, हरिवल मछी अंगील ॥ १३ ॥ परतख देखी पारखुं, हरिवल केरो धर्म ॥ पुरजन सहु धर्मी थया, टाली

मिथ्या भर्म ॥ १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, जे निज कीधां चरित्र ॥ ते देखी धोखो करे, नरपति म नशुं विचित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ महिपति भांखे प रजने रे, बेगो ते निज धाम ॥ साजन सांभलो रे ॥ हा हा में ए शुं कयुं रे, अणघटतुं ए काम ॥ १ ॥ सा० ॥ गुणवंत जे गुण धाम, मूकी आमलो रे ॥ ए आं कणी ॥ किया भवनी मोहनी रे, जागी इण भव मांहि ॥ सा० ॥ ए नारीथी दुःख लह्युं रे, विण कामें निरुत्साहि ॥ २ ॥ सा० ॥ तन धन खोयां नृप कहे रे, खोइ नारीथी लाज ॥ सा० ॥ वात चलावी चिहुं दिशें रे, वाजते ढोल आवाज ॥ ३ ॥ सा० ॥ पूरव भवनी वैरिणी रे, पोष्युं वयर विशेष ॥ सा० ॥ जेह वी करणी में करी रे, तेहवी लही तस रेख ॥ ४ ॥ सा० ॥ दोष नही को एहनो रे, छे सघलो मुज दोष ॥ सा० ॥ पी पाणी घर पूछीने रे, शो तस करवो शोष ॥ ५ ॥ सा० ॥ कुलमर्यादा मूकीने रे, खोटी में मागी भी ख ॥ सा० ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गण्यां रे, कोनी न मानी शीख ॥ ६ ॥ सा० ॥ पारकी मति हुं चाली

यो रे, मेल्यां कुकर्मनां मूल ॥ सा० ॥ कोढीनी गरज सरी नही रे, नृप करे नावी धूल ॥७॥ सा० ॥ मुज घरे छे रती पदमणी रे, राणी रूप निधान ॥ सा० ॥ ते मूकी हाँशी थयो रे, डंबर करवा निदान ॥ ८ ॥ सा० ॥ छे स्त्री अशुचिनी कोथली रे, मल मूत्र भरियां गात्र ॥ सा० ॥ वारे द्वार वही रह्यां रे, पहेखां दिसे सुपात्र ॥ ९ ॥ सा० ॥ अण बोलाव्यां सुंदरु रे, दीसे ढांक्यां रतन्न ॥ सा० ॥ काम पडे अटकी रहे रे, वि चक विचारी तन्न ॥१०॥ सा०॥ जागे योवन यौवनें रे, वाधे कामनुं जोर ॥ सा० ॥ सिद्ध साधक कुण सुर नरा रे, जोवे अंगनां गोर ॥ ११ ॥ सा० ॥ पंचास्ति कायमें पण कह्यां रे, जिनवरें कामनां वाण ॥ सा० ॥ तो मानवनुं शुं गजुं रे, कामें मनावी आण ॥१२॥ सा० ॥ धिग धिग काम विटंबना रे, कामें लाज गमा य ॥ सा० ॥ कामें खोवे मालने रे, कामें गीत गवाय ॥ १३ ॥ सा० ॥ वध बंधन कामें लहे रे, कामें ऊं चा टंगाय ॥ सा० ॥ कामें दंम भरे सही रे, कामें हां सी कराय ॥ १४ ॥ सा० ॥ कामज्वरें बलतो रहे रे, तनथी क्षीण ते थाय ॥ सा० ॥ मात पितादिक नवि गणे रे, न गणे कामांध कांय ॥ १५ ॥ सा० ॥

चीती हशे ते जाणशे रे, जे करे परस्त्रीनो संग ॥ सा०॥ ते होशे खेरु विकारशुं रे, खोई तन मन रंग ॥ १६ ॥ सा० ॥ शी मुजने ए उपनी रे, पडवा नारकी कुंम ॥ सा० ॥ धिग धिग माहरी बुद्धिने रे, जे थयो व्यसनी तुंम ॥१७॥सा०॥ धन हरिबलनी बुद्धिने रे, दीधुं जीवित दान ॥सा०॥ अजर प्यालो इण जीरव्यो रे, दीगे वडो सावधान ॥ १८ ॥ सा० ॥ जो कोपे मुज उपरें रे, तो करे मंत्रीनी रीत ॥सा०॥ राज ली ये मुज एकलो रे, तो शी रहे परतीत ॥ १९ ॥ सा० ॥ में म्हारे हाथे करी रे, करणी खोटी कीध ॥ सा० ॥ नीति मारग लोपी करी रे, हरिबलने दुःख दीध ॥ २० ॥ सा० ॥ ते किम सांइ सांसहे रे, जे हुं चाल्यो अनीत ॥ सा० ॥ तो शीखामण नली ज डी रे, कदि नहि विसरे चित्त ॥ २१ ॥ सा० ॥ अव गुण उपर गुण करे रे, ते तो हरिबल एक ॥ सा० ॥ मुजने राख्यो जीवतो रे, दयावंत विवेक ॥ २२ ॥ सा० ॥ सुगुण पुरुष में दीठडो रे, हरिबल साहस धीर ॥ सा० ॥ उपगारी शिर सेहरो रे, वीर शिरोम णि वीर ॥ २३ ॥ सा० ॥ धन हरिबलना तातने रे, धन हरिबलनी मात ॥ सा० ॥ क्षत्रिवंशमां दी

पतो रे, सुनट शिरोमणि जात ॥ २४ ॥ सा० ॥ धन धन ते गुरुदेवनें रे, जेणें बताव्यो धर्म ॥ सा० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुझ शर्म ॥ २५ ॥ सा० ॥ इम हरिबलना गुण स्तवे रे, परजामें मद नवेग ॥ सा० ॥ तोल वधार्यो माहरो रे, हरिबलछुं करि नेग ॥ २६ ॥ सा० ॥ तो हुं पुत्री माहरी रे, परणावुं शुन्न काज ॥सा०॥ कर मूकामण वली दीयुं रे, महीयल महोटुं राज ॥ २७ ॥ सा० ॥ गुण उंशीगण ए थइ रे, हुं हवे थाउं निःपाप ॥सा०॥ पछें हुं संयम आदरुं रे, ज्युं मटे नवनो संताप ॥ २८ ॥ सा० ॥ एता दिन नूलो नम्यो रे, विण दर्शन मुझ जीव ॥ सा० ॥ हवे करणी एहवी करुं रे, जिम ल हुं सुख सदीव ॥ २९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना परजमें रे, कीधी ते महिपाल ॥ सा० ॥ चोथा उ ल्लासनी ए कही रे, लब्धि सातमी ढाल ॥३०॥सा०॥

॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें नृप आलोचनी, आलोयां निज पाप ॥ लघुआकर्मी नृप थयो, करवा शिव मेलाप ॥ १ ॥ जिहां सुधी अज्ञानतम, व्यापी रह्युं घटमांहि ॥ तिहां सुधी ते जीवडो, पाम्यो ज्ञान न क्यांहि ॥२॥ स

हज गुणे जग जीवने, आवे शुद्ध स्वभाव ॥ तव घट में दर्शन रवि, प्रगटे तेज प्रभाव ॥ ३ ॥ तव छेदे अ ज्ञान तम, प्रगटे ज्ञान उद्योत ॥ अष्ट करम दल छे दिने, जइ भले ज्योतिमें ज्योत ॥४॥ हवे करणी करुं धर्मनी, छेहडो समारुं शुद्ध ॥ वणकर पण ते वस्त्र नो, छेहडो समारे शुद्ध ॥ ५ ॥ इम जाणी हरिबल प्रत्यें,तेडाव्यो नृत्यपास ॥ हरिबल पण तिहां आवीयो, ततखिण नृप आवास ॥६॥ अरधुं आसन आपीने, कर जोडी कहे नाथ ॥ अरज सुणो एक माहरी, ह रिबल छो तुमें आथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हांजी रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ हांजी हरि बलप्रत्यें हवे नृप कहे,तुमें सांभलो गुणधि अगाध ॥ तोरी बलिहारी रे हरिबल माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी हुं खूनी थयो तुम तणो, मुफ खमजो ते अपराध ॥ १ ॥ तो० ॥ हांजी लांबां फारवां शा करुं, हुं तो छुं तुम भवोभव चोर ॥ तो० ॥ हांजी में तुमशुं एहवी करी, तिण नही मुफ सातमी ठोर ॥ २ ॥ तो० ॥ हांजी विषयारसनो लोलुपी, थयो ते छती वस्तें उ लूक ॥ तो० ॥ हांजी लंकागढ यमने घरे, में मूक्या

तुम करी चूक ॥ ३ ॥ तो० ॥ हांजी ए पातक किहां छूटस्यां, में कीधो जेह अन्याय ॥ तो० ॥ हांजी ते रखे रोष चित्तें धरो, तुम कहुं छुं गोद बिछाय ॥४॥ तो० ॥ हांजी हुं तुम खामुखां थयो, मत राखजो अंतर वेर ॥ तो० ॥ हांजी इम नृप कहे हरिबल तुमें, मुझ उपर राखजो महेर ॥ ५ ॥ तो० ॥ हांजी तव हरिबल नृपने कहे, तुमें ए शुं बोल्या नाथ ॥ तोरी बलिहारी रे नरपति माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी हुं सेवक छुं तुम तणो, मुझ तुमें छो महोटी आथ ॥ ६ ॥ तो० ॥ हांजी माहरे तुमशुं को नहीं, कांई अंतरगतमें द्वेष ॥तो०॥ हांजी तुम मंत्री काल सेन जे, तेणे भंभेर्यो तुम छेक ॥ ७ ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम वचें विगताविने, तुम कुमतियें घाली राड ॥ तो० ॥ पण जेहवी करी तेहवी लह्यो, वल्यो जीव तो तेह किराड ॥८॥तो०॥ हांजी तुम अम हवे कोइ वातनो, मत राखोजी अंतर कोय ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम जीवडो एक छे, ए तो देखत छे तन दोय ॥ ९ ॥ तो० ॥ हांजी मिथ्याडुःकृत मुझथकी, तुमें मानजो नृप करि साच ॥ तो० ॥ हांजी राग द्वेषना योगथी, जेह बांध्यां निकाचित वाच ॥ १० ॥ त०

हांजी इत्यादिक वचनें करि,हांजी हरिबलें खामणां की
ध ॥तो०॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिबल
दोय प्रसिद्ध ॥११॥तो० ॥ हांजी हवे हरिबल प्रत्यें नृप
कहे, तुमें सांभलो मुज अरदास ॥ तो०॥ हांजी मुज
पुत्री जयसुंदरी,तुम पालव बांधुं उल्लास ॥१२॥ तोरी
बलिहारी रे हरिबल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥
हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुज नगरीनुं राज
॥ तो० ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुज म
होटी वधारो लाज ॥१३॥तो०॥ हांजी एम कहीने
ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तो० ॥ हांजी
पंचनी साखें मलीने, करे तिलक ते नृप उछाह ॥
॥ १४ ॥ तो० ॥ हांजी शुभ चोघडीयुं जोइने, करि
थापना गवरीपुत्र ॥ तो० ॥ हांजी धवल मंगल वज
डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥तो०॥ हांजी
शुभ लगनें शुभ मुहूरतें, हरिबलने नृप पद दीध ॥
॥ तो० ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम
जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी नगरी
विशाला साचली, शणगारी थइ उजमाल ॥ तो० ॥
जाणे स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजें झाकझमाल
॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी स्वयंवर मंडप रोपीने, नृप

वेशनां तेडां कीध ॥ तो० ॥ हांजी सोवनमय चोरी रची, वर कन्या वरवा सुसिद्ध ॥ १८ ॥ तो०॥ हांजी वाजिंत्र महोटे वाजते, हांजी वाजते यंत्र मृदंग ॥ ॥ तो० ॥ हांजी तत थेइ नटुआ नाचता, हांजी करता नवनवा रंग ॥१९॥तो०॥ हांजी सोनागिणी साहेलीयो, मली सरखा सरखी बाल ॥ तो०॥ हांजी कोकिल स्वरें करी सोहली, जलां गावे गीत रसाल ॥ २० ॥ तो० ॥ हांजी ते गीत नादना स्वादथी, रहे थंभी अमर विमान ॥ तो० ॥ हांजी इणि परें नारी टोलें मली, ए तो गावे रूप निधान ॥ २१ ॥ तो०॥ हांजी मंगल वाजां वाजते, हांजी गाजते गुहिर निशाण ॥ तो० ॥ हांजी इण आमंबरें धीवरु, चढ्यो परणवा चतुर सुजाण ॥ २२ ॥ तो० ॥ हांजी अलवेला जानी थया, हांजी जाणीयें देवकुमार ॥ तो० ॥ हांजी हरिबलने परणाववा, हांजी आव्या नृप दरवार ॥ २३ ॥ तो०॥ हांजी घणे आमंबरें सोहता, हांजी करता नृत्य हजार ॥ तो० ॥ हांजी जीव दयाना प्रभावथी, ठये तोरण हरिबल सार ॥ २४ ॥ ॥ तो० ॥ हांजी प्रीतिमती पट्टरागिणी, तीर धूंसरें पोंखे जमाइ ॥ तो० ॥ हांजी चोरीमां पधरावीयां,

हांजी इत्यादिक वचनें करि,हांजी हरिबलें खामणां कीध ॥तो०॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिबल दोय प्रसिद्ध ॥११॥तो०॥ हांजी हवे हरिबल प्रत्यें नृप कहे, तुमें सांभलो मुझ अरदास ॥ तो०॥ हांजी मुझ पुत्री जयसुंदरी,तुम पालव बांधुं उल्लास ॥१२॥ तोरी बलिहारी रे हरिबल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥ हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुझ नगरीनुं राज ॥ तो० ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुझ मन होटी वधारो लाज ॥१३॥तो०॥ हांजी एम कहीने ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तो० ॥ हांजी पंचनी साखें मलीने, करे तिलक ते नृप उत्साह ॥ ॥ १४ ॥ तो० ॥ हांजी शुभ चोघडीयुं जोइने, करि थापना गवरीपुत्र ॥ तो० ॥ हांजी धवल मंगल वज डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥तो०॥ हांजी शुभ लगनें शुभ मुहूरतें, हरिबलने नृप पद दीध ॥ ॥ तो० ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी नगरी विशाला साचली, शणगारी थइ उजमाल ॥ तो० ॥ जाणे स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजें झाकझमाल ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी स्वयंवर मंडप रोपीने, नृप

नवेग ॥ हरिबलने राज्यें ठवी, प्रबल वधाब्यो नेग ॥ ॥ ६ ॥ हरिबल पण सुख नोगवे, पाले राज्य अखंम ॥ आण मनावी चिहुं दिशें, चुजबलि नीम प्रचंम ॥ ७ ॥ हवे नृप जामाता कने, ससरो मागे शीख ॥ जो स्वामी राजी हुवो, तो हुं लेहुं दीख ॥ ॥ ८ ॥ निज आतमने तारवा, लेहुं संयमनार ॥ शिव रमणीशुं नेहलो, करवा थयो हुशियार ॥ ए ॥ एम कही नृप सज थयो, चढते ते परिणाम ॥ दीक्षा महोत्सव शुन्न करे, हरिबल तव गुणधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावादना खेल्या रे, वालम आवजो रे ॥ ए देशी ॥ संयमनारी वरवा रे, नृप मन उल्लस्यो रे ॥ पापस्थान अढारथी रे, नृप दूरें खस्यो रे ॥ आणी समता नाव रसाल, राणी पण थइ सार्थे विशाल ॥ पंचम गतिने हेतें रे, संयम आदरे रे ॥ १ ॥ साते क्षेत्रें नावें रे, धन बहु वावरे रे ॥ निर्मल चित्तें थइने रे, सुकृत करणी आचरे रे ॥ समकित निर्मल शुद्ध करेय, प्रवचन रचना चित्त धरेय ॥ घणे आमंबरें आवे रे, सुविहित गुरु कने रे ॥ २ ॥ बाह्याभिंतर केरा रे, मल सवि ठांमिया रे ॥ परमातमने गेहें रे,संकेत मांमिया

वर कन्या कर मेलाइ ॥ २५ ॥ तो० ॥ हांजी पा
बांधी दोयना, हांजी फेरा फेरव्या चार ॥ तो० ॥
जी वर कन्यायें आरोगीयो,हांजी सुंदर मिठो कंसा
॥ २६ ॥ तो० ॥ हांजी जयसुंदरी परणावीने, हां
लने दीधुं राज ॥ तो० ॥ हांजी पायक सत लक्
श्वनी, ठकुराइ दीधि समाज ॥ २७ ॥ तो०॥ हांजी
जो नवियां पुण्यथी, लहि मही सुकृत माल ॥ तो
हांजी चोथा उल्लासनी ए कहि, शुन्न लब्धें आठ
ढाल ॥ २८ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनवेग हरखें करी, कीधो उछव सार ॥ स
हपुं सासटुं, वरसे ज्युं जलधार ॥१॥ जसपडहो व
हाविओ, नगरी नमाडी मार ॥ हरिबलने राजें व
वरत्यो जय जयकार ॥२॥ बंदीजन मूक्या परा,
सी मन उपगार ॥ आसीजन तृपता कस्या, दानें
सार ॥३॥ पद महोत्सव अतिहे कस्या, राखी जुग
स्थाल ॥ हरिबल जे राजा थयो, चाली चिहुं दि
वात ॥ ४ ॥ नगरी जन सहु हरखीयां, जय
हरिबल राय ॥ देश देशांतरि जेटणां, ले आवे नृ
राय ॥ ५ ॥ इणिपरें पद महोत्सव करी, जे नृप म

हरिबल पुरजना रे ॥ इणि परें करता स्तवनां अपार, ऋषिजन प्रणमी निज आगार ॥ हरिबल राजा आदि रे, सहु वांदी वल्या रे ॥ ८ ॥ हवे ऋषि मदनवेगजी रे, गुरुसंगें जणे रे ॥ चौद पूर्वना अर्थ रे, विचार ते संथुणे रे ॥ पाले पूरा पंचाचार, चालें सूधा नय व्यवहार ॥ दंपति दोये साचां रे, जिन मतमें वहे रे ॥ए॥ अध्यातमपुर सुंदर रे, निरखी तिहां रहे रे ॥ विवेक तणां जे मंदिर रे, महोटां गह गहे रे ॥ तेहमें कीधो दो जणें वास, करे तिहां वेगं ज्ञान अभ्यास ॥ ज्ञान ने दरिसण चरणशुं रे, रहे लीनां थकां रे ॥ १० ॥ ध्यान सुतखतें बेगं रे, दो वखतें इक मनां रे ॥ समकित छत्र धरावि रे,हरखें दो जणां रे ॥ सोहे चामर श्रुत चारित्र, पाले महोटां आठ मावित्र ॥ धर्म सत्ता दश मेले रे, सत्य दरबारमां रे ॥११॥ संयम हाथी शुभ मन रे, घोडा दीपता रे ॥ अष्टक रमना दलनें रे, वेगें जीपतां रे ॥ शीलांगरथ शुभ महा गुणवंत, संवर सुभट सुतेज अनंत ॥ मदन वेग जे ऋषिने रे, दरबारें गाजता रे ॥१२॥ नेद विज्ञाननी घंटा रे, बांधी न्यायनी रे ॥ खीर ने नीर ज्युं रे, न्याय करे संनायनी रे ॥ सातमे गुणगणे

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो
कारिमो झगडो रे, मिटाड्यो खिण एकमां रे ॥ १३ ॥
तेरमे गुणठाणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल
ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते भावियां रे ॥ तब तिहां पा
म्यां केवल नाण, तीन भुवनमें थयां ते जाण ॥ के
वल महोत्त्व महोटुं रे, इंद्रादि सघला करे रे ॥१४॥
वारे परषदा मेली रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ भव्य
जीवने दीधी रे, समकित वासना रे ॥ तारयां भवोदधि
थी केइ जीव, ज्योति वधूशुं प्रीति अतीव ॥ दंपति दोयें
वधाइ रे, केवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विचरया जिनने
वारे रे, मदनऋषि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता
रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरष तेत्रीस हजार,
पाली पूरं दंपति सार ॥ सेलेसी गुणथांणे रे, दो
मुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना भव भमि रे,
दूरें टलिया रे, शिवरमणीना संगमें रे, निशिदिन मैं
लिया रे ॥ चौद भुवननां नाटक रंग, निरखे ज्युं
करतल रेख सुरंग ॥ लोक अलोकने जांणे रे, जाणे
तिहां रह्यो रे ॥ १७ ॥ जो जो भवियां भाखें रे, श्री
करणी करी रे ॥ मोह भूप जोरें जितलीउ रे, मानी न
को [illegible] रे ॥ मेहुला घणी [illegible] लिंग, निज [illegible]

नमें मानीता कीध ॥ ए सवि गुण तुम लेजो रे, नवि समकित तणा रे ॥ १८ ॥ समकित रयण ने जगमें रे, जनने तारवा रे ॥ नविक जीवने निमी रे, वंछित सारवा रे ॥ नाख्युं ए समकित परम निधान, मुगति वधूनुं दाता निदान ॥ जिनवरें नाख्युं सघले रे, सूत्र सिद्धांतमां रे ॥ १९ ॥ एहवा गुण तुमें जाणी रे, समकित धारजो रे ॥ निंदा विकथा परनी रे, दूर निवारजो रे ॥ ज्युं लहो नवियां समकित शुद्ध, जो जगदीश दे तुमने बुद्ध ॥ तो सडशठ बोलें करीने रे, समकित धारजो रे ॥ २० ॥ नविक जीवने समकित रे, जीवनुं मूल ने रे ॥ समकितधारी जीवने रे, शिव अनुकूल ने रे ॥ इम कहे लब्धिविजय उजमाल, चोथा उल्लासनी नवमी ढाल ॥ हलुवा कर्मी जीव ते रे, वयण ए मानशे रे ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे सुणजो नवियण तुमें, हरिबल केरी वात ॥ वीशाला पुर नयरनुं, विलसें राज विख्यात ॥ १ ॥ बारे दरवाजे प्रबल, मांमी दाननी शाल ॥ नम्र बुनूक्षित जीवने, देवे दान विशाल ॥ २ ॥ नव नेदें जे पुण्य ने, सूत्र तणे अनुसार ॥ जन्म सफल करवा

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो कारिमो ऊगडो रे, मिटाड्यो खिण एकमां रे ॥ १३ ॥ तेरमे गुणगणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते नाविया रे ॥ तव तिहां पाम्यां केवल नाण, तीन भुवनमें थयां ते जाण ॥ केवल महोत्सव महोटुं रे, इंद्रादि सघला करें रे ॥१४॥ वारे परषदा मेली रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ नव्य जीवने दीधी रे, समकित वासना रे॥ तार्यां नवोदधि थी केइ जीव,ज्योति वधूशुं प्रीति अतीव॥ दंपति दोयें वणाइ रे, केंवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विशमा जिननें वारें रे, मदनऋषि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरष तेत्रीश हजार, पाली पूरुं दंपति सार ॥ शैलेशी गुणयोगें रे, दो मुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना नय सवि रे, दूरें ठंभिया रे, शिवरमणिना संगमें रे, निशिदिन मं भिया रे ॥ चौद भुवननां नाटक चंग, निरखे ज्युं करजल रेह सुरंग ॥ लोक अलोकने अंतें रे, जावे तिहां रही रे ॥ १७ ॥ जो जो नवियां आगें रे, शी करणी हती रे ॥ मोह नृप जोरें शिखडी रे, मानी न को रती रे ॥ तेहना धणी थइ वेग सिद्ध, तिन भुव

लो ॥ ३ ॥ न० ॥ करटी काला मद मत, वाला फूल
ता रे लो, जाणियें टूंक हिमाला लो ॥ न० ॥ चैत
रें केशु रंग, नवेशुं फूलता रे लो, सोहे सिंदूरें शुंढाला
लो ॥ ४ ॥ न० ॥ घुघर घंटा रण झण, घंटा वाजता
रे लो, गाजता अंबर सूधी लो ॥न०॥ एहवा संख्या
ता गण्या नवि, जाता सावता रे लो, गज घंटा श्रेणि
विलुद्धी लो ॥ ५ ॥ न० ॥ रवि रथना ज्युं वाजी,
ताजी वेगना रे लो, गाजे हरिवल द्वारा लो ॥ न०॥
करे खुडताला पद पड, ताला मेघना रे लो, अगणित
अश्व अपारा लो ॥ ६ ॥ न० ॥ वहेल सुखासन
मानुं, सुरासन ताकडा रे लो, एहवा रथ रढियाला
लो ॥ न० ॥ रण सुभटाला जे मठ, राला वांकडा रें
लो, एहवा अगणित पाला लो ॥ ७ ॥ न० ॥ सुरप
ति सरिखी हरिवल, हरखी ग्रामनी रे लो, जोगवे रा
ज्यनी लीला लो ॥ न० ॥ अपछर वरणी पिशु मन,
हरणी कामिनी रे लो, विलसे शोलशें वाला लो ॥
८ ॥ न० ॥ बत्रीश बद्ध नाटक, सुधा स्वादना रे
लो, होवे रंग रंगाला लो ॥ न० ॥ गुणिजन गाता
कवि जन, माता उन्नादना रे लो, वोले विरुद वडाला
लो ॥ ए ॥ न० ॥ हरिवल केरी अतिही, नजेरी विस्त

जणी, मांड्यो सत्तुकार ॥ ३ ॥ साते खेत्रें वावरे, के इ लख धननी कोड ॥ चैत्य करावे जिन तणां, मांडि स्वर्गशुं होड ॥ ४ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां सुधी आणा राय ॥ मारी शब्द को उच्चरे, तो ते खूनी थाय ॥ ५ ॥ विण खूनें को जीवने, को न उपाडे श स्त्र ॥ कीडी कुंजर आपणां, सम करी लेखवे तत्र ॥ ६ ॥ इणि परें हरिबल राजवी, पाले राज्य अखंम ॥ परजाने इंदु समो, अरिमन जीम प्रचंम ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मारुजी साथीडा साथें धण रे, हाथें मद पियो रे लो, मारो माणिगर मारुलो ॥ ए देशी ॥ जवियां नगरी विशाला फाक, फमाला सोहती रे लो, मानुं कैलासपुरी लो ॥ ज० ॥ सोहम वासीनी परें खासी, मोहती रे लो ॥ वकुराइ उंपे सनूरी लो ॥ १ ॥ ज० ॥ पुण्य प्रजावें जावें, जोगवे राजने रे लो, हरिबल जाग्य विशाला लो ॥ ज० ॥ सुजस वरवा प रजने, करवा साजने रे लो ॥ प्रगट्यो परम कृपाला लो ॥ २ ॥ ज० ॥ शोलशें देशें पुण्य, विशेषें मही यें रे लो, साध्या देश हठीला लो ॥ ज० ॥ अनमी राया तेह, नमाया हिये रे लो, हुता जे मुछाला

रनां,दिर्ग महोटां मंमाण ॥ जाणे स्वर्गपुरी वसी,आ वीने इण गाण ॥ ए ॥ वाडी महोलें मलपति, फुलि चिहुं दिशि वनराय ॥ जाणे वन नंदननी वहेनडी, आय वसी इण गाय ॥ १०॥ इणिपरें सेना मंत्रवी, देखत हर्षित होय ॥ पेसारो पुरमें कस्यो, वेला शुन्न घडि जोय ॥ ११ ॥ नगरी सखरी जोवतां, आव्या ते दरवार ॥ हरिबल नृपने नेटिया, उपनो हर्ष अपार ॥१२॥ हरिबल सुरपति सारिखो, वेगो धरावी ठत्र ॥ मंत्रीपण प्रणिपत करी,दीधो नृप कर पत्र॥१३॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ शेत्रुंजानो वासी साहेब, माहारे दिल वस्यो रे ॥ मोरा साहेबा ॥ आदिजिन करुं रे जूहार ॥ ए देशी ॥ कागल देइ हर्षे धरे चित्तशुं रे॥मोरा साहिबा॥ एतो विनवे मंत्री विशेष ॥ तेडवा तुमने मुक्या अ मने हेतशुं रे ॥ मो० ॥ तुमचे ससरेजीयें लेख ॥ १ ॥ कागल० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन तुमचो रासे म मचो मच्या तणो रे ॥मो०॥ तुम ससरोजी नृपाल ॥ दरिसण दीजें पावन कीजें आंगणो रे ॥मो०॥ तुम ची सासुनो कृपाल ॥२॥का०॥ ससरो जमाई आनंद पाई एकठा रे ॥मो०॥ वेसी करो रंग रोल ॥ नेह सुधा

रस वरसे पावस गह्घटा रें ॥मो०॥ उपजे ज्युं रंगचो
ल ॥ ३ ॥ का०॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम
शुं रे ॥ मो० ॥ कह्युं मुख वचनें एम ॥ तेमाटे स्वामी
अंतरजामी नेगशुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धरो धरी प्रेम ॥
॥ ४ ॥ का० ॥ ससरो ने सासु नही कांहि फासु था
वती रे ॥ मो० ॥ आव्या विना प्राणाधार ॥ पं
जर तिहां छे जीव इहां छे नावथी रे ॥ मो० ॥ इणि
परें राखे छे प्यार ॥ ५ ॥ का० ॥ तेमाटे तुमने कहुं
शुं प्रज्ञुने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति थइ एक रंग ॥
वेगा थाउ वार म लाउ सहचरी रे ॥ मो० ॥ ल्यो
सेना तुम संग ॥ ६ ॥ का० ॥ इणि परें सयणा मंत्री
वयणां सांजली रे ॥ मो० ॥ हरख्यो हरिबल ताम ॥
कागल वांची मनमां माची मन रली रे ॥ मो० ॥
सेना सजि अजिराम ॥ ७ ॥ का० ॥ तिहांथी मंत्री
उठयो गंत्री शीघ्रथी रे ॥ मो० ॥ आव्यो ते कुमरी
पास ॥ तातनो मंत्री उलख्यो यंत्री अग्रथी रे ॥
॥ मो० ॥ वसंतसिरीयें उल्लास ॥ ८ ॥ का० ॥ म
लवा ऊठी कुमरी वूठी नयणथी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां
आंसु जोर ॥ जनकने घ्री परें मलियां जलि परें स
यणथी रे ॥ मो० ॥ मंत्री कुमरी समोर ॥ ए ॥ का०॥

वेलि एकांतें कुमरी खांतें पूछती रे ॥ मो० ॥ कुशल खेमनी रे वात ॥ मात पितानां सुख शाता जे हती रे ॥मो०॥ ते कहो मुज अवदात ॥१०॥का०॥ तव मंत्री जंपे पत्र समर्प्यो तातनो रे ॥ मो० ॥ वलि मुखथी कहे एम ॥ छे बहु तुमशुं मलवा मनशुं मातनो रे ॥ मो० ॥ चातक जलधर जेम ॥ ११ ॥ ॥ का० ॥ सो वातें एकण वातें मानजो रे ॥ मो० ॥ जंतुउं छे तुम संग ॥ मत जाणो काचुं सहि करि साचुं जाणजो रे ॥ मो० ॥ तुम आवे होशे रंग ॥ ॥ १२ ॥ का० ॥ एहवो उत्तर मंत्री पडुत्तर दीधलो रे ॥ मो० ॥ हरखी कुमरी ताम ॥ सचिवने राजी कुमरीयें मांजी कीधलो रे ॥ मो० ॥ देइ वधामणी उद्दाम ॥ १३ ॥ का० ॥ दंपति दोइ मुहूरत जोइ हरखशुं रे ॥ मो० ॥ शोलशें राणी समेत ॥ ससराने मलवा संगपण कलवा हर्षशुं रे ॥ मो० ॥ उमाह्या जनमनें खेत ॥ १४ ॥ का० ॥ श्रीपति नामें वणिक सुधामें मह्लीने रे ॥ मो०॥ राख्या जे पूर्वे ते जाण ॥ तेहने तेडी पूर निगेडी नह्लीने रे ॥ मो० ॥ सोंपी कर्यो कुल दिवाण ॥ १५ ॥ का०॥ जरतारी मेरा अतिही घणेरा सोहता रे ॥ मो० ॥

ताण्या तंबू जडाव ॥ रवि शशी सरखा निरखी हरख्या मोहता रे ॥ मो० ॥ देखी तंबू बणाव ॥ १६ ॥ का०॥ गज रथ घोडा सुन्नट सजोडा साबता रे ॥मो०॥ शण गाय्या न्नाइव रंग ॥ वहेल सुखासण जाणे सुरासण फावतां रे ॥मो०॥ इम सजी सेना चंग ॥१७॥का०॥ पंचरंगी नेजा नन्नना ठेजा जोवता रे ॥ मो० ॥ रो प्या नेजा उत्तंग ॥ पवनें फरके सुरपति घमके डो न्नता रे ॥ मो० ॥ देखी ऊंमा अनंग ॥ १७ ॥ का० ॥ गवरीजाया मेंदी रंगाया दीपता रे ॥ मो० ॥ कन कसें जडीया शिंगाल ॥ घूघरमाला घमके रढाला ऊीपता रे ॥ मो० ॥ सुरधोरी सुकमाल ॥ १ए ॥ ॥ का० ॥ इणिपरें सेन्या मानवसेना राखता रे ॥ ॥ मो०॥ मन्नीयें सजि सेना उद्दाम ॥ हरिबल राजा चढतरि वाजां वाजते रे ॥ मो० ॥ चाल्या जनमनी न्नूम ॥ २० ॥ का० ॥ ससरानो मंत्री पुण्यपवित्री नेयता रे ॥ मो०॥ ले चाल्यो दंपति सार ॥ शीघ्र प्र याणें थाउ निशाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आव्या ज्यां परणी नार ॥ २१ ॥ का० ॥ ते वन देखी दंपति ह रखी दीधला रे ॥ मो० ॥ मेरा ते वनमांहि ॥ किधा उतारा जीमण सारां कीधलां रे ॥ मो० ॥ चउरंगी

सेना उच्चाहि ॥ २२ ॥ का० ॥ प्यारि पर्यपे पिशुने
जंपे हेतनी रे ॥मो०॥ वाणीयें वीनवे नृप ॥ इंद्रपुरी
सम नाम रहे तिम वेतनी रे ॥ मो० ॥ नगरी व
सावो चूंप ॥ २३ ॥ का० ॥ श्रीजिनमंदिर अतिही
सुंदर चोंपशुं रे ॥ मो० ॥ करो इहां तीरथ गाम ॥
जे मुज परणी ते करो करणी रूपशुं रे ॥ मो० ॥
जिम रहे जगमें नाम ॥ २४ ॥ का० ॥ तव ते मन्नी
प्यारी सुलच्छी वयणथी रे ॥ मो०॥ समरयो त्यां सा
गर देव ॥ गुणनो रागी पुण्यविनागी सयणथी रे ॥
॥ मो० ॥ आव्यो सुर ततखेव ॥ २५ ॥ का० ॥ सुर
कहे शाने तेडो माने ते कहो रे ॥ मो० ॥ जे होय
मननी हूव ॥ तव कहे हरिबल दाखो सुरबल मनें
वहो रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो खूब ॥ २६ ॥ का०॥
तव तिहां नाकी वाकि न राखी पलकमें रे ॥ मो०॥
वासी त्यां नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मंदिर पोलशुं
सुंदर हलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥
॥ २७ ॥ का० ॥ श्रीमुनि सुव्रत त्रीजग अद्भुत सो
हती रे ॥ मो० ॥ विंब ठव्युं करि चैत्त ॥ दंपति दोनी
मूरति कीनी मोहती रे ॥ मो० ॥ पूर्वे जे लह्युं देवत्त
॥ २८ ॥ का०॥ रान वेलाउल डिंग ने देउल देखिने

रे ॥ मो० ॥ दंपति थयां उजमाल ॥ चोथा उल्लासनी प्रेम प्रकाशनी पेखिने रे ॥ मो० ॥ कहि लब्धियें अग्यारमी ढाल ॥ १९ ॥ का० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव जोयण लांबी वसी, पहोली योजन बार ॥ जाणुं लंकानी बहेनडी, वसी इहां वनह मझार ॥ १ ॥ सजल सरोवर जल नर्यां, वाडी तिम लह कंत ॥ जाणुं सुरवाडी इहां, प्रगट थइ महकंत ॥ ॥ २ ॥ पटराणीना नामनी, वासी नगरी सार ॥ वसंतपुरी नामें नली, चावी थइ संसार ॥ ३ ॥ इणि परें नगरी वासिने, हरिबल राजी कीध ॥ पहोतो ते निज थानकें, जलधी नाथ प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ वसंत सिरीना सचिवने, सोंपी नगरी तास ॥ केताई दिन तिहां रही, आगल चाल्या उल्लास ॥ ५ ॥ दल बादल हरिबल तणुं, चाले ज्युं जलपूर ॥ धरणी तलथी सलसल्यो, शेषनाग नयतूर ॥६॥ के शुं लेशे लंकने, के शुं लेशे स्वर्ग ॥ के शुं लेशे जगतने, इम जाणे जनवर्ग ॥ ७ ॥ इणिपरें हरिबल राजवी, चाल्यो अतिही चूंप ॥ सीमाडाना जे धणी, आवी नमिया नूप ॥ ८ ॥ इणि परें आण मनावतो, आव्यो आरज दे

श ॥ वात वधामणी ससुरने, मूक्यो मंत्रि विशेष ॥ ॥ ९ ॥ ते पण अतिही उतावलो, मतिसागर मंत्री श ॥ आव्यो निज कंचनपुरी, पहोती मनह जगीश ॥ १० ॥ शीघ्र जई प्रणिपत करी, दीध वधाई ना थ ॥ जामाता तुम पुत्रीने, तेडी आव्यो साथ ॥ ११ ॥ वात वधामणी सांजली, हरख्यो कुमरी तात ॥ स न्मान्यो मंत्रीशने, दइ वधाइ विख्यात ॥ १२ ॥ हरि वल पण उतावलो, आव्यो जलधि तीर ॥ जिहां ल ह्युं समकित गुरुकने, दें त्यां मेरा सधीर ॥ १३ ॥ देखी जनमनी जूमिका, दंपति दो हरखात ॥ आ सा चुं के सोहणुं, मिलश्यां जननी तात ॥ १४ ॥ खूनी आपण दो जणां, हूतां नृपनां चोर ॥ ते थयां साचां पुंण्यथी, जव मिल्या गुरु इण गोर ॥ १५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मोतीयारां हे लुंबक कुंवरवां ॥ अथवा ॥ अजि त जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ एम चिंतवी दंपति दो जणां, कालिकाने देउल आय ॥ सहि हुआं रंग वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा जक्ति करी घ णी, एतो प्रणम्या देवीना पाय ॥ १ ॥ स० ॥ धन धन मावडी जगतमां, प्रगटी तुं जन सुख हेत ॥

॥ स० ॥ दीन दुःखीया जीवने उद्धरी, करी पावन संपद हेत ॥ २ ॥ स० ॥ इम आसना वासना देवी नी, करि दंपती बोले आशीष ॥ स० ॥ माता जीव जे सुरगिरिनी परें, अम पुहची सघली जगीश ॥३॥ ॥ स० ॥ हवे हरख्यो कंचनपुर धणी, एतो वसंत सेन नृपाल ॥ स० ॥ तेम वसंतसेना रागिणी, पट्ट राणी थइ उजमाल ॥ ४ ॥ स० ॥ निज पुत्रीने वर कारणें, शणगारी नगरी ते सार ॥ स० ॥ एतो देव दाणव विद्याधरा, एतो जोवा मलिया अपार ॥ ५ ॥ ॥ स० ॥ एतो गजरथ घोडा पालखी, शणगार्या ते बहु ठाठ ॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथरा व्या सोवन पाट ॥ ६ ॥ स० ॥ डुर्वानां हे तोरण बांधियां, वळी सुरतरु दल महकंत ॥ स० ॥ एतो घ र घर चहुटे चाचरे, फुलमालापुंज सोहंत ॥७॥स०॥ टोडे टोडे मोतीना झूमणां, लहकी रह्यां तेजमें ते ज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निरखवा, आवी स र्गपुरी नेहेज ॥ ८ ॥ स० ॥ शणगारी नगरी इणि परें, हरखी नृप वसंतसेन ॥ स० ॥ चतुरंगी सेना स ज करी, वर कुमरीने तेडवा तेण ॥ ९ ॥ स० ॥ गय णांगण गूडी उछले, गुंजालां गुंजे निशाण ॥ स० ॥

साबेलां सबल ते राज कयां, नगरीजन कुमर सुजा ण ॥ १० ॥ स० ॥ इम आमंत्रवश्युं नरपति, सामश्युं सबल सजेय ॥ स० ॥ चालो कुमरी वरने तेडवा, पुरजनश्युं हर्ष धरेय ॥ ११ ॥ स० ॥ नवयोवन नारी सोहामणी, मली गावे मधुरां गीत ॥ स० ॥ रंजा उ वैशीना मद गालती, गावे कोकिल स्वरनी रीत ॥ ॥ १२ ॥ स० ॥ दलवादल देखी पुत्रीनुं, नृप पुरज न हरख जरात ॥ स० ॥ जिम नविकने समकित मले, तिम मलिया ससरो जमात ॥ १३ ॥ स० ॥ वर कन्या आदि सहु मल्यां, नृप राणी हर्ष जराय ॥ स० ॥ तिण वेला हर्ष जे उपनो, ते तो पुस्तक ल खियो न जाय ॥ १४ ॥ स० ॥ कुमरी ने जनकी जनक तणो, वर्षे बारनो नांग्यो वियोग ॥ स० ॥ आ तें साचुं के सुहणुं थयुं, कुमरी वरनो संयोग ॥ ॥ १५ ॥ स० ॥ धन दिवस धन वेला घडी, मुक पु त्रीयें जे लह्युं मान ॥ स० ॥ एम मावित्र हरखे म नमें, जिम डुमक लहे सुनिधान ॥ १६ ॥ स० ॥ ह रिवल ए चोश्नी जातिमां, प्रगट्यो वडो पुण्य निधान ॥ स० ॥ मुक पुत्रीनी संगतें, थयो उंच ए जग सुल तान ॥ १७ ॥ स० ॥ हवे हरिवलने ससरो कहे, न

ली मीठी अमृत वाण ॥ स० ॥ स्वामी पधारो गज शिर चढी, पुर पावन करो प्रमाण ॥ १८ ॥ स० ॥ शेठ सेनापति सारथ मली, करे विनती हर्ष विख्या त ॥ स० ॥ तव हरिबल हर्ष विनोदथी, गजशिर च ढ्या ससरो जमात ॥ १९ ॥ स० ॥ आमां साहामां वाजित्र वाजते, गावे गुणिजन शब्द अखंड ॥ स० ॥ होवे नाटक बत्रीश बद्ध जे, तेणें गाजी रह्युं ब्रह्मांड ॥ २० ॥ स० ॥ कर्यो उत्सव विवाह जेटलो, कुमरी नी वधारवा लाज ॥ स० ॥ नृपें करमूकामणें म णि दीने, दीधुं कंचनपुरनुं राज ॥ २१ ॥ स० ॥ मणि सोवन रूपुं सावटुं, गुणिजनने कीध पसाय ॥ स०॥ करि पृथवी उरण दानमें, आश्रीजन बहु तृपति कराय ॥ २२ ॥ स० ॥ नलां भेटणां लावे पुरजना, वर क न्याने करे भेट ॥ स० ॥ मन वंछित सुखनिधि उल टीयो, तेणें नाख्यां दुःखने उभेट ॥ २३ ॥ स० ॥ निवास नी जायगा मोटकी, रहेवाने दीधीजी खास ॥ स० ॥ रंग महोलमें वास्यो कुमरीने, दीधो एकविश भूमि आवास ॥ २४ ॥ स० ॥ जसपडहो वजाड्यो नयरमां, वरतावी सहीनी आण ॥ स० ॥ वीरबल केरो ... हरिबल पुन्यडो, वध्यो राज्यें लिखित प्रमाण

स० ॥ जो जो नवियो साधुनी संगतें, लहो जीवन पानो धर्म ॥ स० ॥ थयो परसन जलनिधि देवता, तिर्णे वधाखो मल्लीनो नर्म ॥२६॥स०॥ थयो आवी ते चिहुं खूंटमें, जोगवे शुन रुद्धि समृद्ध ॥ स० ॥ जाणे सुरपतिनो समोवडी, थइ वेगो मल्ली प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ स०॥ जर्जे प्रगट्या सद्गुरु जगतमें, उपगारी परम कृपाल ॥ स० ॥ कहि चोथा उल्लासनी वारमी, लब्धें संयोगनी ढाल ॥ २७ ॥ स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवा सज्जुरु वयणथी, पाम्यो जिनवर धर्म ॥ थयो परसन जल देवता, वधियो मल्ली नर्म ॥ १ ॥ हरिवल दो पदवी लह्यो, सागरदेव पसाय ॥ ठकुराइ बत्रीश लाखनी, पायकें अश्व सुहाय ॥ २ ॥ शुंढा दंम विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥ गजशालामें गज घटा, सोहे सहस अढार ॥ ३ ॥ सुख विलसे संसारनां, शोलशें राणी सछ ॥ पटराणी थापी वडी, वसंतसिरी सुकयछ ॥ ४ ॥ मूलगी जे परिणेतनी, काली कर्कशा नार ॥ ते पण हरिबलें संग्रही, करि अपगर अवतार ॥ ५ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां सूधी ते आण ॥ तिहां सूधी को जीवनां, का

ढी न शके प्राण ॥ ६ ॥ इणिपरें लीला जोगवे, पूरव
पुण्य पसाय ॥ चावो थयो चिहुं खूंटमें, महोटो ह
रिवल राय ॥ ७ ॥ हवे ससरो हरखें करी, वसंतसेन
नूपाल ॥ जामाताने वीनवे, कर जोडी उजमाल ॥
॥ ८ ॥ द्यो अनुमति दीक्षा तणी, आणी हर्ष अपा
र ॥ शिव रमणी वरवा भणी, लेशुं संजम भार ॥ ९ ॥
एम कही आणा लही, सासू ससरो दोय ॥ पंच
महाव्रत उच्चर्यां, सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ च
ढते परिणामें करी, पाले पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां
धणी, थयां सूधां अणगार ॥ ११ ॥ क्षपक श्रेणी चढ
तां थकां, तेरमुं लह्युं गुणठाण ॥ शुक्ल ध्यानना जो
गथी, पाम्यां केवल नाण ॥ १२ ॥ चोशठ इंद्रादिक
मली, अंबुज नंद रचेण ॥ भाविकने प्रतिबोधतां,
लहे शिवबोध विशेष ॥ १३ ॥ केवल कमला जोग
वी, पाली पूरण आय ॥ कर्म कुटिल दूरें करी, पहों
तां शिवपुर ठाय ॥ १४ ॥ धन धन वसंतसेनने,
धन वसंतपट नार ॥ दंपति बे मुगतें गया, चढियां
मुक्ति मझार ॥ १५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ नन्हो नगीनो म्हारो, म्हारो हीरो म्हारो, नण

वीरो वीरो महारो साहेबो,थना मारु घडी एक करहो कुकाय हो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल सुख जोगवे ॥ पुण्य वंत ॥ पाले राज अखंम हो ॥ सागर देव पसायथी ॥ पुण्यवंत ॥ थयो गुण मणिनो करंम हो ॥१॥ सुगुण सनेही प्यारो, धर्मनो मोही शुन, अनुजव गेही सुख सागरु ॥पु०॥ हरिबल परजा पाल हो ॥ ए आंक णी ॥ आण मनावी चिहुं दिशें ॥ पु० ॥ पोडश देश विशेष हो ॥ पोडश देशनी अंगजा ॥पु०॥ विलसे ज्युं सुख सुरेश हो ॥ २ ॥ सु० ॥ गुण लिये जीव दया तणो ॥पु०॥ गुण ले गुरु उपदेश हो ॥ परतख देखी पारख्युं ॥ पु० ॥ हरख्यो मही नरेश हो ॥३॥ सु०॥ तो हवे महिमा धर्मनो ॥पु०॥ प्रगट करुं उजमाल हो ॥ मानव नव सफलो करी ॥ पु० ॥ मेली सुकृत माल हो ॥४॥ सु०॥ इम जाणी जल कांठडे ॥ पु०॥ जिहां लह्यो गुरु उपदेश हो ॥ तिहां कणे चैत्य रची नखुं ॥पु०॥ राखुं तिहां नाम विशेष हो ॥५॥सु०॥ पोडश देश सुहामणा ॥पु०॥ कीधा जिन प्रासाद हो ॥ बिंब नराख्यां रयणमें ॥ पु० ॥ ठंमी सघलो प्रमाद हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ अमारि पलावे आपथी ॥ पु० ॥ पोडश देश मकार हो ॥ मार शब्द को नवि उच्चरे ॥पु०॥

जोगवे मल्लीराय हो ॥ रहे जीनो रसतानमें ॥ पु०॥ वीशाला पुरगाय हो ॥ २३ ॥ सु० ॥ शोल कलामें चंद्रमा ॥ पु० ॥ सोहे ज्युं ऊजास हो ॥ तिम हरिबल शोल जनपदें ॥ पुं० ॥ सोहे तेजप्रकाश हो ॥ २४ ॥ सु० ॥ ए गुण जीवदया तणो ॥ पु० ॥ फलिया मनोरथ सिद्ध हो ॥ लव्धें चोथा उल्लासनी ॥ पु०॥ तेरमी कही परसिद्ध हो ॥ २५ ॥ सु० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच विषय सुख विलसतां, वीता केता दिन्न ॥ वसंतसिरी पटनारीयें, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ १ ॥ श्री बल नामें सिंह ज्युं, प्रगट्यो माहाबलवंत ॥ हरिबल केरो पुत्रडो, सकलकला ऊीपंत ॥ २ ॥ कुंसुमसिरी जे लंकनी, तिणें पण जन्म्यो पुत्र ॥ मात पिताने सुख दियें, चलवे घरनां सूत्र ॥ ३ ॥ सुबलनामें पुत्र जे, प्रगट्यो ज्युं रवितेज ॥ मातपिता हरखे घणुं, देखी दो सुत हेज ॥४॥ रामनें लखमण जोड ज्युं,सो हे त्युं दो भ्रात ॥ दानें मानें आगला, पुहवीमां करे ख्यात ॥ ५ ॥ जोड मली दो भ्रातनी, श्रीबल सूबल नाम ॥ राज काजमें तत्परा, राखे मन अभिराम ॥ ॥ ६ ॥ बीजी राणी जे अछे, पोडशें जे शुभ मन्न॥

तिणें पण पुण्यना योगथी, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ ७ ॥ इणिपरें लीला जोगवे, हरिवल पुण्य विख्यात ॥ सं सारिक जे सुख कह्यां, विलसे ते सुख सात ॥ ८ ॥ तन धन स्त्री सुत सस्यनी, अंबर रस ए सात ॥ जेहने घरें पुण्यवेल छे, तेहने ए सुख शात ॥ए॥ इणि परें काल ते नीगम्यो, वर्ष सहस पचवीश ॥ नृप राणी सरखे मनें, पाले धर्म जगीश ॥ १० ॥ जैन दरीसनमें थइ, नृपनी जगती कहाय ॥ तिहां सुधी कृपि विचरता, पुहवि पवित्र कराय ॥ ११ ॥ देव गु रुने वांदिने, सांजलि गुरु उपदेश ॥ त्यार पछें ते के लवे, घरनां काज विशेष ॥ १२ ॥ इणिपरें हर्षे विनो दमें, श्रीजिनधर्म दीपाय ॥ तिण समे विशमा जिन तणा, आव्या मुनिजन राय ॥ १३ ॥ पंचसयाशुं परवस्या, गणधर सुस्थित नाम ॥ वीशाला पुर परि सरें, उतस्या निरखी गाम ॥ १४ ॥ साधु वधामणी मालीयें, नृपने दीधी ताम ॥ नृप पण निसुणी मालीने, देवे महर्द्धिक गाम ॥ १५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ सुडला संदेशो कहेजे महारा पुज्यने रे ॥ अथवा॥ जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥ वात वधा

भणी गुरुनी सांभली रे, हरखित थया नृप लोक रे ॥ धव धव धाइ गुरुने वांदवा रे, आव्या ते भोगी चातुर कोक रे ॥ १ ॥ सांभलो मीठी गुरुनी देशना रे ॥ ए आंकणी ॥ जेह थकी पाप पुलाय रे ॥ पावन होवे जीवित आपणुं रे, अक्षय पद ते लहाय रे ॥ ॥ सां० ॥ २ ॥ अभिगमन पांचे साचवी रे, वेग ते गुरुना वंदि पाय रे ॥ एकण चित्तें एकण ध्यानथी रे, सांभले दो कर जोडी राय रे ॥ ३ ॥ सां०॥ तिण समे गुरु पण अवसर ओलखी रे, देशना देवे ज्युं जल धार रे ॥ जिनवरें भांखी जेहवी देशना रे, तेहवी ते वाणीयें कीधो उच्चार रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ सांभलो भवियां मीठी देशना रे ॥ पामी ते मानवनो अवतार रे॥एलें कां हारो मनुभव पामीने रे,सज्ञान संघी सारो सार रे ॥५॥सां०॥ पंखी परें रे मेलो ए मल्यो रे, उडतां थी लागे तस वार रे ॥ तेम रे सगाइ स्वारथनी भणी रे, मटतां थी लागे तेहनी वार रे ॥ ६ ॥ सां०॥ को कहो तात ने को कहो मात ने रे,को कहो भ्रात ने को कहो जात रे॥इणिपरें सघण संबंध ते वयणथी रे,सगपण वेंची लीधुं ख्यात रे ॥७॥सां०॥ को करो प्रीत को करो वेरने रे, को करो साच ने को करो कूड रे ॥ थाडुं

छे अंतें सहुने कालथी रे, आखरे प्राणी धूड जेली धूड रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ कूडी माया ने कूडी कामिनी रे, कूडां छे अर्थी बंधव लोक रे ॥ कूडी छे डुनियां वा दल गांह ज्युं रे,ते पण अंतें होवे फोक रे ॥९॥सां०॥ प्राणथी वाहालो जेहने जाणियें रे,राखीयें तेहने ज्युं करि ग्रंथ रे ॥ ते पण न रहे वनो पूठवा रे, जातां ते लांबे महोटे पंथ रे ॥ १०॥ सां०॥ केहि गया ने केहि जायशे रे, केहि छे प्राणी जावणहार रे ॥ पुण्य विहूणा इण वाटडी रे, जाशे ते प्राणी हाथ पसार रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ कुण ते राणा ने कुण ते रांकने रे, आखर एहिज एक छे वाट रे ॥ आवशे साथें सु कृत कीधलां रे, उतरतां ते नवनो घाट रे ॥ १२ ॥ ॥सां०॥ श्यो रे नरोंसो काचा कुंननो रे, श्यो वली क रवो धननो मद रे ॥ देखत संध्याराग तणी परें रे, उडी ते जावे खिणमें अछद रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ दश रे दृष्टांतें मानव नव तणो रे, पाम्यो जो जनम क दाय रे ॥ तो वली फरि फरि पामवो दोहिलो रे, जिम करी घूणाक्षरने न्याय रे ॥१४॥सां०॥ दान शीयल तप नावना रे, नांख्यो जे जिनवरें चउविह धर्म रे ॥ तेहनो जो कीजें खप शुननावथी रे, तूटीयें खिणमें

निज निज कर्म रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ होवे ते सहस गणुं पुण्य जाचतां रे,लाख गणुं ते अजाची होय रे ॥ कोडी गणुं फल शुभ ए दानथी रे, ए फल पुण्यनुं इणि परें जोय रे ॥ १६॥ सां०॥ व्याजें दीये ते धन बमणुं लहे रे, चोगणुं पामे धन व्यवसाय रे ॥ शत गणुं पामे एकण क्षेत्रथी रे, दान सुपात्रनी संख्या न थाय रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ परभव जातां ए मोटी सूखडी रे, बांधीयें भातुं आवे काम रे ॥ सुर नर अक्षय पदवी सुख पामियें रे, वाधे ज्युं नरभव केरी माम रे ॥ १८॥ सां०॥ एहवुं जाणीने पुण्य कीजीयें रे, दीजीयें भावें दान सुपात्र रे ॥ नृगति सुगति दो पदवी लहे रे, कीजीयें आपणुं निर्मल गात्र रे ॥ ॥ १९ ॥ सां० ॥ आपल आपणे लग्गो तुंबडे रे, नही कोइ आवे परभव साथ रे॥ एहवुं जाणीने प्राणी चेतजो रे, जइ समकित वृक्षनी लग्जो बाथ रे ॥२०॥सां०॥ इणि परें उपदेश सुणिने भाविया रे, व्रत पच्चक्खाणनी सुखडी लीध रे॥ राजा ने राणी पण बहु कुलनां रे, वचन सुधारस कानें पीध रे ॥ २१ ॥ ॥ सां० ॥ विषय कषायना मल सवि वामीने रे, आदरे दंपति सुकुलमाल रे ॥ चोथा उल्लासनी ललित

विजयें कही रे, सुंदर महोटी चौदमी ढाल रे ॥ ॥ २१ ॥ सां० ॥

॥ दोहा ॥

॥इम उपदेश ते सांजली,हरखी परषद सार ॥ गुरुने वांदी थानकें, पहोता सहु आगार ॥१॥ तव कहे नृप कर जोडीने, सांजलो गुरु गुणगेह ॥ जव स्थिति क्यारें पाकशे, माहरी कहो ससनेह ॥ २ ॥ तव ग णधर सुस्थित कहे, सांजलो तुमें माहाराय ॥ पांच सहस्र ते वर्षनुं, बे महोटुं तुम आय ॥ ३ ॥ तिहां सुधी तुमने घणुं, बे जोगावलि कर्म ॥ जब ते स्थिति पूरी थशे, तव वधशे तुम जर्म ॥ ४ ॥ पूरव जव तुम सांजली, केवली मुनिचंद्र पास ॥ संयम नृपशरणुं ग्रही, लेहशो शिव पदवास ॥ ५ ॥ ए अधिकार ते सांजली, हरख्यां राणी राय ॥ पहोतां सहु निज मंदिरें, वंदी गुरुना पाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल निज मंदिर आवी, करे निज सुकृत करणी ॥ वसंतसिरी पट्टराणी आदें, करे सघली पुण्यनरणी ॥ १ ॥ जवियां सुणजो, हरिबलनी जे करणी ॥ ज० ॥ चडवा

मोक्ष निसरणी ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पहेलाथी चोथे गुणगाणे, आवे हरिबल लेहतो ॥ प्रकृति सात नो क्षय ते करिने, क्षायक समकित ग्रहेतो ॥ २ ॥ ज०॥ श्रावकना गुण एकवीश महोटा, जे कह्या सूत्र सिद्धांतें ॥ ते गुण श्रावकना शुभ पाले, नृप राणी मन खांतें ॥ ३ ॥ ज० ॥ चैत्य करावे श्रीजिन केरां, षोडशें देश मजार ॥ देशें देशें सुंदर दीपे, देंउल शोल हजार ॥ ४ ॥ ज० ॥ कोटि एक ते कनक रयणमें, उपर छप्पन लाख ॥ ए संख्या कहि जिनमंदिरनी, शोलशें देशनी साख ॥ ५ ॥ ज० ॥ चैत्यें चैत्यें पांचे रंगें, थाप्या जिन चोविश ॥ कोटि एकशत लाख छु म्मालीश, बिंब भराव्यां अधीश ॥ ६ ॥ ज०॥ साधु जनने रहेवा सारु,रजतमें लाक कमाला ॥ सवा कोडि ते धर्मने हेतें, कीधी पोषध शाला ॥ ७ ॥ ज०॥ साव सोवनमें अक्षर रचना, लखीयां पुस्तक सार ॥ ज्ञानोपगरण करिने महोटां, मूके पुण्य भंमार ॥ ८ ॥ ज०॥ साहामीवछल दिनप्रतें मछी, पोषे भाव विशे ष ॥ जिनमतिनां साते ए खेत्रें,वावे द्रव्य अशेष ॥ ए॥ ज०॥ श्रीजिन भक्तितणी लय आणी, करे नित त्रिटंक सेवा ॥ बत्रिश बद्ध नृत्य करावे, प्रभु आगल जश लेवा

॥१०॥न०॥ खट दरशनने जावें पोले,जाणी ज्ञान अनं ता॥ दान तणां दश दूषण टाली,दे आदर बहु संता॥ ॥ ११ ॥ न० ॥ चोथा गुणठाणानी ए करणी, करे हरिवल दिल साच ॥ सिद्धवधू वरवा जणी सारु, जाणीयें देवे लांच ॥ १२ ॥ न० ॥ देशविरति गुण गणे चढीने, करे पंचपर्वी पोषा ॥ चउद नियम सं जारी संखेपें, काढे मनना रोषा ॥ १३ ॥ न०॥ श्रा वकनां जे कह्यां व्रत बारे, ते पण साचवे रूडां ॥ आवश्यक दो टंकनां साचां, साचवे मन नहीं कूडा ॥ १४ ॥ न०॥ छठ अठम वली दशम डुवालस, करे तप चढतां शक्ति॥ अष्ट करम दल डुर्बल कीधां,त्रेसवा सिद्धनी पंक्ति ॥ १५ ॥ न० ॥ एकादश जे श्राद्धनी प्रतिमा, जांखी जे जगवानें ॥ विधि पूर्वकछुं जिन अरचीने, ते पण वहि एक तानें ॥ १६ ॥ न० ॥ सा तमे अंगें पाठ ए चावो, जो जो जवियां रंगें ॥ दश श्रावकें जिम वहि शुज प्रतिमा, तिम वहि मछि अ जंगें ॥ १७ ॥ न० ॥ षट आवश्यक नवकार आदें, तेहनां वहे उपधान ॥ शिवरमणी वरवाने हेतें, प हेरी माल प्रधान ॥ १८ ॥ न० ॥ श्रावकने उपधान वह्या विण, नवकार क्रिया न सूझे ॥ साधूने पण

योग वह्या विण, वांचवुं सूत्र न सूझे ॥१९॥ ज०॥ पंचांगी में जोजो सघले, छे अक्षर परगट्ट ॥ ते जाणीने हरिबल पोतें, करे करणी गहगट्ट ॥२०॥ ज०॥ इणिपरें नृप राणी गृह वेगं, जाव संयमनें पाले ॥ त्रिकरण शुद्धें जावें करीने, आतम जव अजुवाले ॥ ॥ २१ ॥ ज० ॥ हरिबल जे करे चैत्यनी करणी, ते कोइ कहेशे खोटी ॥ ते उपर तुमें सुणजो प्राणी, साखी कहुं छुं महोटी ॥ २२ ॥ ज० ॥ पांचमे आरें वीरने वारे, जे हुउ संप्रतिराजा ॥ सहस छत्रीश ते जीरण देहरां, सहस पचविश ते ताजां ॥२३॥ ज०॥ ए संख्यायें चैत्य कराव्यां, बत्रीश थडां प्रासाद ॥ कोटि सवा उगणी संख्यातां, बिंब जराव्यां उह्लाद ॥ ॥ २४ ॥ ज० ॥ पाटणराजें सिद्ध, सिंघपाटें जे हुउ कुमारपाल ॥ बावन जीनालां तिणे पण कीधां, जीवित सूधी विशाल ॥ २५ ॥ ज० ॥ आबू उपरें रजत समोवड, देउल महोटां दीपे ॥ श्रीआदीसर मूरति थापी, शा विमलो जग जीपे ॥ २६ ॥ ज० ॥ साते धातें चउदे मणनी, चउ जिन पडिमा जरावी ॥ शा जीमे गढ आबूयें थापी, ते जुउ नजरें चावी ॥ ॥ २७ ॥ ज० ॥ लाख नवाणुं खरची देउल, राणक

पूरें जे कीधो ॥ शा धरणो पोरवाड वखाण्यो, त्रण भु
वन जइ जुर्ड सीधो ॥ २८ ॥ न० ॥ शोलमो उद्धार
शेत्रुंजा उपरें, त्रिजगमें परसिद्धो ॥ मानवनव लहि
श्रावक कुलमें, शा करमें जस लीधो ॥ २९ ॥ न० ॥
आजने समयें एहवा प्राणी, जे हुआ रतन सरी
खा ॥ तो शुं तदा ते काललुं कहेवुं, शी तस करवी प
रीखा ॥ ३० ॥ न० ॥ ए दृष्टांत सुणीने नवियां,
मानजो सघलुं साचुं ॥ धर्मी जनना जे गुण नां
ख्या, ते मत जाणजो काचुं ॥ ३१ ॥ न० ॥ ए अधि
कार सुणी जे सद्दहे, ते लहे मंगलमाल ॥ चोथा उ
ल्लासनी ढाल पन्नरमी, लब्धें ए नांखी रसाल ॥३२॥

॥ दोहा ॥

॥ इम करणी करतां थकां, वोल्यां सहसचउ वर्ष ॥
एटले मुनिचंद केवली, पाउ धाखा उत्कर्ष ॥ १ ॥
वाजां नाकी वाजीयां, मलिया चोशठ इंद ॥ नंद क
मल रचना करी, थाप्या ज्ञानदीणंद ॥२॥ गुरुनी व
धामणी मालीयें,आवी नृपने दीध ॥ सन्मानें नृप मा
लीने, ग्राम पसायो कीध ॥ ३ ॥ जिम तृषातुर प्रा
णीया, धाइ सरोवर जाय ॥ तिम नृप निज परिवा
रशुं, प्रणम्या निज गुरु पाय ॥ ४ ॥ चातुक जन श्र

वर्णों सुणी, पीवे श्रुत जल हेत ॥ वचनामृत जलध
र गुरु, वरसे नवि मन खेत ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ देशी आख्याननी ॥ चेतो चेतो चेतो रे प्राणी, जाणी संसार असार ॥ अंजलि जल ज्युं आउखुं जाणी, म करो प्रमाद लगार ॥ १ ॥ परमाद पांचे परम वैरी, घेरी संसारी जीव ॥ नरग निगोदें नाखे दुःखमें, विण खूने ते अतीव ॥२॥ आठे मद मोटा मोटा थइने, पहेलो प्रमाद वखाणो ॥ चोवीश दंडकें जीव दंडावे, परमाद एहवो जाणो ॥३॥ पांचे इंद्रियना थइ सबला, नांख्या विषय त्रेवीश ॥ ए बीजो प्रमाद जे सेवे, ते लहे थान चोविश ॥ ४ ॥ एकेक इंद्रिय मोकली मूके, जीव लहे ते घात ॥ ते उपर कहुं ज्ञानी नांखे, सांभलजो दृष्टांत ॥ ५ ॥ आंखने विषे दीपक देखी, चौरिंद्रि करे झंपापात ॥ चर चर तन दहे हेमने लोभें, पतंग लहे उपघात ॥ ६ ॥ घ्राणेंद्रियनो जो थयो विषयी, सेवंत पंकजवासी ॥ मुंदा देखें दंतियें ग्रह्यो कज, आठम्यो भ्रमर नहुराशि ॥ ७ ॥ कानना रसिया नादना लीणा, नाग कुरंगम जेह ॥ वाजोगरने पारधि जालें, पासमें पडिया ते तेह ॥ ८ ॥

रसनानो थयो लोलुपी मछलो, जल कल्लोल जे क
रतो ॥ धीवरें गल गुड लोज देखाडी, तालुएं ग्रह्यो
सुखि धरतो ॥ ए ॥ हाथणी देखी मातंग महोटो,
थयो कामातुर कूल ॥ कामवशें करि पडियो अका
डि, निज शिर नाखे धूल ॥ १० ॥ इणिपरें पांचे इं
द्रिना रसथी, जे थया विषयाअंध ॥ तंडुलमछ परें
कर्म निकाचित, बांधि जोगवे धंध ॥ ११ ॥ शोल क
षाय ने नव नोकषाय, ए दो मलीने पचवीश ॥ त्रिजो
प्रमाद ए जाणिने सेवे, पाडे ते नरकमें चीस ॥१२॥
अनर्थकारी पांचे निड़ा, सेवे जे चोथो प्रमाद ॥ वा
विस सागर लगियें जाये, जोगवे नरकनो स्वाद ॥१३॥
राजकथादिक चारे विकथा, परमाद पांचमो कर
ता ॥ चारे कर्मी थइने प्राणी, लहे दुःख चउ गइ
फरता ॥ १४ ॥ पंच प्रमाद ए दुष्ट जयंकर, सुव्रत
हरे ते सदीवो ॥ लक्ष चोराशि योनी फरतां, ए ठे
संसारनो दीवो ॥ १५ ॥ पंच प्रमादना ए गुण जी
वडा, मनशुं जावमें आणी ॥ प्रमाद पांचे दूरें ठं
मो, जिम थाउ केवल नाणी ॥ १६ ॥ प्रमादने वशें
जाणे जीवडो, ठे सघलुं ए महारुं ॥ पण ते अंतर नि
रखी जोतां, शुं देखे ठे तहारुं ॥१७॥ दिवस निशा घट

माजनें जोगें, आयु सलील घटाडे ॥ चंद ने सूरय वृ षन्न धोरीथी, काल रहट्ट नमाडे ॥ १७ ॥ इणिपरें न्यंतरमें निशिदिन वहे,नवकूपक घटमाल ॥ काल अनं तो परमाद संगें, पडियो मोहनी जाल ॥ १ए ॥ मो हनी जालमां जे नर पडिया,तें कदि नावे ऊंचा ॥ सागर कोडाकोडी सित्तेर सुधी, धरमशुं मांफे खूचा ॥ २० ॥ कंचन कामिनी अरथें मेले, माया महोटुं माणुं ॥ पण ते निशिदिन रहे जीव धखतो, जिम शघडीनुं ठाणुं ॥ ॥ २१ ॥ स्वारथनूत संबंध ए मलीयो, पोषवा पिंमने धाइ ॥ काम पडे कोइ ढुकडो नावे, जो जो जगनी कमाइ ॥ २२ ॥ पोतानो करि गणियें जेहने, ते होवे साहामो वैरी ॥ जो जो नवियां सगपण सा चुं, ज्ञाननी दृष्टें हेरी ॥ २३ ॥ मात पिता बंधु जात सुता पति, लेखवे साचि सगाई ॥ पण तस आवी अदल पोहोंचे, नवि रहे पूठवा कांइ ॥ २४ ॥ ठे संसार विचारी जोतां, वाजीगरना गोटा ॥ क्षणनं गुर ठे जीवित तो पण, माने वंठित पोटा ॥२५॥ जल परपोटा समान ए काया, शी तस कूडी माया ॥ य मने मंदिर जावुं सहुने, कुण डुर्बल कुण राया ॥ ॥ २६ ॥ वांकणीयें जिम सुहणुं दीठुं, जाणे में ज

न्म्यो बेटो ॥ नाम विश्वंजर देइ एहवुं, वंध्या मेहणुं मेट्यो ॥२७॥ जब जागी तब रोवा लागी, किहां गयो माहरो पुत्र ॥ वृद्ध कालें मुजने सुखदाता, राखे घरनां सूत्र ॥२८॥ वंध्यानुं जिम सुहणुं खोटुं, तिम संसार छे खोटो ॥ एहवुं जाणी प्राणी चेततो, टाली मोहनो गोटो ॥ २९ ॥ ए संसार असार वखाण्यो, जेहवो गारनो त्रेह ॥ मानगी अणीयें ज्युं जल कणिया, तिम छे जगमें नेह ॥३०॥ ऋद्धि ने रमणी आपणी तिहां लगें, जिहां लगें आंख्यो ताजी ॥ आंख मीचाणे को नही ताहरुं, इम कहे जिनवर गाजी ॥ ३१ ॥ एटलामांहे समजी लेजो, जो हुवो मोक्षना अर्थी॥ तो ए प्रमाद पांचे दमीने, करो सुकृत निज करथी ॥३२॥ चोथा उल्लासनी शोलमी ढालें, दीधो एम उपदेश ॥ लब्धि कहे जवि परखद बूजी, बूझ्यो मल्ली नरेश ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम उपदेश ते सांजली, विनवे बे कर जोडि ॥ कहो स्वामी मुज आगलें, पूरव जवनी होडि ॥ १ ॥ शी करणीयें हुं लह्यो, धीवर कुलनी जात ॥ शी करणी नृप पद लह्युं, शे लहि नृपथी ख्यात ॥२ ॥ शी करणी मुजने मल्यो, तटिनीनायनो नाथ ॥ सुरम

णिनी परें मुझने, पूरी वंछित आय ॥ ३ ॥ शी करणि कालसेन जे, खेल्यो मुजशुं घात॥में पण पाछी तेहने, उपजावी घणी घात ॥४॥ शी करणी सद्गुरु मल्या, मुझने दीधो धर्म ॥ जीवदया मुझ दाखवी, प्रवल ब धारी शर्म ॥ ५ ॥ तव कहे मुनिचंद्र केवली, सांजलो तुमें राजान ॥ पूरव जव करणी करी, ते कहुं तुमची निदान ॥ ६ ॥ जे जेहवी करणी करे, तें तेहवुं फल पाय ॥ शुजाशुजना बंध जे, ते तेहवा जोगवाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥जनम्यो जेसल मेर ॥ अथवा ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय ॥ ए देशी ॥ चौलक्ष जोजन सार, धातकी खंम विदेह में जी ॥ विजय पुष्फावइ मनोहार, जद्दिलपुर वसे तेहमें जी ॥ १ ॥ तेहज डिंग मझार, विप्र वसे जयदेवता जी ॥ जयसिरी नामें ते नार, जारिया विप्रणी देवता जी ॥ २ ॥ प्रसव्या ते द्विजणीयें बाल, पुत्रजुगल दो सोहामणा जी ॥ नयण वयण सुरसाल, रूप रंग में कोइ नहिं मणा जी ॥ ३ ॥ सूनंद उपनंद दोय, नाम ठव्यां दो पुत्रनां जी ॥ वाधे शशि परें सोय, मन हरखे मावीत्रनां जी ॥ ४ ॥ पाम्या ते जोवन वाल, परणावी दो अंगना जी ॥ रूपें ते झाक झमाल, जा

णीयें नाकि वामांगना जी ॥ ५ ॥ पंच विषय सुख भोग, विलसे ते केतकी भ्रंग ज्युं जी ॥ पूरव पुण्य सं योग, रहे नीना सुखरंगशुं जी ॥ ६ ॥ एक दिन बो मलि भ्रात, वसंत जोवाने नीकल्या जी ॥ तव तिहां दीठो सुज्ञात, उपशम रसमें जे नल्या जी ॥ ७ ॥ श्री जिनवरनो जे गात्र, ध्यान धरी रह्यो काउस्सगें जी ॥ देखी ते नवली हो यात्र, आव्या दो बंधव त स पगें जी ॥ ८ ॥ वंदि ते मुनिना हो पाय, सुनंद द्विज स्तवना करे जी ॥ उपनंद द्वेषें नराय, मुंम पणुं ते देखी सरे जी ॥९॥ काली ते काय कृशांग, मलम लीन पणे दीठडो जी ॥ जाणीयें जोई भुजंग, दुर्गंध गंधा अर्थीठडो जी ॥ १० ॥ दुष्ट दरिद्रीनो वेश, दी सतो जाणीयें वायरी जी ॥ न मर्द न स्त्रीनो वेश, एक मां नहीं ए पसागरी जी॥११॥मावित्रें मूक्या निरास, भूखने नाहे करी रला जी ॥ दाखवी पापनी राशि, सहुने करावे अगेला जी ॥ १२ ॥ नीची ते दृष्टि धरे य, वगपरें हिंमे रसातला जी ॥ वदनें हो ते कर देई, बो ले मुखथी धूरतकला जी ॥ १३ ॥ मधुरां नांखे हो वेण, नर नारी विप्रतारवा जी ॥ मेले टोली ते सेण, जठरनुं काज सुधारवा जी ॥ १४ ॥ इणिपरें मन

धरी द्वेष, उपनंदें साधुनिंदा करी जी ॥ करि वली ङु गंछा विशेष, नीच कुलीनुं पोतुं जरी जी ॥१५॥ बांधी ज्युं रेशम गांठ, उपर मीण लपेटियें जी ॥ तिम एणें बांधीजी गाठ, जोगव्या विण किम बूटियें जी ॥१६॥ तव तिहां सुनंद जात, रीश धरी कहे बंधुने जी ॥ मत करो साधुनी तांत, जाव धरी नमो साधुनें जी ॥ १७ ॥ साधु छे जगमां उद्योत, ज्ञान दीवो करि दाखवे जी ॥ बांधे तीर्थंकर गोत, साधु वचन चित्त राखवे जी ॥ १८ ॥ मेले ते सकल संयोग, जो रु षि आवें हलकमें जी ॥ टाली ते कर्मना रोग, ज्यो तिवधू मेले पलकमें जी ॥ १९ ॥ चिलाती पुत्र जे ङु ष्ट, ते गयो सुरलोक आठमे जी ॥ अढी दिन मांहि ते पुष्ट, रुषि वचनें थयो ठाठमें जी ॥ २० ॥ करे नव कल्पी विहार, जाविकने पडिबोहवा जी ॥ सूज तो लेवें आहार, निज आतमने सोहवा जी ॥ २१ ॥ जीती ते रागनें द्वेष, उपशम रसमें जे जल्या जी ॥ स्वारथीयो जग देख, अहिकंचुकि परें नीकल्या जी ॥ २२ ॥ एहवा जे मुनिराज, तेहने किम करी नंदी यें जी ॥ प्रबल वधारी हो लाज, साधुने कर जोडी वंदियें जी ॥ २३ ॥ साधुवंदणथी तुं जोय, नरग च

उ छेदी विष्णुयें जी ॥ जिन पदवी तिहां सोय, नाव
थी बांधी जिष्णुयें जी ॥ २४॥ नंदमणियारनो जीव,
दर्दुर वाव्य जे सेवतां जी ॥ वीरने नमतां अतीव,
ते थयो दर्दुर देवता जी ॥ २५ ॥ एहवा ते रुषि गु
ण जाण, ड्व्यथी नावथी सेवीयें जी ॥ म करो को
निंदा सुजाण, साधुने करी देव टेवीयें जी ॥ २६ ॥
इम उपदेश ते देय, सुनंदें समजावीयो जी ॥ तव क
र जोडीने वेय, उपनंदें साधु खमावीयो जी ॥ २७ ॥
ठो तुमें गिरुआ जी साध, पर उपगारी जंतुना जी ॥
खमजो मुज अपराध, जे में कीधी आशातना जी ॥
॥२८॥ साधुनी स्तवना जो कीध, तो बांधि सुनंदें सुरगई
जी ॥ उपनंदें नीच पद लीध, साधु निंदा निजमई जी
॥ २९ ॥ इम ते आलोइ हो पाप, बांधव दो रुषिने
नमी जी ॥ टाली ते सघलो संताप, आव्या दो निज
गृह वन रमी जी ॥ ३० ॥ चोथा उल्लासनी ढाल,
सत्तरमी लब्धिविजय कही जी ॥ सुणजो नवि उजमा
ल, आगल शी शी कथा लही जी ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे दो भ्राता मंदिरें, आवी करे शुन्न काम ॥
खट दरिसन पोखे सदा, जेहवां स्वर्गनां धाम ॥ १ ॥

हवे जयदेवना घरथकी, साहामी छे एक पोल ॥
तेहमें दो वसे वाडवा, सुदेव जूदेव जेल ॥ १ ॥
साह्रू थइ पासें वसे, सुदेव जूदेव जट्ट ॥ खंभा स्त्री छे सुदे
वनी, विशाखा जूदेवनी गट्ट ॥ २ ॥ ते दो नारीने
थयो, पूर्वकर्म संयोग ॥ दाघ ज्वर बलतर तणो, उप
नो तेहने रोग ॥ ४ ॥ तव ते चिकित्सा जणी, तेड्या
बहु वैद्यराज ॥ पण टेकी लागे नही, कोइन सरीयुं
काज ॥ ५ ॥ तव सुदेव जूदेव विप्र दो, मनशुं कीध
विचार ॥ किम वहेशे घरणी विना, किम वहेशे घर
जार ॥६॥ इम दो विप्र विचारीने, बीजी परण्या नार
॥ खंभा विशाखा दो प्रिया, मूकी पीयर सार ॥ ७ ॥
परहरी दो स्त्री रोगिणी, जुंभा थया दो विप्र ॥ जिम
मांखी घृतमें पडी, काढी नाखे क्षिप्र ॥७॥ ते स्थिति
करि इण वाडवें, नवि शोच्या ते लगार ॥ नवि विही
ना कहोनाथकी, नवि विहिना किरतार ॥ ए ॥ मद
वाया दो विप्र ते, न करी सार संजाल ॥ तव दो स्त्री
ते रोगिणी, तेहने उपनी फाल ॥ १० ॥ क्रोध वशें
दो रोगिणी, दें दो पतिने शाप ॥ तुमें दो अम पातें
पडी, लेहजो तुमें संताप ॥ ११ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ दिल लगा रे बावल वरणी ॥ ए देशी ॥ इम क हेती गइ तातने गेहें, तिहां ने हरिनिष्ट नामा ॥ नवि जोजो रे कर्मनी करणी, नोगवे जे फल परणी ॥ न० ॥ ने तेहनी हरिनिष्टणी ब्रिजणी, तस कुखनी दो रामा ॥ १ ॥ न० ॥ पीयर पण ने एकण ठिंगं, नदिलपुर जे नामें ॥ न० ॥ काढी पतियें पीयर आ वी, रोगिणी माविन्न गामें ॥ २ ॥ न० ॥ मात पिता तव निरखी मलीयां, पूढे कुशलनी वातो ॥ न० ॥ कुशल तो नजरें जुवो हो पिता जी, शी कहुं ब्रिजनी ख्यातो ॥ ३ ॥ न० ॥ जव अम वेने रोगिए जाणी, बीजी परणी आणी ॥ न० ॥ ते उपर अम वेहुने काढी, शोक्यनी करि तिहां टाढी ॥४॥न०॥ तव अमें आव्यां तातजी चरणे, जाणी पीयर शरणें ॥ न० ॥ स्त्रीने पक्ष कह्या दो वारु, वास पीयर नरतारु ॥ ५ ॥ ॥न०॥ए अधिकार सुणीने पितायें, आंखें आंसू आण्यां ॥ न० ॥ फिट रे जमाई दो कुल हीणा, एहवा न होता जाण्या ॥ ६ ॥न०॥ धिग धिग ठे तुम जीवित जाति, कीधो विश्वास घात ॥ न० ॥ एहवा प्राणीनुं मुख मही यें, नजरें नावशो कहीये ॥७॥न०॥ पण शुं क

रीयें श्री नगवानें, लेख लख्या जे पानें ॥ न० ॥ अण चिं तवी जब माथे वणाणी, जोगवे पुत्री ते प्राणी ॥ ८ ॥ ॥ न० ॥ इणिपरें वचन कहीने तातें, राखी दो कुमरी हेतें ॥ न० ॥ उषध वेषध करवा लाग्या, जे जिम आवे वेतें ॥ ए ॥ न० ॥ आय उपाय करी बहु थाका, वैद्यने मुख पड्या फांका ॥ न० ॥ पण जो जो वैद्य प्रगटे लाग्यें, कंथा ज्युं गोरख जागे ॥ १० ॥ न० ॥ एक दिन हरिनट जयदेव गेहें, मलवा गयो बहु नेहें ॥ न० ॥ सुनंद उपनंद जयदेव आदें, हरिने मल्या कर वेहें ॥ ११ ॥ न० ॥ वेग सहु को एकण गणें, हरिने वि लखो जाणे ॥ न० ॥ तव हरिनट्टने जयदेव पूछे, शे पड्या शोचने तूछे ॥ १२ ॥ न० ॥ तव हरिनट्ट कहि संघली मांमी, पुत्री जे फुःखणी गंमी ॥ न० ॥ ए फुःख महोटुं साले अमने, शी कहुं जयदेव तुमने ॥ १३ ॥ न० ॥ ते वात सांनली जयदेव वोल्यो, सां नलो हरिनट्ट नाइ ॥ न० ॥ आजथी रोग गयो तुम जाणो, जो छे पाधरो सांई ॥ १४ ॥ न० ॥ एम कहि उपनंदने मूके, वेटो हरिनट्ट साथें ॥ न० ॥ जाउ शीघ्र अइ जस लेशो, नेषज करजो हाथें ॥ १५ ॥ ॥ न० ॥ आव्या मंदिर ततखिण हर्षें, हरिनट्ट उप

नंद दोइ ॥ न० ॥ नाडी जोइ शिलाजित देइ, तत
खिण वलतर खोइ ॥ १६ ॥ न० ॥ आव्यो जस उप
नंदने वखतें, थइ कुमरी दो साजी ॥ न० ॥ देखी गुण
उपनंदनो महोटो, मातपिता थयां राजी ॥ १७ ॥
॥ न० ॥ हरखी हरिजट्ट कहे कर जोडी, सांजलो
उपनंद स्वामी ॥ न० ॥ जीवित दान दीधुं तुमें अ
मने, तिणें थया अंतरजामी ॥ १८ ॥ न० ॥ माण
स उर्के आव्या अमने, कीधा जगमें महोटा ॥ न० ॥
जावत सघली जनमनी काढी, देई वंछित पोटा ॥
॥ १९ ॥ न० ॥ ए उपगार कदी न विसारुं, जो अम
जाति छे सागी ॥ न० ॥ थया अम पुत्रीना सुख
दाता, कीधा अम वडजागी ॥ २० ॥ न० ॥ ए तुम
गुण उसिंगण थावा, संकल्पुं आ ऋद्धि घरनी ॥
॥ न० ॥ तन धन मन छे सघलुं तुमारुं, मत गण
जो तुमें परनी ॥ २१ ॥ न० ॥ सार्थे जइने अम च
जीवडा, जो वेचो तो वेचाउं ॥ न० ॥ जीवित सुधी
इणिपरें वहियें, तो तुम शाबास पाउं ॥ २२ ॥ न० ॥
तव कुमरी कहे खंमा विशाखा, सांजलो उपनंद वा
णी ॥ न० ॥ नवो जव छे अम जीव तुमारा, मूक्युं
तस कर पाणी ॥ २३ ॥ न० ॥ इणिपरें वयणें कहि

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देवी पडशे वाजरी, के तेडवी पडशे घेर ॥ ते जाणी उपनंदशुं, दो विप्र राखे वेर ॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मल्यो, तपसी विरुद्ध वेश ॥ तेहने जइ चरणे नम्या, करी आदेश विशेष ॥ ६ ॥ आसन वासन देइ करी, तपसी कस्यो निज हाथ ॥ तव तपसी कहे सेवको, शी चंठो मुज आय ॥ ७ ॥ तव द्विज कहे कर जोडीने, दो में नूदेव डुष्ट ॥ उपनंदने एहवुं करो, हुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल ढगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी समजी कहे रे, सांजलो दो तुमें आप ॥ मोरा वाला रे ॥ ए पातक किहां छूटीयें रे, श्यों दीजें प्रजुने जवाप ॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो ए हनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी ढांहेडी मत रहो रे, जो हुवो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ इ० ॥ महिष गवा मृगने हणे रे, हणे सूयर पंखी ढाग ॥ मो० ॥ खट दर्शन शास्त्रें कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो० ॥ ३ ॥ इ० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमराजी होय ॥ मो०॥ वरष सहस तेतां गुणी रे, ए शैव मततो जोय ॥ मो०॥४॥ इ०॥ होय विपाकें दश गुणुं

दो कुमरी, रागनी गांठ त्यां पाडी ॥ ज० ॥ उपनंदें पण अनुमोदी पोतें, बांधी मोहनी वाडी ॥ २४ ॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें वयणें राजी करीने, उपनंदने मन मानी ॥ ज० ॥ हरिनंद साथें उपनंद गेहें, आव्यो चढती पांती ॥ २५ ॥ ज० ॥ हरिनंद कहे जयदेवने प्रणमी, धन्य धन्य स्वामी तुमने ॥ ज० ॥ तुम पुत्र मुफ पुत्री जीवाडी, लेखे आण्या अमने ॥ २६ ॥ ॥ ज० ॥ इणिपरें कहीने लघुताइ पाइ, हरिनंद मंदिर आव्यो ॥ ज० ॥ उपनंदनो जस पुरमें वाध्यो, सज्जनजनमन भाव्यो ॥ २७ ॥ ज० ॥ चोथे उल्लासें अढारमी ढालें, धातायें जेह बनावी ॥ ज० ॥ लब्धि कहे नवि सुणजो आगें, ए थइ ते कहुं चावी ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिनंद केरी धीयने, कीधो जे उपगार ॥ थयो महिमा उपनंदनो, नहिल पुरमें सार ॥ १ ॥ ते वात श्रवणें सुणी, सुदेव नृदेव विप्र ॥ उपनंद ऊपरें परजल्या, ज्युं जले अग्नि क्षिप्र ॥ २ ॥ जाण्युं हतुं जे नाखीयो, लहेसे मोमर्मो एह ॥ उपनंदें जो मत करी, आपणा वधी नेह ॥ ३ ॥ एम विचारी ते बंने, लाग्यो मनमें सोच ॥ उपनंदनी हणना सही, जो जो

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देवी पडहो वाजरी, के तेडवी पडहो घेर ॥ ते जाणी उपनंदशुं, दो विप्र राखे वेर ॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मल्यो, तपसी विरुद्ध वेश ॥ तेहने जइ चरणे नम्या, करी आदेश विशेष ॥ ६ ॥ आसन वासन देइ करी, तपसी कर्यो निज हाथ ॥ तव तपसी कहे सेवको, शी वंछो मुज आथ ॥ ७ ॥ तव द्विज कहे कर जोडीने, दो में नृदेव डुष्ट ॥ उपनंदने एहवुं करो, हुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल डगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी समजी कहे रे, सांजलो दो तुमें आप ॥ मोरा वाला रे ॥ ए पातक किहां छूटीयें रे, श्यो दीजें प्रजुने जवाप ॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो ए हनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी गांठडी मत रहो रे, जो हुवो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ इ० ॥ महिष गवा मृगने हणे रे, हणे सूयर पंखी गाग ॥ मो० ॥ खट दर्शन शास्त्रें कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो० ॥ ३ ॥ इ० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमराजी होय ॥ मो० ॥ वरष सहस तेतां गुणी रे, ए शैव मततो जोय ॥ मो० ॥ ४ ॥ इ० ॥ होय विपाकें दश गुणुं

रें, एकण कीधे कर्म ॥मो०॥ सत सहस लख कोडी गमे रे, तीव्र भावना मर्म ॥मो०॥ ५॥ इ०॥ जुर्ज एक बीज कोविंबनुं रे, ठोली गल्युं जीने गेर ॥ मो० ॥ तो नृप जित शत्रुतणुं रे, लीधुं दशगुणुं वेर ॥ मो० ॥ ६ ॥ इ० ॥ जैन मतें पण इम कह्युं रे, जे करे पंचेंद्रि घात मो० ॥ तो तस पूरव कोडिनुं रे, चारित्र दूरें जात ॥ मो० ॥ ७ ॥ इ० ॥ ए अधिकार जाणी करी रे, अमें किम करियें पाप ॥मो०॥ रामें रोमें कीडा पडे रे, देखत कुण ले संताप ॥ मो० ॥ ८ ॥ इ० ॥ तुम दोने मरवुं नथी रे, जाणो अमर ठे तन्न ॥ मो० ॥ पण य मदंग ठे सहुशिरें रे, देवो ठे एक दिन्न ॥मो०॥ए॥इ०॥ एहवो जवाप ते सांनली रे, जे कह्युं रुपियें वचन्न ॥ मो०॥ तव दो विप्र कांखा थया रे, विलखाणा दो मन्न ॥ मो० ॥ १० ॥ इ० ॥ तव मुख लेइ पाठा वल्या रे, ज्युं थया शीतल हीम ॥ मो० ॥ दो विप्रने घरे आवतां रे, शो जोजन थइ सीम ॥ मो० ॥ ॥ ११ ॥ इ०॥ विण खूने उपनंदह्युं रे, राखे ते वेरनाव ॥ ॥ मो० ॥ पण हवे जो जो तेहनी रे, शी गति होवे सहाव ॥ मो० ॥ १२ ॥ इ० ॥ हवे हरिनट्टें निज मंदिरें रे, मेली द्विजनी नाति ॥ मो० ॥ अशन वसन

घृत घोलशुं रे, संतोषी नली नाति ॥ मो० ॥ १३ ॥
॥ इ० ॥ राजी थया सहु नातना रे, जेता द्विज कहे
वाय ॥ मो० ॥ पण ते दो कुमति प्रतें रे, रह्यां ते व
दन विलाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ इ० ॥ तेहवे हरिनट्ट बो
लियो रे, कहे वर्गो मुऊ जन ॥ मो० ॥ आ दो डुष्ट
पापिष्टीयें रे, शे मुऊ तातजी खून ॥ मो० ॥ १५ ॥
॥ इ० ॥ तव तिहां द्विज सघला कहे रे, महारंगणीना
जाति ॥ मो०॥ हीणा चौदशना जण्या रे, शे न करी
स्त्री तांत ॥ मो० ॥ १६ ॥ इ० ॥ इम कहि द्विज सब
ला मली रे, कुटिलने कहे समजाय ॥ मो० ॥ हवे
मत रहो अम न्यातिमां रे, देखत कीधो अन्याय ॥
॥ मो० ॥ १७ ॥ इ० ॥ हवे तुमें ए पुरमां रही रे, मत
करजो अन्न पान ॥ मो० ॥ जो ए वचन उलंघशो रे,
तो घणा जडशे उपान ॥मो०॥१८॥इ०॥ इम कहिने
दो काढिया रे, देई धक्का जोर ॥ मो० ॥ श्याम वदन
लेइ मंदिरें रे, आव्या दो नातिना चोर ॥ मो० ॥
॥ १९ ॥ इ० ॥ तिणे पण जावा सज कस्या रे, गाडां
ऊंट वलद ॥मो०॥ लेइ सजाइ आपणी रे, निकल्या पुं
रथी अलद ॥मो०॥२०॥इ०॥ नीकलतां पुरमां थकी रे,
लागी दो विप्रने हींग ॥मो०॥ गया कोइक देशांतरें रे,

ज्युं गयां उंटनां शिंग ॥ मो० ॥ २१ ॥ इ० ॥ दो कुमरीनी छाती वरी रे, वयां वलि मावित्र मन्न ॥ मो० ॥ नली थइ जे शल्य नीकल्युं रे, उल्लसि रोम राजी तन्न ॥ ॥ मो० ॥ २२ ॥ इ० ॥ इम हरखी कहे नातिने रे, हरि भट ते कर जोड ॥ मो० ॥ छे नाति महीमें मोटकी रे, नाति छे शिरनो मोड ॥ मो० ॥ २३ ॥ इ० ॥ नातियकी तरियें सदा रे, जो चाले कुलवट्ट ॥ मो० ॥ जो वहे आडो नातिथी रे, तो होवे दहवट्ट ॥ मो० ॥ २४ ॥ इ० ॥ जे निजवर्ग दूरें तजी रे, करे वल्लभ परवर्ग ॥ मो० ॥ ते नृप कुकर्दम परें रे, पामे ते दुःख अपवर्ग ॥ मो० ॥ ॥ २५ ॥ इ० ॥ नातिथी अधिको को नहिं रे, नाति छे गंग प्रवाह ॥ मो० ॥ तरीयें बूडीयें नातिथी रे, नातिथी लहियें उछाह ॥ मो० ॥ २६ ॥ इ० ॥ इम भावना करी नातिनी रे, हरिभट्टें द्विजनी प्रसिद्ध ॥ ॥ मो० ॥ संप्रेडी निज वर्गने रे, राजी करि जस ली ध ॥ मो० ॥ २७ ॥ इ० ॥ दाल कहि उगणीशमी रे, चोथा उल्लासनी एह ॥ मो० ॥ लब्धि कहे नवि सां भलो रे, आगल होवे जेह ॥ मो० ॥ २८ ॥ इ० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिभट पासें रहे, पाडोशी सस्नेह ॥ शुद्ध

थ. नामा द्विज जलो, सकल कला गुणगेह ॥ १ ॥ सगपण तो कांई नथी, ते सगपणथी अधीक ॥ पा डोशीने नेहले, सगपण जाणे नजीक ॥ २ ॥ तस घर अद्वोनिश तो धिया, खंमा विशाखा जेह ॥ सुख दुःखनी जे वातडी, करवा आवे तेह ॥ ३ ॥ सुदत्त नो एक पुत्र छे, वसुदत्त एहवे नाम ॥ रूप कला गुण चातुरी, ढंपे ते अनिराम ॥ ४ ॥ ते दो मांहे विशेष छे, खंमानो घणो राग ॥ हास कुतूहल नातनो, कर तां नाचे ताग ॥५॥ दो नारी वसुदत्तशुं, राखे ताली एक ॥ सरखा सरखी जोडली, तिणे करे हास्य विवेक ॥ ६ ॥ एक दिन ते वसुदत्तशुं, खंमा छेडी वात ॥ कर्म कुतूहल वारता, करतां थयो प्रजात ॥ ॥ ७ ॥ प्रह फाटो तव आपणे, आवी खंमा घेर ॥ रीष करी माता कहे, शी होशे तुऊ पेर ॥ ८ ॥ एहवुं वचन कह्यायकी, खंमा रीसाणी मात ॥ अणबोली रहि मातथी, वार घडी निज धाम ॥ ए ॥ जोजन वेला अवसरें, खंमा न जमे कांय ॥ रीष उतारी मावडी, सहु जमियां तिण गय ॥ १० ॥ एक दिन हरिचंद्र ने घरे, सुदत्त लेइ परिवार ॥ मिजलस करी बेठा तिहां, करवा वातो सार ॥ ११ ॥ तेहवे पण आव्यो

तिहां, उपनंद मळवा रूप ॥ साथ सहु उठी मळ्यो, वेसाड्यो करी चूंप ॥ १२ ॥ हवे सहु वेठा रंगमें, करतां वात टकोळ ॥ तिण समे आव्या साधुजी, देवा समकित गोळ ॥ १३ ॥

॥ ढाळ वीशमी ॥

॥ सूडा रे तुं जइ कहेजे संदेशडो रे ॥ए देशी ॥

तव हरखे सउ उठीने, कर जोडी नामें शीशो रे ॥ गुरु पण नाविक देखीने रे, देवे सहुने धर्मशीषो रे ॥ १ ॥ नवि सुणजो रे, इहां गुरु पण लान्न कमावे रे ॥ ए आंकणी ॥ मास खमणनुं पारणुं, करी वेठा त्यां चित्रशाळी रे ॥ साथ सहु पण तिहां कणे, गुरु पासें वेठा संन्नाळी रे ॥ २ ॥ न० ॥ धर्मकथा यथा स्थित कहि, सहु बूझव्या प्राणी सुजाणो रे ॥ समकित वासना पामीया, गुरुमुखथी सुणी वखाणो रे ॥ ३ ॥ न० ॥ तव द्विजणी कर जोडीने, पूछे खंन्ना विशाखानी माता रे ॥ आ दो पुत्री दोन्नागिणी, तस कदि होशे सुख शाता रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तव ऋषि दो कुमरी तणी, तस कर्मनी रेखा जोय रे ॥ आजथी छे एक वर्षनुं, गुरु न्नांखे आउखुं होय रे ॥ ५॥न०॥ त्यारपछी सुख पामशे, जो जिन मारगमें वहे

जो रे ॥ मिथ्या मत जो वंमशो, तो मन वंछित लेहेशो रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ इम ऋषि कहे सुण ज्रहणी, तुम मारग शुद्ध बतावूं रे ॥ जो ते मारगें चालशो, तो दुःखनी दोरी कपावूं रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तव ज्रहणी कहे साधु जी, तुमें मारग शुद्ध जांखो रे ॥ काज सरें जेहथी घणुं, अम करुणा करी ते दाखो रे ॥८॥ ज० ॥ तव गुरु कहे सुणो जावुको, तुमें पूजो प्रज्जु शुज्ञ जाणी रे ॥ प्रज्जु पूज्या ते पामीया, इम लोकमें छे पण वाणी रे ॥ ए ॥ ज० ॥ सद्गुरुवचन हृदे धरी, तुमें आपथी मनशुं जाणो रे ॥ प्रज्जु वंदन फल सांजली, तुमें मनुजव लेखें आणो रे ॥ १० ॥ जवियां रे तुमें जिन वंदन जणी जावो रे, ए तो मीठा मेवा पावो रे ॥ ए आंकणी ॥ वासरें उठी खाटथी धारे, मनशुं जिन जणी जावुं रे ॥ उलट आणी जावथी तो, चोथ तणुं फल पावुं रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ उठे चैत्य गमण जणी ए तो, पहेरी शुद्ध ते वेशो रे ॥ छठ तणुं फल पामी ते लहे, एम केवली दे उपदेशो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ चोखा सोपारी कर लीया, तव अठमनुं फल पावे रे ॥ पगलुं दे जावाने देहरे, तव दशम तणुं फल थावे रे ॥१३। ज० ॥ द्वादश तप सम फल लहे, ए तो देहरा मारग

जातां रे ॥ अर्धे पंथें लहे देहरे, ए तो मास खमण फल आतां रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ देहरुं देखे दृष्टिमें, तव मास खमण फल लाभे रे ॥ जव पहोंचे चैत्य गांहडी, तव खटमासी फल लाभे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ जिनवर बारणना फ़रसथी, ए तो वरसी तप फल होवे रे ॥ त्रण प्रदक्षिणा देयतां, तस शत वर्ष तप फल जोवे रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ सहस ते वर्ष उपवास जे, फल होवे जिन पूजे एतो रे ॥ पुण्य अनंतुं ते वरे, जिनस्तवना भावें करे तो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ चैत्यमें काजो काढतां, फल शो उपवासनुं थावे रे ॥ आंगी रचे जो विलेपनें, सहस पोषण लाभ उपावे रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ लाख उपोषण फल लहे, एक फूलनी माला चढावे रे ॥ वाजित्र गीत प्रभु आगलें, कीधे लाभ अनंत गुण भावे रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ घृतदीपक प्रभु आगलें, करतां लहे मंगलमाला रे ॥ आरति करे प्रभु जिन तणी, तस जाये आरति वाला रे ॥ २० ॥ ज० ॥ न्हवण करे जिनजी शिरें, तस होवे आतम शुद्ध रे ॥ धूप उखेवें प्रभु आगलें, ते सुरगुरु सम लहे बुद्ध रे ॥ २१ ॥ ॥ ज० ॥ नाटक करतां पदवी लहे, जिन चक्रि हरिबल देवा रे ॥ गणधर सुर नृप पद लहे, प्रभु सेवाथी लहे

मीग मेवा रे ॥ २२ ॥ न० ॥ जो त्रण काल पूजा करे, नवसागर पार उतारे रे ॥ हलुवा कर्मी सद्दहे, ते जावे मुगति डुवारें रे ॥ २३ ॥ न० ॥ रावण नें मंदोदरी, करी अष्टापद ते नृत्तो रे ॥ ता थै तान न चूकियां, जिन पदवीनी लहेवात्तो रे ॥ २४ ॥ न० ॥ श्रेणिकरायें वीरनी, करी हेममे जवनी पूजा रे ॥ पद्म नान तीर्थंकरु, होशे आवति चोवीशी राजा रे ॥ ॥ २५ ॥ न० ॥ कुमारपाल पूरव नवें, कोडी पांचनी फूल चढावे रे ॥ देश अढारनो अधिपति, थयो फूल अढारथी फावे रे ॥ २६ ॥ न०॥ इणि परें प्रनुनी पू जायकी,ए तो सघलां संकट नाजे रे ॥ स्वर्ग मुगति सुख पामीयें, वली संसारिक सुख ठाजे रे ॥ २७ ॥ न० ॥ ए अधिकार ते सांनली, सहुनां मन नावें नेदाणां रे ॥ जिन वंदन जिन नक्तिमां, तस आतम रंग रंगा णा रे ॥ २८ ॥ न० ॥ गुरुनी शीख सोहामणी, मानी विप्रें सघली साची रे ॥ चोथा उल्लासनी व शमी, कहि लब्धें शास्त्रें राची रे ॥ २९ ॥ न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुविनी शीख सोहामणी, सांनलि सघला वि प्र ॥ जिन वंदन अर्चानणी, द्विज द्विजणी थयां द्वि

प्र ॥ १ ॥ कहे नपनंद सुणो प्रभु, शी विध कीजें सेव ॥ ते विधि कहो अमनें प्रभु, तिण विध पूजा देव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवे, दोष रहित अ ढार ॥ जिन वंदन अर्चा तणो, शिखवे गुरु आचार ॥ ॥ ३ ॥ रमणी ऋद्धि तजी करी, जीत्या राग ने द्वेष ॥ देव तेहनुं नाम छे, बीजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव तें नाम धरावीने, राखे कामिनी संग ॥ ते संसारी सुर कह्या, लुब्धाणा तस रंग ॥ ५ ॥ जे सुर जीवता जे हुवे, ते नलें राखे नारि ॥ पण थइ मूरति शैलनी, शे स्त्री राखे सार ॥६॥ मूआ गया परलोकमें, तो पण न गयो विकार ॥ ते शुं तारक तारशे, पडिया मोह म झार ॥ ७ ॥ वाहालो वयरी एकसम, लेखवे ते खरो देव ॥ तस चरणांबुज सेवतां,लहियें शिव ततखेव ॥ ८

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ तुमें पीतांबर पहेरो जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ सांभली गुरुनी वाणी जी ॥ हरिबल सांभलो ॥ बूझिया ते द्विज प्राणी जी ॥ ह० ॥ देवनी भांति उ भांति जी ॥ ह०॥ जाणी काढी भ्रांति जी ॥ह०॥१॥ तेहमां त्रणे जीव जी ॥ ह० ॥ लीधुं पण ते अतीव जी ॥ ह० ॥ चाकरी जिननी कीजें जी ॥ ह०॥ तव

मुखमें अन्न दीजें जी ॥ ह० ॥ २ ॥ दो कुमरी उप
नंदें जी ॥ह०॥ ए त्रणे आणंदे जी ॥ह०॥ उज्जवी शु
द्ध आचरणें जी ॥ ह० ॥ थया पणधारी त्रणे जी
॥ ह० ॥३॥ इम उपदेश ते देइ जी ॥ह०॥ चाल्या गुरु
लान देइ जी ॥ह०॥ हरिनिष्ट सुदत्त आदें जी ॥ह०॥
सहु जिन पूजे आल्हादें जी ॥ ह०॥४॥ नव नवी पू
जा बनावे जी ॥ ह० ॥ नव नवी आंगी रचावे जी
॥ ह० ॥ नव नवां नृत्य करावे जी ॥ ह० ॥ इम
नित्य भावना भावे जी ॥ ह० ॥५॥ सहसनें पटशें
एंशी जी ॥ ह०॥ सोवन मुद्रा विहसी जी ॥ ह० ॥
प्रभुने भंमारें हरखें जी ॥ ह० ॥ उपनंद मूके एक
वर्षे जी ॥ ह० ॥ ६ ॥ शोलशें फूल चढावे जी ॥ ह०॥
हेम रजतनां जे कहावे जी ॥ ह० ॥ शोलशें मु
गट नरावी जी ॥ ह०॥ कुंमल हार करावे जी ॥ ह०॥
॥ ७ ॥ कटिसूत्र ने करें कडली जी ॥ ह० ॥ बांहे
बाजुबंध जडली जी ॥ ह० ॥ इणिपरें नूपण सारां जी
॥ ह० ॥ प्रभुने चढावे प्यारां जी ॥ ह० ॥८॥ इणपरे
विजणी टोली जी ॥ ह० ॥ पहेरी पंचरंगी चोली
जी ॥ ह० ॥ पूजे जिनवर देवा जी ॥ ह० ॥ लें
हवा शिवसुख मेवा जी ॥ ह० ॥ ए ॥ तेहमें उपनंदें

साध्युं जी ॥ ह० ॥ पूजा नामकर्म वांध्यूं जी ॥ ह० ॥ गुरुमुखें जे पण लीधुं जी ॥ ह० ॥ साथें ते त्रिहुं जीव सीधुं जी ॥ ह० ॥ १० ॥ नवो नवनां डुःख टाली जी ॥ ह० ॥ थया त्रणे एक अवतारी जी ॥ ॥ ह० ॥ गुरुवचनें जे चाले जी ॥ ह० ॥ ते शिव रमणीशुं माले जी ॥ ह० ॥ ११ ॥ इम करतां दिन केता जी ॥ ह० ॥ सुकृतमें दिन वीता जी ॥ ह० ॥ सांजलो आगें जे होवे जी ॥ह०॥ नावि जिहां तिहां जोवे जी ॥ ह० ॥ १२ ॥ हवे सुदेव नूदेव दोइ जी ॥ ॥ ह० ॥ रोगिणीना जे धव होइ जी ॥ ह० ॥ ना तिना खूनी जाणी जी ॥ ह० ॥ काढ्या ते डुष्ट प्राणी जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ निकल्या नातिथी हाख्या जी ॥ ॥ ह० ॥ क्रोधानलमें ते गाल्या जी ॥ ह०॥ गया ते कछप देशें जी ॥ ह० ॥ न जाणे को नामनी विशें जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ तिहां जइ एक कापडी नेटी जी ॥ ॥ ह० ॥ तिणें शिखवी विद्या महोटी जी ॥ ह० ॥ बहु रूपिणी विद्या शिखी जी ॥ ह० ॥ आव्या ते दो नीखी जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ कापडी वेश ने लेइ जी ॥ ह० ॥ आव्या ते लिंगमें वेइ जी ॥ ह० ॥ रूपनें लोभे घर आगें जी ॥ ह० ॥ कपटें दो निक्षा मागे

जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ मधुरी धुनें गीत गावे जी ॥
॥ ह० ॥ उपनंदनी पोल रीझावे जी ॥ ह० ॥ रूपिणी
विद्याजोगें जी ॥ ह०॥ ठंलखे नहि तस जोगें जी ॥
॥ ह० ॥१७॥ एक दिन रातें ते पोलें जी ॥ ह० ॥
भिक्षुक गावे दो ठंलें जी ॥ ह० ॥ एहवे उपनंद आ
व्यो जी ॥ ह० ॥ कपटीयें दाव ते पाव्यो जी ॥
ह०॥१८॥ फरसीयें घाव त्यां घाल्यो जी ॥ह०॥ उपनंद
यमघरे चाल्यो जी ॥ह०॥ श्वाननां रूप करी नाग जी
॥ ह० ॥ कपटी दो त्यांथी त्राग जी ॥ ह० ॥ १९ ॥
धाउ रे नाइ धाइ जुउ जी ॥ ह० ॥ उपनंद हरिश
रणें हुउ जी ॥ ह० ॥ जयदेव आदें कुटुंब जी ॥ ह०॥
आव्या सहु करी बुंब जी ॥ह०॥२०॥ रोगिणी देखी दो
मेटे जी ॥ ह० ॥ फाल पडी तस पेटें जी ॥ ह० ॥
जयदेव कहे जइ देखो जी ॥ ह० ॥ हणनारुं कुण
तस पेंखो जी ॥ ह० ॥ २१ ॥ धाया जन बहु केडें
जी ॥ ह० ॥ न लाधा गया कोइ चेडें जी ॥ ह० ॥
आरतिनगर कुंआरी जी ॥ ह० ॥ न पडे सुध कांइ
जारी जी ॥ ह० ॥ २२ ॥ राते सामले रांम जी ॥
॥ ह० ॥ लेइ गइ पाशेर खांम जी ॥ ह० ॥ आमथी
गइ आम आवी जी ॥ ह० ॥ ते रीत थइ इहां गावी

जी ॥ ह० ॥ २३ ॥ आव्या जन बहु जोइ जी ॥ ॥ ह० ॥ कहे हणी गयो कोइ जी ॥ ह० ॥ सजन कुटुंब सहु रोवे जी ॥ ह० ॥ नाइवे ज्युं खाल होवे जी ॥ ह० ॥ २४ ॥ फट रे देव तुं डुष्ट जी ॥ ह० ॥ विण खूने शे रुष्ट जी ॥ ह० ॥ सुनंद कहे रे नाई जी ॥ह०॥ शुं गयो ठेह देखाई जी ॥ह०॥२५॥ इणि परें आक्रंद करतां जी ॥ह०॥ मृत कारज तस धरतां जी ॥ ह० ॥ धिग संसार असार जी ॥ ह० ॥ धिग जे लेखवे सार जी ॥ ह० ॥ २६॥ इम ते मनमें वि चारी जी ॥ ह० ॥ जयदेव आप संनारी जी ॥ह०॥ जयदेव सूनंद साथें जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा मुनि हाथें जी ॥ह०॥२७॥ खंभा विशाखा दो कुमरी जी ॥ह०॥ उपनंदनुं डुःख समरी जी ॥ ह० ॥ दीक्षा अज्ञा पासें जी ॥ह०॥ ले व्रत पाले उल्लासें जी ॥ह०॥२८॥ हरि नट सुदत्त जेह जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा पण तेह जी ॥ ॥ ह० ॥ मोहनीकर्म संबंधें जी ॥ ह० ॥ उपनं दशुं मन बंधे जी ॥ ह० ॥ २९ ॥ चोथा उल्लासनी ढाल जी ॥ ह० ॥ एकवीशमी गुणमाल जी ॥ ह० ॥ लब्धी नवनय मेली जी ॥ ह० ॥ कहुं उपनय मन नेली जी ॥ ह० ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम कहे मुनिचंद केवली, सांजळो हरिबल रा य ॥ नावी माहापणं आगलें, को नवि अधिको थाय ॥ १ ॥ जीती न शके नाविने, अनंत बली अरिहंत ॥ ते सरखा पण हारिया, नावि प्रबल वदंत ॥ २ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, पामे केवल नाण ॥ तो पण नावी नहि मिटे, जीवित सूधी जाण ॥ ३ ॥ केवली आयु ने समे, जे करे समुदघात ॥ ते पण नावि जोगथी, जाणजो नवि विख्यात ॥ ४ ॥ सुख ऽःख पानें जे लख्यां, कुण टाले तस दूर ॥ त्रीजगमें व्यापी रह्यां, जि हां तिहां नावि हजूर ॥ ५ ॥ वीर जिणंदने पण र ह्यो, छम्मासी अतिसार ॥ केवल पाम्या तोहि पण, नावी न मट्युं लगार ॥ ६ ॥ नावीथी पूरव नवें, जे बांध्युं अंतराय ॥ वर्ष सूधी नूख्या रह्या, जे श्री ऋप न कहाय ॥ ७ ॥ रूपीकर्म करतां थकां, कूर्मापुत्र सु जाण ॥ केवल लही घरमें रह्यो, त्रण रति नावि प्रमा ण ॥ ८॥ ते माटे हरिबल तुमें, जाणजो करीने ठीक ॥ नावी आगेवान ले, सहु ते जंतु नजीक ॥ ए ॥ जे जिम नावी नीपजे, टाली न शके कोय ॥ रोगिणी दोनी दाऊथी, हुदेवें हणियो सोय ॥ १० ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥ ते उपनंदनो रे जीव चवी इहां रे, थया तमें हरिबल महोटें नाम ॥ साधुनी निंदा रे कीधी घणी रे, तव लह्युं धीवर कुलनुं धाम ॥ १ ॥ हरिबल सुणजो रे, तुम नवनी कथा रें ॥ ए आंकणी ॥ जे जीव मेले बे ते दल कर्म ॥ शुनाशुनना जे बंध बांधीया रे, नोगवे ते जीव निज निज मर्म ॥२॥ह०॥ जलचर जंतु रे तुमे हणता सदा रे, ते निज उदरने कारणें जोर ॥ हरिनद्र संगी रे सुदत्तद्विज चवी रे, थयो इहां तुम तणो साचो गोर ॥३॥ह०॥ तिणें तुमें दाख्यो रे जलने कांठडे रे, जीव दयानो महोटो धर्म ॥ तुमें पण साचा रे पण धारी थया रे, राख्यो जीवदयानो नर्म ॥ ४ ॥ ह० ॥ तस पुण्य योगें रे, जलनिधि देवता रे, प्रगट थयो तुम पूरव भ्रात ॥ सुनंदनामें रे बंधु चवी इहां रे, सुर थइ पूरी तुम मन खांत ॥ ५ ॥ ह० ॥ पूरव नवनी रे तुम दो रागिणी रे, रंभा विशाखा नामें जेह ॥ ते दो नारी रे थइ तुम मोहथी रे, वसंतसिरी कुसुमसिरी तेह ॥ ६ ॥ ह०॥ श्री जिनकेरी रे नक्ति करी घणी रें, दो गोरी तुमें त्रण जीव॥शोलशें फूलें रे शोलशें देशनी रे,

परणा नारी तेणें अतीव॥०॥ह०॥श्रीदत्तनामें रे वड व
खती थयो रे,व्यवहारी जे विशाला मङ्क॥ ते तुम तात रे
जयदेव चवि थयो रे,तिणें दीधुं रहेवा गृह तुम कङ्क॥ ए
॥ह०॥ नगरि विशाला रे जे पुरनो धणी रे, जे थयो
कामी पूरव नेग ॥ सुदेव नामें रे खंभानो धणी रे, ते
थयो चवीने मदन वेग ॥ ए ॥ ह० ॥ माहाडुष्ट बु
द्धि रे नूदेव वाडवो रे, नारि विशाखानो पति जाण ॥
ते द्विज चविने रे हीणी लेशथी रे, थयो कालसेन ते
डुष्ट प्रधान ॥ १० ॥ ह० ॥ तिणे तुम मूक्या रे पूर
व वयरथी रे, लंका गढ वली जमने घेर ॥ पूरव नव
ना रे वयर प्रनावथी रे, तुमें पण वाल्युं सवायुं वेर
॥ ११ ॥ ह० ॥ नृप पण मोह्यो रे तुम स्त्री देखतां
रे, पूरव नवनो मोह विकार ॥ ते दो नारी रे वय
र संनालीने रे, मंत्री नृपने कीध खुआर ॥ १२ ॥ ह०॥
नव नृप समजी रे बूजी मनमां रे, जाणी मह
तो तुम उपगार ॥ राज समर्प्युं रे जलनिधि देवथी
रे, परणावी तुम कुमरी सार ॥ १३ ॥ ह० ॥ हरि
नट सुणजो रे दो डुःखणी पिता रे, थयो ते वसंत
सेन नूपाल ॥ हरिनट नारी रे हरिनटिणी चवी रे,
थइ ते वसंतसेना गुणमाल ॥ १४ ॥ ह०॥ तस कुखें

जाई रे वसंतसिरी जली रे, खंभा नामें डुःखणी जी
व ॥ वर्ष एक सुधी रे जिन पूजा रची रे, तव थइ कु
मरी नृपनी अतीव ॥ १५ ॥ ह० ॥ वसुदत्त नामें रे
सुत सुदत्तनो रे, थयो चवि हरिवल वणिक उछाह ॥
वसंतसिरीने रे हरिवल नंदशुं रे, प्रगट्यो पूरव मोह
अथाह ॥ १६ ॥ ह० ॥ पण ते साथें रे संबंध पूरो
नही रे, वणिकें कुमरी ठंभी ताम ॥ तव तुम मली
यो रे योग कुमरी तणो रे, जलसुरें मेल्यो ईश्वरि गाम
॥ १७ ॥ ह० ॥ तव तुम साथें रे कुमरी ले चली रे,
जव आव्या तुमें जग कांतार ॥ रवि जव ऊग्यो रे त
व तुम देखतां रे, थइ सूरगागत कुमरी तिवार ॥ १८ ॥
॥ ह० ॥ तव तुम साजें रे सागर देवता रे, आव्यो
पूरव जवनो भ्रात ॥ तेणे सज कीधी रे कुमरी तत
खिणें रे, परणावी तुम मन विख्यात ॥ १९ ॥ ह० ॥
खंभा नामें रे गख्या अधोलडा रे, मावडी सायें ति
णे वडी वार ॥ तेहने जोगें रे मावित्रशुं रह्यो रे, वि
जोग कुमरीने वर्ष वार ॥ २० ॥ ह० ॥ विगालना पु
वी रे वली तुम तेडीया रे, तुम मलगे जे वसंतने
ल ॥ तिमे तुम तेडी रे पूरवनेगछुं रे, दे तुम गज्यने
कुमरी विजोग ॥ २१ ॥ ह० ॥ हवि ने स्वामी रे ग

अब दो पामीयां रे, पूज्या पूर्वे जिन जगवान ॥ तस पुण्य जोगें रे सागर देवथी रे, जगमां वजाव्यां जीत नीशाण ॥ २२ ॥ ह० ॥ इणिपरें जांखुं रे हरिवल आगलें रे, पूरव जवनुं जे वृत्तांत ॥ मछीयें दीतुं रे तेहवुं ज्ञानथी रे, जाति समरणें लह्यो उपशांत ॥ ॥ २३ ॥ ह० ॥ धीवर बूझ्यो रे केवली वयणथी रे, संजम लेवा थयो उजमाल ॥ चोथे उल्लासें रे ढाल बावीशमी रे, कही लब्धें जोइ शास्त्र संजाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर नृप मन चिंतवी, प्रणमी गुरुना पाय ॥ आव्यो आपण मंदिरें, समताशुं चित्त लाय ॥ १ ॥ श्रीवल सुवल निज पुत्रने, राज्य जलावी दोय ॥ अनुमत लइ संजम तणी, हरिवल मच्छी सोय ॥ २ ॥ वसंत सिरी कुसुमसिरी, दो पट्टराणी एह ॥ तस संगें अनुमति लीये, संजम वरवा तेह ॥ ३ ॥ तव दो नारी कंतने, जांखे प्राणाधार ॥ संयम पालवुं दोहिलुं, जिम वहेवो करितार ॥ ४ ॥ मदन दशनें अयचणा, चाव तां जिम डुर्जन ॥ तिम पियु संजम दोहिलुं, पालवुं जाणो अचंन ॥ ५ ॥ सुरगिरि तोलवो त्राजुवे, चढवो लेइ गिरि जार ॥ चालवुं खंमा धार ज्युं, तिम वहेवो

मुनि चार ॥ ६ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, रहेवुं वनह झार ॥ बावीश परिसह फोजशुं, लडवुं थइ जूझार ॥ ७॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ हरियालो श्रावण आवियो ॥ ए देशी ॥ जीरे वसंतसिरी कहे इणि परें, तुमें सांजलो प्रीतम वातो रे ॥ घरे बेग मन थिर राखीने, पालो जाव चारित्र विख्यातो रे ॥ १ ॥ इम वसंतसिरी कहे कंतने ॥ ए आंकणी ॥ घरे बेगं चालतो धर्म छे, जेहनुं मन छे शुध्ध चंगा रें ॥ हांजी लोक उखाणो पण कहे, मन शुध्ध कथोटीमें गंगा रे ॥ २ ॥ इ० ॥ हांजी एक घरे बेगे तप करे, एक जइ सेवे वनवासो रे ॥ पण कह्यो अधिको घरे तप करे, हांजी पण न कह्यो जलो वन वासो रे ॥ ३ ॥ इ० ॥ हांजी पाराशर विश्वामित्र जे, तप दोइ करें वनमां जाई रे ॥ हांजी मास मासने पारणें, रहे वनपत्र सूकां खाई रे ॥ ४ ॥ इ० ॥ हांजी एहवी तपस्या ते दो करे, लोही मांस गयां ते सुकाइ रे ॥ हांजी ते सरखा पण स्त्री थकी, चलीया मति विषयनी पाइ रें ॥ ५ ॥ इ० ॥ हांजी खटरस जोजन जे करे, तेहनुं मन किम होवे शुध्धो रे ॥ हांजी मन वश राखे जे घरे रही, तेहनी कहे जिन जली

बुद्धो रे ॥ ६ ॥ इ० ॥ हांजी देश कछपें जाणीयें, शेठ विजय ने विजया नारी रे ॥ हांजी एकण श य्यायें रंगमें रहे, गृहमें थइ व्रतधारी रे ॥ ७ ॥ इ० ॥ हांजी शुद्ध स्वजाव को नवि दिये, ए तो प्रगटे सहज स्वजावें रे ॥ हांजी शुद्ध स्वजाव जब उलखे, तब पर माणंद पद पावे रे ॥ ८ ॥ इ० ॥ हांजी लोकिकने म तें पण कहे, गार चूंसे केइ तन शीशो रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे नही, लोटे गारमें अश्व चक्री दुंशो रे ॥ ए ॥ इ० ॥ हांजी गंगाजलें जीले केइ जना, करे मांहे तप शुद्ध होवा रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे नही, रहे मेडकां मछी जल सेवा रे ॥ १० ॥ इ० ॥ हांजी उंधे मस्तकें केइ जना, करे तपस्या थइ उज मालो रे ॥ हांजी इम जोतां उंधे मस्तकें, रहे वागुल जइ तरुमालो रे ॥ ११ ॥ इ० ॥ हांजी केइ जन जटा वधारता, करे तपस्या शुन्न चित्त लाई रे ॥ हांजी इम तप होवे तो न्यग्रोधें, वधे अहनिश जटा वडवाइ रे ॥ १२ ॥ इ० ॥ हांजी केइ जन मुंम मुंमा वता, करे मस्तकें चीलां टीलां रे ॥ हांजी इम धर्म जो होवे नेकने, केश लूंचे खटमासें चीला रे ॥ १३ ॥ ॥ इ० ॥ हांजी निजनिज मतने पोषवा, ए तो चलवे

सद्दु शुद्ध धर्मो रे ॥ हांजी व्यंतर शुद्ध न उल्ल ख्यो, तव तिहां वधे मिथ्या जर्मो रे ॥ १४ ॥ ६० ॥ हांजी जव शुद्धातम आवे जीवने, तव केवलकम ला पावे रे ॥ हांजी ज्योतिमां ज्योति मले तदा, जि नमुखथी चिदानंद कहावे रे ॥ १५ ॥ ६० ॥ हांजी ते माटे तुमें नाथजी, तुमें बो घणा महोटा नारे रे ॥ हांजी बो तुमें सुकुमाल केलि ज्युं, तन तपथी गली जाय क्यारें रे ॥ १६ ॥ ६० ॥ हांजी घरे बेगं सुख जोगवो,करो जमणो हाथ ते आघो रे॥ हांजी मन शुद्ध जाव संजम लही, तुमें बांधो समकित पाघो रे ॥ ॥ १७ ॥ ६० ॥ हांजी ड्व्य चारित्र ते लेइने, फरे म टक वैरागी थाइ रे ॥ हांजी डुर्नर जरवाने केलवे, करणी कपटीनी संवेग लाइ रे ॥ १८ ॥ ६० ॥ हांजी प्रीतम तिणे न उघडे, ए तो उघडे चारित्र जावें रे॥ हांजी जावचारित्रथी केइ तस्या, जवजलधि दर्शन जावें रे ॥ १९ ॥ ६० ॥ हांजी ड्व्य चारित्रना योग थी, जाये नवमा ग्रैवेयक सूधी रे ॥ हांजी जाव चा रित्रना संगथी, पामे अजरामर पद बुद्धि रे ॥ २० ॥ ॥ ६० ॥ हांजी जरत आरीसा जुवनमां, हुआ जाव थी केवल नाणी रे ॥ हांजी आषाढजूति एलाचीयें,

लह्युं नाटकें केवल प्राणी रे ॥ २१ ॥ इ० ॥ हांजी कू र्मापुत्र कपि खेडतां, पाम्यो केवलनाण स्वनावें रे ॥ हांजी वलकलचीरी पण इणि परें, पात्र खुंढतां के वल पावे रे ॥ २२ ॥ इ० ॥ हांजी मरुदेवी माता जे ऊपन्नी, गज वेगें केवल पाम्यां रे ॥ हांजी इत्या दिक मन शुद्धथी, नवो नवनां छुःख सवि वाम्यां रे ॥ २३ ॥ इ० ॥ हांजी ते माटे तुमें नूधणी, कह्युं मा नो अमारुं ए साचुं रे ॥ हांजी पंच महाव्रत पालतां, पणुं दोहिलुं होवे मन काचुं रे ॥ २४ ॥ इ० ॥ हांजी इत्यादिक वचनें करी, कहे वसंतसिरी उजमालो रे ॥ हांजी चोथा उल्लासनी ए कही, त्रेविशमी लब्धें ढा लो रे ॥ २५ ॥ इ० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी पट्टराणीनां, वोल्यो हरिवल ताम ॥ सुणो नडे तुमें जे कही, ते मानुं अनिराम ॥ १ ॥ पण मन माहरुं शुद्ध छे, जिम गंगानुं नीर ॥ तिम में संजम लेइयो, तरवा नवदधि तीर ॥ २ ॥ उत्तर मेह न उन्नहे, उनहे तो वरसंत ॥ शा पुरुष वयण न उच्चरे, उच्चरे तो ते करंत ॥ ३ ॥ एम कही चाव्यो तु रत, संजम लेवा सार ॥ संसार कारागृहथकी, निक

ल्यो तें निरधार ॥ ४ ॥ तव दो कुमरी चिंतवे, प्रीतम थयो दृढचित्त ॥ अहिकंचूकि परें ठंफशे, वरशे सं यम मित्त ॥ ५ ॥ सिद्धवधूनो लालची, थयो आप णो नूनाथ ॥ तो हवे आपण दो जणी, वहीयें प्रीत म साथ ॥ ६ ॥ जिहां काया तिहां गंहडी, वहे ज्युं निशिदिन संग ॥ त्युं दंपति व्रतगेहमें, वहेशुं अवि हड रंग ॥ ७ ॥ इम जाणी दो रागिणी, पतिसाथें करि नाव ॥ नवजलधि तरवा ग्रहे, संजम महोटुं नाव ॥ ८ ॥ वली बीजी जे राणीयो, जे नव सिद्धि जीव ॥ ते पण पतिसाथें थइ, व्रत ग्रहवाने अतीव ॥ ॥ ए ॥ हरिबल केरो जे अछे, श्रीपति कुल दिवान ॥ ते पण साथें सज थयो, लेहवा पद निर्वाण ॥१०॥ इणिपरें नाविक जीवडा, राणी आदें केय ॥ पंच स यां परिवारशुं, हरिबल संयम लेय ॥ ११ ॥ दीक्षा महोत्सव नलि परें, श्रीबल सुबलें कीध ॥ मणि मा णिक सोवन घणां, आशी जनने दीध ॥ १२ ॥ हवे हरिबल मोह उपरें, कोप्यो अतिही पूर ॥ काढयो कूटी मोहने, आतमडिंगथी दूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ कडखानी देशी ॥ मोह नृप उपरें चढतरी वा

यो ॥ तेहवे मन्नीनो नावनृप गुरु चढी, मोह नृप सैन्यने दूर टायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी ज्ञान गोला नरी, गुप्तदारू तपतें उमाडी ॥ आकना तूल ज्युं मोहना सैन्यने, नाव नृप मन्नीनो दे उमा डी ॥मो०॥१६॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया, पातिया ज्ञानअंकुश पूरें ॥ दंन गढ तोडियो डुरित ढिंग मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंन दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥ वार जे व्रत उमराव साथें चढ्या,सगवन संवर सुन्नट तूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, वाकरी वां धता तेह खूटा ॥ मो० ॥ १८॥ राग ने द्वेष दो पुत्र मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान कबाणथी विरति शर सांधीयां, वींधीयां तीन ते डुष्ट बुद्धी ॥मो०॥ १९॥ ढाल खीमा तणी खड्ग ले तप तणी, मन्नीयें मूलथी मोह ठेयो ॥ आतम ढिंगथी शल्य काढी परुं, अनुनव रंगमें मन्नि नेयो ॥ मो० ॥ ॥ २० ॥ काल अनादि जे दंन चोवीशमें, पीडतो जीवने मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मन्नी थयो, नाव नृप शरणथी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इणि परें धीवरु सबल परिवारथी, गुरु कने आयो करि

मोह निज सैन्य मेली ॥ पांच मिथ्यात नीशाण शब्दें करी, मली नृप ऊपरें चढत वेली ॥ मो० ॥ ७ ॥ अष्ट मद हाथिया सुकृत घन घातीया, पातीया मान ज ग जंतु केरा ॥ एहवा हस्ती मदमस्त जककारिया, ज्ञावनृप सेनमें करत खेरा ॥ मो० ॥ ए ॥ साथें उमराव ले अष्ट दश अघ तणा, नही मणा कांइ त्रिभुवन्न हरता ॥ फोज नव नोहकषायनी महाबली, साबली मोहनी जीत करता ॥ १० ॥ मो० ॥ राग ने द्वेष दो पुत्र ते मोहना, क्षोजना करत संसारमांहे ॥ काम मंत्री प्रबल सबल दल मेलीयो, हेलीयो जिणें मनुराज प्राहें ॥ मो० ॥ ११ ॥ पांच पचवी शनी नालि किरिया करी, शोल कषायना कीध गोला ॥ दंज दारू जरी क्रोध अगनें करी, ज्ञाव नृप सैन्यमें करत होला ॥मो०॥१२॥ इणि परें मोह नृप सैन्य नेलुं करी, चालीयो मलीशुं युद्ध करवा ॥ आमुही सामुही फोज दोये मली,मनसरें फोज दो मंभि लडवा॥मो०॥ १३॥ मोहनृप ज्ञावनृप दोय पोरस चढ्या, आरुड्या युद्धमें पूर वेइ ॥ लक्ष चोराशि जे जोनि चोगानमें,युद्ध करतां गयो काल केइ ॥ मो० ॥ १४ ॥ तो पण मोहनुं जोर वाध्युं घणुं, ज्ञाव नृप सैन्यनो अंत आ

यो ॥ तेहवे मझीनो जावनृप शुद्ध चढी, मोह नृप सैन्यने दूर ढायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी ज्ञान गोला नरी, शुनदारू तपतें जमाडी ॥ आकना तूल ज्युं मोहना सैन्यने, नाव नृप मझीनो दे जमाडी ॥मो०॥१६॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया, पातिया ज्ञानअंकूश पूरें ॥ दंन गढ तोडियो डुरित ढिंग मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंन दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥ बार जे व्रत उमराव सायें चढ्या,सगवन संवर सुनट तूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, बाकरी वां धता तेह लूटा ॥ मो० ॥ १८॥ राग ने द्वेष दो पुत्र मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान कबाणथी विरति शर सांधीयां, वींधीयां तीन ते डुष्ट बुद्धी ॥मो०॥ १९॥ ढाल खीमा तणी खडग ले तप तणी, मझीयें मूलथी मोह नेयो ॥ आतम ढिंगथी शल्य काढी परुं, अनुनव रंगमें मझि नेयो ॥ मो० ॥ ॥ २० ॥ काल अनादि जे दंन चोवीशमें, पीडतो जीवने मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मझी थयो, नाव नृप शरणथी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इणि परें धीवरु सबल परिवारथी, गुरु कने आपो करि

जीत मंका ॥ चोथा उल्लासनी ढाल चोवीशमी,लब्धि
कहे सुव्रनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, द्रव्यथी नावथी जे
ह ॥ विरवल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणेह ॥१॥
श्री मुनिचंद्र जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहे
मली कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव
तिहां मुनिचंद्र केवली, विलंब न कीध लगार ॥ क
लशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥
पंच सया परिवारशुं, मूकी मननो शोच ॥ स्वहस्तें
पंच मुष्टिनो, हरिबलें कीधो लोच ॥४॥ अध्यातमनी
पीठिका,तस मंमाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन ठ
वी, करवा शिवगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत
उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, सं
वेग जे कंसार ॥६॥ गुरुना मुखथि कथा सुणी, शेठ
तणो दृष्टांत ॥ चार वहू चिहु पुत्रनी, सरखो जोई
तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा वहूने
हार ॥ एकें नाख्या एक खाइ गइ,राख्या एक विस्तार
॥८॥ आगम वेदनी कांमिका,करे मुख जिन उच्चार ॥
संयम स्त्री मलीयें वरी,वरत्या जय जयकार ॥ ए ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

समदम खंतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाण हे॥ए देशी ॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंद्र जे केवली पासें, ले संजम उल्लासें रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीधी, जिननी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो नवियां हरिबल, जे ऋषिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया रे ॥ पंच सयासुं संयम लेइ, मनु नव सफल करेई ॥२॥सु०॥ पंच माहाव्रत सुरगिरि केरो, नार उपा ड्यो नलेरो रे ॥ पंच सयासुं हरिबल साधु, थया मुनि जनमें वाधु रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ चौद पूर्वनी विद्या थापी, श्रुत केवली पद थापी रे ॥ विहार करे मुनि चंद्रजी संगें, हरिऋषि पंचशें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ दशविध जतिनो धर्म ते पाली, आतम नव अजु ाली रे ॥ तप अगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी ाल ते बाली रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुक्ल ध्यानने चोथे ें ते, हरिबल ऋषि शुन चडीया रे ॥ हरिऋषि परि र शुक्ल ध्यानें, ते पण कर्मसुं नडिया रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तेरमें गुणठाणे ते आया, केवल कमला या रे ॥ सुर करे नंद कमलनी रचना, ज्ञानी दीवा गाया रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तिन जुवन ज्युं करजल

जीत भंका ॥ चोथा उल्लासनी ढाल चोवीशमी,लब्धि कहे युद्धनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, इव्यथी जावथी जेह ॥ विरवल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणेह ॥१॥ श्री मुनिचंद जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहे मल्ली कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव तिहां मुनिचंद केवली, विलंब न कीध लगार ॥ कलशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥ पंच सया परिवारशुं, मूकी मननो शोच ॥ स्वहस्तें पंच मुष्टिनो, हरिवलें कीधो लोच ॥४ ॥ अध्यातमनी पीठिका,तस मंभाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन ठवी, करवा शिवगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, संवेग जे कंसार ॥६॥ गुरुना मुखथि कथा सुणी, शेठ तणो दृष्टांत ॥ चार वहू चिहु पुत्रनी, सरखी जोई तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा वहूने हार ॥ एकें नाख्या एक खाइ गइ,राख्या एक विस्तार ॥८॥ आगम वेदनी कांभिका,करे मुख जिन उच्चार ॥ संयम स्त्री मलीयें वरी,वरत्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

समदम खंतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाण हे॥ एदेशी
॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंद जे केवली पासें, ले संजम उल्लासें रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीधी, जिननी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो नवियां हरिवल, जे ऋषिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया रे ॥ पंच सयाशुं संयम लेइ, मनु नव सफल करेई रे ॥२॥सु०॥ पंच माहाव्रत सुरगिरि केरो, चार उपा ड्यो नलेरो रे ॥ पंच सयाशुं हरिवल साधु, यथा मुनि जनमें वाधु रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ चौद पूर्वनी विद्या आपी, श्रुत केवली पद थापी रे ॥ विहार करे मुनि चंद्रजी संगें, हरिऋषि पंचशें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ दशविध जतिनो धर्म ते पाली, आतम नव अघ वाली रे ॥ तप अगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी जाल ते वाली रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुकल ध्यानने चोथे पदें ते, हरिवल ऋषि शुन चडीया रे ॥ हरिऋषि परिकर शुकल ध्यानें, ते पण कर्मशुं नडिया रे ॥ ६ ॥ ॥ सु० ॥ तेरमें गुणगणे ते आया, केवल कमला पाया रे ॥ सुर करे नंद कमलनी रचना, ज्ञानी दीवा कर गाया रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तिन नुवन ज्युं करजल

देखे, शिवरमणी पण चेखे रे ॥ पांमव सहस्त्र ते वर्षज सूधी, द्ये नविने बोधबुद्धि रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ मासनी संलेषणा करि अंतें, जइ वेगा शिव पंतें रे ॥ धन धन हरिबल परिकर करणी, जइ शिवरमणी प रणी रे ॥ ए ॥ सु० ॥ जो जो नवियां जीव दयाथी, शा शा गुण ए प्रगट्या रे ॥ धीवर कुलमां जन्म ल हीने, ज्योतिवधूमां उमट्या रे॥ १०॥सु०॥तुमें पण न वियां इणिपरें निसुणी, जीवदयाशुं राचो रे ॥ उदरनें कारण करणी करतां, बंधन न पडे साचो रे ॥ ११ ॥ ॥ सु० ॥ धर्मनो मर्म ते जीवदया छे, खट दरिशणमें जाचो रे ॥ हरिबलनी परें ऋद्धि लहो तुमें, जीवदयाशुं माचो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीवदयाथी नवनिधि लहि यें, सघले सूत्र छे साखी रे ॥ हरिबलनुं पण चरित्र छे महोटुं, जुज निविधमें जांखी रे ॥ पाठांतर ॥ जुज विचार सार जांखी रे ॥ १३ ॥सु० ॥ ते अधिकार में नयणें निरख्यो, जेहवो शास्त्र में दीठो रे॥ तेहवो में अधिकार वखाण्यो, देशीयें करीने मीठो रे ॥ १४ ॥ ॥ सु० ॥ लाटापल्ली पुरनो वासी, पूनिम गहें सोहे रे ॥ पंमित नरसिंह धनजी केरो, तप गुणें करी मो हे रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ तस आग्रहथी सयणा नारे,

रास रच्यो में रूडो रे ॥ वेधक रसिया धर्मी जनने, ए छे मधुनो पूडो रे ॥१६॥ सु० ॥ में तो करी छे बा लक क्रीडा, हुं शुं जाणुं जोडी रे ॥ पंमित होय ते शुद्ध करेजो, मत कोइ नाखो विखोडी रे ॥ १७ ॥ ॥ सु० ॥ रसनाने रसें अधिकुं उंछुं, जे में नाख्युं अ नाख्युं रे ॥ ते मिछाडुक्कड कर जोडी, देउं पंच सम क्षें रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुद्ध परंपर सोहम तखतें, प्रग ट्या हीरसूरिंदो रे ॥ तस शिष्य धर्मविजय ध्रमधोरी, दीपे ज्युं शारदचंदो रे ॥ १९ ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित धनरूपे ज्ञानी, सुमति सदा चित्त मानी रे ॥ तस शिष्य पंमित कुशल विजय कवि, प्रतिबोध्या अ नुमानी रे ॥ २० ॥ सु० ॥ तस भ्राता गणि कमल विजयशुन, ज्ञान विज्ञानमें लीना रे ॥ तस शिष्य पं मित लखमिविजय गुरु, संवेग रसमें नीना रे ॥२१॥ ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित दो गुण ग्याता, केसर अ मर दो भ्राता रे ॥ तस पदकिंकर लब्धिविजय कहे, चार उल्लास विख्याता रे ॥ २२ ॥ सु० ॥ शीलांगरथ संवत्सर दशकें, १८१० महाशुदि बीज नृगुवारें रे॥ हरिबलना गुण जीवदया पर, गाया में एक तारें रे ॥ २३ ॥ सु० ॥ श्रीतपगछ नन दिनमणि सोहे, श्री

विजयधर्म सूरीशो रे ॥ तस गणधरना राजमां रसि यो, गायो महि विशेषो रे ॥ २४ ॥ सु० ॥ वाव्ह वंदर श्रीअजित प्रसादें, रही सीमाणा वासें रे ॥ रा णा श्रीगजसिंहने राज्यें,रास रच्यो में उल्लासें रे॥२५॥ ॥ सु० ॥ हरिबलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उल्लासें, लब्धि कहे गुण खाणी रे ॥ २६ ॥ सु० ॥ ढाल वेगणसाठ सातशें दोहा, हरिबल चरित्रथी भांख्या रे ॥ साडात्रण सहस्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥ ॥ २७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता जुगता दा
च्यो में वारु रे ॥ हलुआकर्मी
शे सघली ए वाचा रे ॥ २८ ॥
मंगल होजो, दिन दिन लक्षिमें
नी परें संपद लेहेजो, लब्धि
॥ २ए ॥ सु० ॥ इतिश्री हरि
चतुर्थ उल्लासः समाप्तः ॥

॥ इति जीवदयापरे ह

विजयधर्म सूरीशो रे ॥ तस गणधरना राजमां रसि यो, गायो मह्नि विशेषो रे ॥ २४ ॥ सु० ॥ वाव्य बंदर श्रीअजित प्रसादें, रही सीमाणा वासें रे ॥ रा णा श्रीगजसिंहने राज्यें, रास रच्यो में उल्लासें रे॥ २५॥ ॥ सु० ॥ हरिबलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उल्लासें, लब्धि कहे गुण खाणी रे ॥ २६ ॥ सु० ॥ ढाल ठंगणसाव सातशें दोहा, हरिबल चरित्रथी नांख्या रे ॥ साडात्रण सहस्त्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥ २७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता जुगता दाता सारु, संबंध र च्यो में वारु रे ॥ लघुआकर्मी जे हशे साचा, मान शे सघली ए वाचा रे ॥ २८ ॥ सु०॥ चउविह संघने मंगल होजो, दिन दिन लब्धिमें जलजो रे ॥ हरिबल नी परें संपद लेहेजो, लब्धिनी वाचा फलजो रे ॥ ॥ २९ ॥ सु० ॥ इतिश्री हरिबल चरित्रे जीवदयापरे चतुर्थ उल्लासः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ इति जीवदयापरे हरिबलरासः समाप्तः ॥